मङ्गलमणिमाला

विविधग्रन्थेभ्य उद्धृतानां मङ्गलाचरणपद्यानां संग्रहः

भाग-३

संकलयित्री सम्पादिका च
डॉ॰ बीना मिश्रा



गङ्गानाथझापरिसरः
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानितविश्वविद्यालयः)
आजादोद्यानम्, प्रयागः-211 002

मङ्गलमणिमाला

विविधग्रन्थेभ्य उद्धृतानां मङ्गलाचरणपद्यानां संग्रहः

भाग-३

संकलयित्री सम्पादिका च
डॉ० बीना मिश्रा



गङ्गानाथझापरिसरः
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानितविश्वविद्यालयः)
आजादोद्यानम्, प्रयागः-211 002

मङ्गलमणिमाला

तृतीयो भागः

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्

मानवसंसाधनविकासमन्त्रालयाधीनः
मानितविश्वविद्यालयः

गङ्गानाथझापरिसरकोशग्रन्थमाला

प्रसूनम् - 48

योजनानिदेशकः
डॉ. गयाचरण त्रिपाठी

प्रधानसम्पादकः
डॉ. प्रकाशपाण्डेयः

मङ्गलमणिमाला

विविधग्रन्थेभ्य उद्धृतानां मङ्गलाचरणपद्यानां संग्रहः

भाग-३

सङ्कलनकर्त्री सम्पादिका च
डॉ. बीना मिश्रा

गङ्गानाथझापरिसरः
(राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्)
प्रयागः-2

2011

Rashtriya Sanskrit Sansthanam
Deemed University
Under the auspices of the ministry of Human Resources Development,
Govt. of India

Ganganatha Jha Campus
Dictionary Series
No. 48

Project Director
Dr. Gaya Charan Tripathi
General Editor
Dr. Prakash Pandey

Maṅgalamaṇīmālā

(A Collection of Maṅgalācaraṇa-verses from various Sanskrit works)

Part-III

Collected & Edited by
Dr. Beena Mishra

Ganganatha Jha Campus
Rashtriya Sanskrit Sansthan
Allahabad - 2

2011

मङ्गलमणिमाला

विविधग्रन्थेभ्य उद्धृतानां मङ्गलाचरणपद्यानां संग्रहः

भाग-३

संकलयित्री सम्पादिका च

डॉ॰ बीना मिश्रा



गङ्गानाथझापरिसरः

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानितविश्वविद्यालयः)

आजादोद्यानम्, प्रयागः-211 002

प्रकाशकः

प्राचार्यः
राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम्
(मानित-विश्वविद्यालयः)
गङ्गानाथझा-परिसरः,
इलाहाबादः -2

प्रथमं संस्करणम्

प्रकाशनवर्षम् - 2011

मूल्यम् :

पृष्ठविन्यासकरः
ब्रह्मानन्द मिश्रः

मुद्रणम्
एकेडमी प्रेस
दारागंज, प्रयागः

FOREWORD

It is a matter of great personal satisfaction for me that this our project of collecting benedictory verses related to different deities from various published and unpublished sources and to publish them as anthologies in several volumes has come to a fruitful completion with the publication of this third and the final volume which contains choicest verses in praise of the various aspects of Mother Goddess. All these verses are **Maṅgala-ślokas,** i.e. the verses which are found in the very beginning of a literary work or an inscription which a poet or a writer composes, in order to receive blessings of his **Iṣṭadevatā** for the successful completion of his work. Since the poet composes such verses with great care, love and devotion, they are of Dr. Beena Mishra has taken great pains to collect such verses from different sources. She has not only explored the entire manuscript collection of the G.N. Jha K.S. Vidyapeetha in search of these verses but also has perused a number of catalogues of the manuscript-libraries as well as collections of inscriptions. A glance at the list the deities included in this volume will convince the reader that hardly any aspect of the Mother Goddess has been left out in her endeavor.

I am very happy to note that a project which I conceived many years ago and guided throughout has been very ably and competently carried out by her. I bless her as well as the present enthusiastic Principal Dr. Prakash Pandey, who also happens to be my student and who is the one who has taken all pains and efforts to bring out this volume which was languishing in the institute for a long time due to the negligence of the previous authorities.

New Delhi **(G.C. Tripathi)**

विषय-सूची



प्रस्तावना

संस्कृत वाङ्मय में मङ्गलश्लोकों का विपुल भण्डार है जो ग्रन्थ के आदि मध्य और अन्त में बिखरे हुये हैं। प्राचीन ताम्रपत्र-शासनादेश एवं शिलालेख भी उत्तमोत्तम मङ्गलाचरण श्लोकों से प्रारम्भ होते हैं। ये सभी श्लोक भक्ति साहित्य एवं स्तोत्र परम्परा के उत्कृष्ट उदाहरण हैं। प्राचीन काल से अनेक सूक्तियों का संकलन सुभाषित ग्रन्थों के रूप में किया जाता रहा है, इन्हीं सुभाषित संग्रहों में मङ्गलश्लोकों का संग्रह सर्वप्रथम किया गया। कुछ प्राचीन सुभाषित संग्रहों यथा-जल्हण की सूक्तिमुक्तावली (13वीं शती) श्रीधर दास की 'सदुक्तिकर्णामृतम् ' (13वीं शती), शार्ङ्गधर कृत 'शार्ङ्गधरपद्धति' (14वीं शती), वल्लभदेवकृत 'सुभाषितावली' (15वीं शती), हरिदासकृत 'प्रस्तावरत्नाकर' (16 वी शती), सायणाचार्यकृत 'सुभाषित-सुधानिधिः' तथा पं. शिवदत्तकविरत्न कृत 'सुभाषित-सुधारत्नभाण्डागार' आदि सुभाषितग्रन्थों में मङ्गलाचरण संगृहीत हैं। इन पद्यो में देवोपासना के विभिन्न रूपों, कवियों के विचित्र कल्पनाओं के साथ ही काव्य के अनूठे सौन्दर्य के दर्शन होते हैं, जिसमें कवि अपनी प्रतिभा को पूर्ण रूपेण प्रदर्शित कर देना चाहता है। ये पद्य आशीर्वादात्मक, नमस्कारपरक तथा वस्तुपरक कहे गये है। किसी-किसी ग्रन्थ में विषयवस्तु की झलक मङ्गलाचरणों में मिलती है ऐसे मङ्गलाचरण वस्तुपरक की श्रेणी में आते हैं। अधिकांश ग्रन्थों में मङ्गलवाची शब्दों यथा ॐ, अथ, भावुकम्, कल्याणम्, भव्यम्, शुभम्, भद्रम्, सिद्धम्, शिवम्, कुशलम् आदि ग्रन्थारम्भ में प्राप्त होते है। अपने इष्टदेव के नाम के आगे नमः, प्रसीदतु, जयति, शरणम् आदि शब्दों के प्रयोग वाले मङ्गलाचरण तदनन्तर श्लोकों में निबद्ध मङ्गलाचरण प्राप्त होते है जिनकी संख्या एक-दो या अधिक भी हो सकती है। मङ्गलाचरण की यह परम्परा अद्यावधि गद्य-पद्यमय साहित्य में निभायी जा रही है। मङ्गलाचरणों के संग्रह की परम्परा पूर्व में भी थी इसके उदाहरण स्वरूप एक हस्तलेख मुझे इसी परिसर में प्राप्त हुआ। उपेन्द्रकवि द्वारा विरचित "आशीः प्रणामविधिवस्तुनिदर्शनम् " नामक यह हस्तलेख 17 पृष्ठीय है जिसमें कुल 91 पद्य हैं ग्रन्थ अपूर्ण है तथा लिपि के आधार पर अनुमानतः 18वीं शती का प्रतीत होता है। इसमें आशीर्वादपरक मङ्गलाचरणो का संग्रह है शेष प्रणामविधिपरक तथा वस्तुनिदर्शनपरक श्लोक इसमें नही है। ग्रन्थ का प्रारम्भ गणेश के पाँच मङ्गलाचरणों से है इसके बाद शिव के इक्कीस तथा शेष विष्णु व विष्णु के मत्स्यादि दशावतार के पद्य हैं। ये पद्य कहाँ से उद्धृत किये गये है तथा उनके रचयिता कौन है इसका उल्लेख नहीं किया गया है। इस हस्तलेख का प्रकाशन राष्ट्रिय संस्कृत संस्थान मानित विश्वविद्यालय, नई दिल्ली के "संस्कृत-विमर्श" पत्रिका के "नवश्रृंखला" के अंक पाँच (वर्ष-2011 मे) में किया गया है जिसका सम्पादन मेरे द्वारा ही किया गया है।

मङ्गलाचरणो के संग्रह वाला यह 'मङ्गलमणिमाला' नामक ग्रन्थ अन्य संग्रह-ग्रन्थों से अलग है क्योंकि इसमें मात्र मङ्गलाचरणों का संग्रह है तथा प्रत्येक पद्य कहाँ से उद्धृत है एवं रचनाकार कौन है इसका उल्लेख भी किया गया है। साथ ही इन पद्यों की अन्यत्र उपलब्धता की सूचना एवं पाठान्तर भी (Notes में) दिये गये है। पूर्व प्रकाशित ग्रन्थ के प्रथम भाग में गणेश, शिव, कार्तिकेय तथा हनुमान् के तथा द्वितीय भाग में विष्णु तथा विष्णु के दशावतार-मत्स्य, कूर्म, वराह, नृसिंह, वामन, परशुराम, बलराम तथा कल्कि आदि के साथ-साथ बुद्ध, जगन्नाथ, कामदेव तथा अनिरुद्ध आदि के मङ्गलाचरणश्लोकों का संकलन प्रकाशित किया जा चुका है। ग्रन्थ के इस तृतीय भाग में मुख्यरूप से शक्ति (देवी) के मङ्गलाचरणों का संग्रह है, जिसके अन्तर्गत आदिशक्ति, पार्वती, लक्ष्मी, सरस्वती तथा महाविद्याओं के मङ्गलाचरणों के साथ ही आचार्य, ग्रह, नदियाँ तथा कुछ प्रकीर्ण मङ्गलाचरणात्मक पद्यों को भी संगृहीत किया गया है।

ब्रह्माण्ड में सब शक्ति से संचालित है। शास्त्रों में शक्ति के विविध रूपों यथा-परा, ज्ञान, क्रिया, चित्, वाग्, सूक्ष्मा, महती, कुण्डलिनी, सावित्री, गायत्री, अम्बिका, लक्ष्मी, त्रिपुरसुन्दरी, काली आदि की विस्तार से चर्चा की गई है। शक्ति के ये विविध रूप-अभिधान गुण-कर्म-स्थान के अनुसार ही है जिसके उदाहरण हमें वैदिक-काल से ही मिलने लगते हैं- "सर्वाण्येतानि नामानि कर्मतस्त्वाह" (बृहद्देवता-1.27)। यह देवों की विभूति का ही परिणाम है कि इनको अनेक नाम दिये गये है- "तासामियं विभूर्तिहि नामानि यदनेकशः" (बृहद्देवता 1.71)। निरुक्तकार यास्क (7.5) भी ऐसा ही कहते हैं - " तासां महाभाग्याद् एकैकस्या अपि बहूनि नामधेयानि।" वैदिक देव प्रजापति ने भी सृष्टि के भिन्न-भिन्न कार्यो के लिये रूप धारण किये और कभी सविता कभी वराह कभी कूर्म और कभी विश्वकर्मन् कहलाये। इन सभी रूपों के पीछे तत्सम्बन्धी दिव्य शक्तियाँ की क्रियाशील रहती है। ऋग्वेदोक्त वागम्भृणी सूक्त(10.125) में शक्ति के विराट् स्वरूप के दर्शन होते हैं। यह शक्तिरूपा वाक् सूर्या, गौरी और सरस्वती है- " सूर्यामिव सतीमेतां गौरीं वाचं सरस्वतीम् " (बृहद्देवता 2.81)। पुराणों में मुख से निःसृत प्रथम ध्वनि को आद्या-शक्ति के रूप में देखते है—सृष्टि के आदि का क्षण था, विष्णु योगनिद्रा में थे, ब्रह्मा को विष्णुकर्णमलोद्भव मधुकैटभ सता रहे थे। ब्रह्मा ध्यानावस्थित होकर जप करने लगे, उनके जप के वर्णो या मन्त्राक्षरों ने कन्या रूप धारण कर लिया ब्रह्मा ने उनसे कहा कि भविष्य में अनेक कर्मो के आधार पर तुम्हारे अनेक नाम होगे- 'नामानि ते भविष्यन्ति मत्प्रसादत्शुभानने' (वायुपुराणे अ० 25)। मन्त्राक्षरों या वर्णो में शक्ति होती है प्रत्येक अक्षर की स्वतंत्र शक्ति होती है और भिन्न-भिन्न अक्षरो के मेल से भिन्न-भिन्न शक्तियाँ उत्पन्न होती है। किसी शक्ति को उत्पन्न करने के लिए किन अक्षरों का मिलान किया जाय यह दुर्लभ खोज भी हमारे ऋषियों की देन है। इन्हे ही मन्त्र कहते है, इसी मन्त्र शक्ति के अधीन देवगण रहते हैं और अपने उपासक को अभीष्ट प्रदान करते है।

शक्ति का सृजन से सम्बन्ध हैं- " अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां बह्वी प्रजाः सृजमानां नमामः।" ऐसी प्रकृति जो अपनी माया से ऐन्द्रजालिकवत् विश्व की रचना करती है, इस चिन्मयी सर्वेश्वरी, आनन्दमयी की आराधना करके ब्रह्मा जगत् की उत्पत्ति करते है, विष्णु सम्पालना करते हैं तथा महेश्वर

संहार करते हैं। मातृशक्तिस्वरूपा पार्वती, लक्ष्मी, सरस्वती आदि-देवताओं को समर्पित मङ्गलाचरण के इन पद्यों में वर्णन वैचित्र्य, सुन्दर कोमल भावों की अभिव्यक्ति, आश्चर्यजनक सोंच, भक्ति की पराकाष्ठा तथा प्रेम की अभिव्यक्ति के साथ-साथ सुन्दरपदलालित्य, अलंकार की चमत्कृति पदे-पदे दिखाई देती हैं। इन्हीं पद्यों में से कुछ चयनित पद्यों के भावों की अभिव्यक्ति को प्रस्तावना में देने का प्रयास किया गया है जिससे सुधी पाठक समग्र ग्रन्थ के अध्ययन में प्रवृत्त हो सकें।

पार्वती—

देवी पार्वती को समर्पित मङ्गलाचरणों में उन्हें शैलजा, उमा, शिवा, भवानी, अपर्णा, अम्बा, गिरिजा, अन्नपूर्णा, सती आदि अभिधानों से अभिहित कर उनके विभिन्न स्वरूपों, क्रियाओं, चेष्टाओं का सुन्दर वर्णन किया गया है। वह चतुर्भुजा हैं, त्रिलोचना हैं तथा पाशांकुशधरा है- बालार्क... (96)। बाणभट्ट (कन्नौज के हर्षवर्धन के राज्य में 606-648 ई.) ने पार्वती- परिणय नामक ग्रन्थ में शिवा की ऐसी दृष्टि से कल्याण की प्रार्थना की है जो परिणय के समय यज्ञाग्नि के धूम से व्याकुल होने के बहाने से शिव को देख रहीं हैं- आदौ... (24)। अमरुक अपने ग्रन्थ अमरुक-शतक या शृङ्गार-शतक में पार्वती के कटाक्षों से रक्षा की प्रार्थना करते है- धनुष की डोरी खींचने के समय बाण के पृष्ठ भाग में लगे हुये अँगुलियों के नखकिरणों के निचय से परिपूर्ण एवं मञ्जरी युक्त नूतन-पल्लव के कर्णपूर में लुब्ध होकर मँडराते हुये भ्रमरों के विलास को धारण करने वाली माँ पार्वती के कटाक्ष रक्षा करें- ज्याकृष्टि...(66)। लोलिम्बराज ने वैद्यावतंस नामक ग्रन्थ में शिवा को वीणा बजाते हुये चित्रित किया है- अनुकृति... (16)। न्यायदर्शन के लक्षणसूत्रों पर जयन्तभट्ट ने न्यायमञ्जरी नामक टीका की रचना की। जयन्तभट्ट कश्मीर के थे, इनके पिता चन्द्र एवं पितामह कल्याणस्वामिन् थे। जयन्तभट्ट अभिनन्द के पिता थे। इन्होंने न्यायमञ्जरी ग्रन्थ में भवानी के कुन्तलों को प्रणाम किया है जो चन्द्र से अलङ्कृत तथा संसार के ताप को दूर करने वाली अमृतनदी के समान है- नमामि... (77)। श्री हर्ष ने अपनी नाटिका रत्नावली में शिव के लिये पार्वती द्वारा अर्पित की गई पुष्पाञ्जलि से रक्षा की प्रार्थना की है- पादाग्र... (87)। श्रीहर्ष ने खण्डनखण्डखाद्यम् नामक ग्रन्थ में पार्वती के चरण कमलों की वन्दना की है- मानापनोदन (111)। चण्डी-शतक नामक ग्रन्थ में बाणभट्ट (अर्थपति के पौत्र, चित्रभानु के पुत्र तथा भूषणभट्ट के पिता) ने माँ पार्वती के चरणों की वन्दना की है- मा भाङ्क्षीः (112)। बीकानेर के राजा कृष्णसिंह के पुत्र अनूप सिंह (1674-1707 ई.) ने अनूपविवेक नामक ग्रन्थ में माँ पार्वती के चरण कमलों से कल्याण की प्रार्थना की है- खर्वन्ति... (53)। काव्यप्रकाश ग्रन्थ की मधुमती नामक टीका के टीकाकार रवि या रविपाणि जो गौरी तथा मनोधर के पुत्र अच्युत के पौत्र थे, ने अपनी पुत्री के नाम पर टीका का नाम मधुमती रखा तथा ग्रन्थ का मङ्गलाचरण माँ पार्वती का किया- गङ्गे... (54)। प्रकाशेन्द्र के पुत्र क्षेमेन्द्र जो अभिनव गुप्त के शिष्य सिन्धु के पौत्र थे, ने छन्दों पर सुवृत्ततिलक ग्रन्थ की रचना की तथा माँ पार्वती का मङ्गलाचरण किया- गणपति... (55)। एक मङ्गलाचरण में वर्णित है कि माँ पार्वती ने स्नानोद्वर्तनपिण्ड से गणेश को बनाया था- पार्वती... (89)। विद्यापति ठक्कुर

(1379 ई.) राजा कीर्त्तिसिंह मिथिला के तीरभुक्ति के राजा ने कीर्तिलता नामक ग्रन्थ में पार्वती के सहज कौतूहल से रक्षा की प्रार्थना की है- पितरुपनय... (90)। विश्वेश्वर ने आर्यासप्तशती में पार्वती का मङ्गलाचरण किया है- चुम्बित... (61)। एक अभिलेख में पार्वती को अपना देहार्ध देने का कारण बताया गया है- सौभाग्यनिधि को देने वाली पार्वती को सतीत्वादि गुणों के कारण शिव ने अपना देहार्ध दिया- पति... (86)। पाणिग्रहण से पूर्व अपनी सखी के समक्ष पार्वती शिव की लीलाओं व स्वरूप की अनुकृति करती हैं- वेणी... (140)। जानराजचम्पू नामक ग्रन्थ में ग्रन्थकार कृष्णदत्त ने माँ पार्वती की राजराजेश्वरी रूप में वन्दना की है- शम्भो... (142)। काव्यप्रकाश की टीका उदाहरण चन्द्रिका के टीकाकार वैद्यनाथ ने सिद्धियों की प्रदात्री उमा की वन्दना की है- यत्पादा... (117)।

षडानन के जन्म का समाचार सुनकर पञ्चानन शिव ने चतुरानन ब्रह्मा को शार्दूलचर्म, भुजगाभरण तथा भस्म दे दिया, यह सुनकर पार्वती हँसती है- श्रुत्वा... (154)। हेरम्ब तथा स्कन्द की बालसुलभ चेष्टाओं पर मुदित होती हैं- हे हेरम्ब... (176)। पार्वती नृत्यकुशला हैं- नवनवरस... (78), कामकलाकलापविदुषी हैं- (46), ईर्ष्याकुला हैं- हरफणि... (173) तथा वीणावादिनी हैं- अनुकृति... (16)। महेशभट्ट सुत-सोमनाथ ने मन्त्रमञ्जरी नामक ग्रन्थ में भिल्लीवेशधारी पार्वती का मङ्गलाचरण किया है- मध्ये बद्ध... (106)। शिव के कण्ठ को ग्रहण कर आनन्द से निमीलित नेत्र वाली पार्वती मानो शिव के कण्ठस्थ विष के स्पर्श से मूर्छना को प्राप्त हो गई हैं- हरकण्ठ... (172)।

गौरी—

मङ्गलाचरणों में माँ गौरी का जो स्वरूप प्राप्त होता है उसके अनुसार यह प्रतीत होता है कि माँ गौरी विवाह के समय मङ्गल प्रदान करने वाली देवी हैं। अधिकांश मङ्गलाचरणों में शिव के साथ विवाह के समय माँ गौरी के स्वरूप का, क्रियाओं का, गौरी की दृष्टि का सुन्दर वर्णन प्राप्त होता है। विवाह के समय गौरी स्मितमुखी हैं, प्रणयकुपिता हैं, नतमुखी हैं, सेर्ष्या हैं तो कभी भावगोपनपरा हैं। कवि श्रीहर्ष ने अपने ग्रन्थ रत्नावली में हर से श्लिष्ट गौरी से कल्याण की प्रार्थना की है तथा श्रीहर्ष ने ही अपने प्रियदर्शिका ग्रन्थ के मङ्गलाचरण में विवाह के समय गौरी की दृष्टि का तथा मनःस्थिति का सुन्दर वर्णन किया है—विवाह के समय गौरी की दृष्टि कभी यज्ञधूम से व्याकुल हो जाती है तो उसी समय शिव के मस्तक पर स्थित चन्द्र की किरणों को देखकर आह्लादित हो जाती हैं, कभी शिव को देखने के लिए उत्सुक होती है तो कभी लज्जा से नतमुख हो जाती हैं, गंगा को शिव के शीर्ष में देखकर ईर्ष्या से युक्त हो जाती हैं तो उसी समय पाणिग्रहण में शिव के कर का स्पर्श पाकर पुलकित हो जाती हैं- धूमव्याकुल... (187)। श्रीहर्ष द्वारा कृत एक अन्य मङ्गलाचरण में गौरी शिव का उपहास करती है- गौरी शिव से कहती हैं कि समुद्रमंथन के समय लक्ष्मी को विष्णु के साथ देखकर ही तुमने विषपान किया था- शम्भो सत्यमिदं... (195)। कवि क्षेमेन्द्र ने अपने ग्रन्थ बृहत्कथामञ्जरी में गौरी के किरात स्वरूप की वन्दना की है- वल्गत्काली... (194)। नलचरित्र नामक ग्रन्थ में नीलकण्ठदीक्षित ने ऐसी गौरी से रक्षा की प्रार्थना की है जो शिव से प्रथम प्रेमपूर्ण परिचय के समय लज्जित है, प्रसन्न है-

पत्युर्नेत्रे... (188)। कवि राजशेखर ने गौरी के ऐसे स्वरूप का वर्णन किया है जो विवाह के समय शिव के स्वरूप को देखकर भयभीत है इसीलिए विवाह के समय मंत्रों का जाप किया जा रहा है तथा गौरी के हाथ में मणि बाँधी गई है- गोनासाय... (182)। विवाह के समय गौरी की ऐसी स्थिति हो जाती है कि विवाह के समय के कृत्यों को भूल जाती है, ऐसी ही स्थिति का सुन्दर वर्णन कवि भास ने किया है—विवाह के समय शिव को देखकर गौरी देवार्चन की पुष्पाञ्जलि देना भूल गई तथा शिव की आकृति को देखकर उन्माद, स्मित, रोष, तथा लज्जा के रसों से युक्त हो गई- प्रत्यासन्न विवाह... (190)। ऐसा ही वर्णन एक अभिलेख के मङ्गलाचरण में भी प्राप्त होता है जहाँ विवाह के अवसर पर शिव द्वारा धारण किये गये सर्प की मणि में शिव के प्रतिबिम्ब को देखकर गौरी लज्जित, हर्षित तथा रोमाञ्चित हो जाती हैं-श्रीमत्कङ्कण... (197)। अभिलेखों के मङ्गलाचरण में गौरी की दृष्टि का सुन्दर वर्णन मिलता है- विवाह के समय सम्भ्रमित, मुकुलित तथा विस्फारित गौरी की दृष्टि रक्षा करें- पाणौ बद्ध... (189)। गौरी के ऐसे स्वरूप का वर्णन है जो तीनों गुणों से सम्पूर्ण चराचर का क्षणभर में सृजन, पालन और अन्त करती है, जो निरङ्ग शिव को भी अङ्गवान् बना देती है- क्षणादिदं... (181)। अनङ्गजीवनभाण नामक ग्रन्थ में कवि ने गौरी के ऐसे चरणों से रक्षा की प्रार्थना की है जो शिव को ताडन के लिए उद्यत हैं- शिव गौरी के चरणों में गिरकर शपथ लेते हैं कि मैंने गङ्गा को अङ्गीकार नहीं किया है किन्तु उसी समय शिव के शीर्ष में गङ्गा को देखकर अत्यन्त क्रोध से युक्त होकर गौरी शिव को चरण से ताडन के लिए उद्यत हो जाती हैं- त्वन्नेत्रेण... (185)।

एक अन्य मङ्गलाचरण में गौरी के पतिगृह का सुन्दर वर्णन किया गया है- गौरी के गृह में सन्ध्या है जो रागवती है, गंगा है जो स्वभाव से कुटिला है, सर्प है जो द्विजिह्व है, चन्द्र है जो मलिन और वक्री है, नन्दी कपिमुख है, वृष मूक है ऐसी स्थिति वाले पतिगृह में गौरी का रहना चिन्तनीय है- सन्ध्यारागवती... (198)। गौरी शिव के भिक्षाटन से परेशान होकर उन्हें कृषिकार्य करने को कहती है-कृष्णात् प्रार्थय... (180)। प्रणयकुपिता गौरी शिव से कहती है- तुम्हारे सिर में गंगा है जो कुटिला है, चन्द्र है जो दोषाकर है, विषधर है, पिशाचों से घिरे हो फिर भी इनके प्राणों का हरण क्यों नहीं करते- ऐसे गौरी के वचनों से रक्षा की प्रार्थना की गई है- शिरसि कुटिला... (196)। एक अन्य मंगलाचरण में भावगोपनपरा गौरी का सुन्दर वर्णन प्राप्त होता है- शिव गौरी से पूछते हैं कि तुम स्वेदयुक्त क्यों हो, डरी क्यों हो, रोमाञ्चित क्यों हो इस पर गौरी अपनी भावनाओं को छुपाती हुई कहती है कि वह शिव के तृतीय नेत्र की अग्नि से स्वेदयुक्त है, सर्प के भय से डरी हुई है तथा गंगा के जलकणों से रोमाञ्चित हैं- स्वेदस्ते... (199)। इसी प्रकार सुन्दर भावों से युक्त अनेक मङ्गलाचरणों में गौरी से रक्षा की तथा मंगल की कामना की गई है।

दुर्गा—

मङ्गलाचरणों में माँ दुर्गा महिषमर्दिनी, त्रिगुणा, त्रिशूलधारिणी, दशभुजाओंवाली, शुम्भनिशुम्भमर्दिनी, चण्डमर्दिनी, सिंहारूढा है, जो भवभीतिविनाशनिका हैं। माँ दुर्गा विजय प्रदान

करने वाली देवी हैं। भक्तों के दुःखों का हरण करती है। माँ दुर्गा दश भुजाओं वाली इसलिए है जिससे वह अपने भक्तों के दुःखों को शीघ्र ही दूर कर सके- आविष्कृतै... 204)। उद्भटसागर नामक ग्रन्थ में ग्रन्थकार पूर्णचन्द्र ने माँ दुर्गा का मङ्गलाचरण कई श्लोकों में किया है जिसमें वे दुर्गादेवी को भवभीतिविनाश के लिए नमस्कार करते हैं- आराध्य... (203) वहीं दूसरे श्लोक में दुर्गा देवी की स्तुति करते हुये कवि कहता है कि त्रिभुवन जिसका शिल्प है, तीनों वेद काल है, शिव जिसके नाथ हैं, गंगा जिसकी सपत्नी है, जो तीनों लोकों को देखने के लिए तीन नेत्रों को धारण करती है ऐसी त्रिगुणा, त्रिशूलधारिणी देवी दुर्गा कल्याण करे- यस्याः शिल्प.. (236)। मित्रमिश्र ने अपने ग्रन्थ वीरमित्रोदय में दुर्गा के महिषमर्दिनी रूप की स्तुति की है। चण्डिकाचरितचन्द्रिका ग्रन्थ में कृष्णदत्त ने माँ दुर्गा की स्तुति की है। माँ दुर्गा शुम्भनिशुम्भ का नाश करने वाली है-भगवती.. (231)। चण्डादि को मारने के कारण देवी चण्डी है- चण्डीं चण्डादिहन्त्री....(215)। चण्डिका के रूप में माँ दुर्गा का ताण्डव रक्षा करे ...पायात्पाताल (229)। माँ दुर्गा का एक पैर महिषासुर के सिर पर है तो दूसरा चरण देवगणों द्वारा पूजित है। माँ दुर्गा की आराधना विजय की कामना से की गई है.....आनन्दमन्थर.. (202)। माँ दुर्गा के पदकमलों के वैभव का वर्णन करने के लिए शिव पञ्चानन हुये, ब्रह्मा चतुरानन हुये तथा विष्णु सहस्रानन हुये फिर भी वर्णन करने में समर्थ नहीं हो सके, ऐसी माँ दुर्गा कुशलता प्रदान करे....यत्पादाम्बुज (234)। कवि पूर्णचन्द्र ने उद्भटसागर नामक ग्रन्थ में देवी दुर्गा का जो मंगलाचरण किया है वह कवि के काव्य-कौशल का सुन्दर उदाहरण है। प्रत्येक पद का प्रथमाक्षर 'द' अक्षर से प्रारम्भ है- दीर्घाक्षी... (221)।

दुर्गा देवी की आराधना में श्रीदुर्गासप्तशती ग्रन्थ का प्रमुख स्थान है। एक अभिलेख के मङ्गलचरण में सप्तशती के द्वारा दुर्गा की आराधना का उल्लेख मिलता है-

अतीव्रतेजो द्युपतीन्द्रपूज्यं व्रतीश्वरैः सप्तशतीभिरर्च्यम्।
रतीशजीवातुगतिं दधानं प्रतीतदुर्गाङ्घ्रिमतीव वन्दे।।

विन्ध्यवासिनी—

मङ्गलाचरणों में श्रीविन्ध्यवासिनी देवी नन्दा है, गिरिजा हैं तथा मान्यतमा कन्या हैं। आयुर्वेद के ग्रन्थ रससंग्रहसिद्धान्त में गोविन्दरामठाकुर पुत्र वेणीदत्त ने विन्ध्येश्वरी देवी को नन्दा कहकर नमन किया है- नन्दाभिधां.....(256) चित्तौडगढ़ के अभिलेख में गिरिजा विन्ध्यालया हैं जो मान्यतमा कन्या हैं -भृमीभृत् ..... (258)। कुम्भलगढ अभिलेख के अनुसार श्रीविन्ध्यवासिनी देवी कुटिला सरिता (नदी) के समीप त्रिकूटगिरिगहन में विभूषित हैं -कुटिलासरित्समीपे....(255)।

लक्ष्मी—

मङ्गलाचरणों में "लक्ष्मी" देवी जिस रूप में वर्णित हैं उसके अनुसार यह देवी ऐश्वर्य एवं वैभव से युक्त हैं । अपने उपासकों को वैभव प्रदान करने वाली, दुःखों को दूर करने वाली तथा नम्र है। इनकी स्पृहा सभी करते हैं। श्री के जन्म के समय उसके सौन्दर्य से सभी देव देवियाँ, अप्सरायें विस्मय एवं ईर्ष्या से युक्त थे—

सानन्दं त्रिदशैः सविस्मयमविश्वस्तैः सुरद्वेषिभिः
साश्चर्यं सुरसुन्दरीपरिजनैः सेर्ष्यं च रम्भादिभिः।
साकूतं च सकौतुकं च समनोह्लादं च कंसद्विषा
दृष्टा दुग्धमहोदधिप्रमथने लक्ष्मीः शिवायास्तु वः।।

श्री क्षीरसागर से उत्पन्न विष्णुपत्नी इन्दिरा हैं- अगणितमहिमायै...(262)। श्री ही पद्मा है, पद्मासना है, पद्मनाभप्रिया है, विष्णु के वक्षःस्थल में स्थित हैं। विष्णु के वक्षरूपी गृह में कौस्तुभरूपी दीपक में लक्ष्मी का निवास है- विष्णुवक्षो-गृहे... (333)। रसरत्नहार ग्रन्थ के मङ्गलाचरण में ग्रन्थकार ने लक्ष्मी को विष्णु से अधिक माना है-विष्णु के चरण कमल के दसों नखों में अपना प्रतिबिम्ब देखकर लक्ष्मी स्वयं को विष्णु के दशावतार से अधिक मानती हैं- निरीक्ष्य विष्णोश्चरणारविन्द... (299)

सुन्दर पद विन्यास के साथ कमला से प्रार्थना है-

कमलासन कमलेक्षण कमलारि किरीटकमलमृद्वाहैः।
नूतनपदकमला कमला करधृतकमला करोतु में कमलम्।।

कैलासपर्वत से ऊँचे चार गणों के द्वारा हाथ से उठाकर सोने के अमृतघट से सींची जाती हुई, स्वर्णाभा वाली श्री, उज्ज्वल किरीट वाली तथा अभय मुद्रा एवं कमल को हाथ में धारण किये हैं- कान्त्या काञ्चनसंनिभां... (275)

एक अन्य श्लोक में चार हाथी अपनी सूंड से स्वर्णघट उठाकर लक्ष्मी को अभिसिक्त कर रहे हैं- चतुर्भिः कैलासस्फुरितकरिभिर्हेमससुधै... (282)

वीरों के द्वारा भोग्या होते हुये भी लक्ष्मी महासती है तथा सम्पूर्ण लोकों में रहते हुये भी कृष्ण के उरस्थल-शायिनी है- प्रवीरहठ भोग्यापि... (309)। विभूति, श्रेयस्, कीर्ति तथा मंगल की प्रदात्री है- दरिद्रतोन्मूलन कर्मदक्षा.......(289)।

एक मङ्गलाचरण में श्रीमन्तों के धूलिलोचन होने के विषय में सुन्दर वर्णन है- प्रतीत होता है कि समुद्र मंथन के समय लक्ष्मी के साथ ही धूलि भी आ गई, इसीलिए श्रीमन्त धूलि लोचन हैं- मन्ये लक्ष्मि... (317)। लक्ष्मी दारुण दुःख को दूर करने वाली है। सम्पत्ति को देने वाली ऐसी लक्ष्मी से मङ्गल की प्रार्थना की गई है-

मङ्गलं मङ्गलानां या दत्ते मङ्गलदेवता।
संश्रिता नृहरिं तस्यै लक्ष्म्यै भवतु मङ्गलम्।।

त्रिपुरसुन्दरी—

दुर्वासा ऋषि ने देवीमहिम्नस्तव ग्रन्थ में त्रिपुरसुन्दरी देवी की स्तुति की है। श्रीकृष्णदीक्षित ने कुण्डरत्नावली ग्रन्थ में तथा उनके पुत्र रामचन्द्र दीक्षित ने उसी ग्रन्थ की टीका मञ्जूषा में त्रिपुरसुन्दरी देवी का मङ्गलाचरण किया है। कितवोल्लास नामक ग्रन्थ में बालात्रिपुरसुन्दरी का मङ्गलाचरण किया गया है।

राधा—

मङ्गलाचरणों में राधा के विविध रूपों के वर्णन के साथ-साथ उनको नमस्कार कर उनसे रक्षा की प्रार्थना की गई है। गीतगोविन्द नामक ग्रन्थ की टीका रसतरङ्गिणी के मङ्गलाचरणों में राधा श्रीकिशोरी हैं- "व्रजयुवतिषु रम्यां श्रीकिशोरीं नमामि (383)। विश्वनाथ चक्रवर्ती कवि ने रूपचिन्तामणि नामक ग्रन्थ में राधा के चरणों की वन्दना की है जो उन्नीस शुभ-लक्षणों से युक्त हैं- छत्रारिध्वज...(377)। गङ्गानन्दकृत् भृङ्गदूत ग्रन्थ की टीका रामेश्वरप्रसादिनी के टीकाकार चेतनाथ ने राधिका को सम्पूर्ण सुख की प्रदात्री कहा है जिसको प्रसन्न करने के लिए कृष्ण सदैव पूजा करते हैं- कृष्णोपि ....(376)। ग्रन्थकार लीलाशुक ने राधा से रक्षा की प्रार्थना की है जो कृष्ण में दत्तचित्त होने के कारण दधि से रिक्त पात्र में ही मथानी चलाती है- राधा पुनातु ...(381)। एक अन्य मङ्गलाचरण में राधा के ऐसे रूप का वर्णन किया गया है जो कृष्ण के विविध रूपों की लीला करती है- कस्तूरी चर्चिताङ्गी ...(375)।

सीता—

रामचन्द्र दीक्षित ने अपने ग्रन्थ शृङ्गारतिलकभाण में सीता के कटाक्षाङ्कुरो से कल्याण की प्रार्थना की है-उन्मृष्टं ..... (388)। पाणिग्रहण के अवसर पर सीता की सङ्कुचित दृष्टि से विभूति की प्रार्थना की है- पाणिग्रहणावसर ... (390)। उद्भटसागर ने जन्म से ही दुःख दलिता सीता का वर्णन करते हुये उन्हें प्रणाम किया है- भूति .... (392)।

सरस्वती—

सरस्वती की नदी और देवी दोनों ही रूपों में स्तुति की गई है। इसमें सन्देह नहीं कि वैदिक काल में सरस्वती प्रमुखतः एक नदी थी जिसके किनारे ऋषियों ने ऋचाओं की रचना की, यज्ञादि किये फलतः इसे ऋचाओं को प्रभावित करने वाली दिव्य शक्ति माने जाने लगा इसी दिव्य शक्ति की वाक् देवी के रूप में स्तुति की गई। कालान्तर में वैदिक वाक् का स्थान पूर्णतः सरस्वती ने ले लिया। चूँकि

ये ज्ञान की, विद्या की देवी हैं इसलिये ग्रन्थारम्भ में अधिकांशतः सरस्वती के मङ्गलाचरण प्राप्त होते है जिनमें उनके विभिन्न रूपों का सुन्दर वर्णन किया गया है। श्रेयस् की प्राप्ति हेतु, वाणी में विभूति हेतु, चेतना की शुद्धि हेतु, हृदयान्धकार को हरने हेतु कवि माँ शारदा से प्रार्थना करता है। माँ सरस्वती रसनाग्र भाग में नृत्य करे, कण्ठ में निवास करे तथा जिह्वा में वाग्विलास प्रदान करे ऐसी कवि प्रार्थना करता है। कर्णदेव (1047 ई0) के गोहरवार प्रस्तराभिलेख के मङ्गलाचरण में यह ऐसी सूक्ष्मा ब्राह्मी रूपी वल्लरी के रूप में वर्णित है जो मोक्ष रूपी महाफल की प्रदात्री है, जिसका मुनिगण शुद्ध हृदय क्षेत्र में रोपण करते हैं—शुद्धे हृदयक्षेत्रे... (562)। कात्यायन-शुल्ब-सूत्र ग्रन्थ के मङ्गलाचरण में देवी शारदा को प्रणाम किया गया है जो जड, शठ, पापी, विमूढ तथा अबुद्ध प्राणी को अपनी कृपा से प्रबुद्ध बनाकर प्रकाशित कर देती है— नमस्तेस्तु देवि... (468)। काञ्ची के आचार्य दण्डी (7वीं शती) ने अपने काव्यादर्श ग्रन्थ का मङ्गलाचरण सरस्वती देवी की स्तुति से किया है। पल्लव शासक के शासनकाल में इनके पूर्वज गुजरात से काञ्ची आये थे। आचार्य दण्डी वीरदत्त तथा गौरी के पुत्र, मनोरथ के पौत्र तथा दामोदर (भारवि के मित्र) के प्रपौत्र थे। सोमदेव (1063-1081 ई0) ने कथासरित्सागर नामक ग्रन्थ में, भास्कराचार्य (1114-1183 ई0) ने लीलावती ग्रन्थ में, हेमाद्रि (1260-1270 ई0) ने प्रायश्चित्तनिर्णय नामक ग्रन्थ में, रसमञ्जरी (आयुर्वेद) के लेखक वैद्यनाथ के सुत शालिनाथ ने तथा चन्द्रालोक (अलंकार) ग्रन्थ के लेखक महादेव एवं सुमित्रा-सुत, जयदेव (1200-1250 ई0) ने ग्रन्थारम्भ सरस्वती की स्तुति से किया है। पुरुषोत्तम देव (11वीं शती) व्याकरणाचार्य एवं कोशकार थे, इन्होंने बंगाल के राजा लक्ष्मणसेन के कार्यकाल में रचनायें की थी अपने हारावली नामक कोशग्रन्थ में सरस्वती देवी का मङ्गलाचरण किया है। महेश्वर ने भी सरस्वती देवी की स्तुति विश्वप्रकाश ग्रन्थ के ग्रन्थारम्भ में की है। प्रक्रिया-कौमुदी (व्याकरण) के रचनाकार कृष्णाचार्य के पुत्र रामचन्द्र (14वीं शती) की प्रकाश अथवा गूढार्थभाव-विवृत्ति नामक टीका के टीकाकार कृष्णशेष अथवा शेष, पुत्र-नृसिंह ने टीका के आरम्भ में शारदा की स्तुति की है। कामदेव के पुत्र तथा वासुदेव के पौत्र हेमाद्रिसूरि (13वीं शती) देवगिरि के यादव शासकों के यहाँ मंत्री थे, इन्होंने अपने चतुर्वर्गचिन्तामणि नामक ग्रन्थ में मङ्गलाचरण माँ शारदा का किया है। प्रस्ताव-रत्नाकर नामक सुभाषित ग्रन्थ के प्रणेता पुरुषोत्तम के पुत्र हरिदास (1557 ई0) ने 21 अध्यायों में ग्रन्थ को लिखा जिसमें सरस्वती देवी का मङ्गलाचरण है। हरिदास करण परिवार के थे तथा कृष्णदास, दामोदर तथा नारायण के छोटे भाई थे। मिथिला के राजा लक्ष्मीश्वर सिंह के लिए उषाहरण नामक नाटक के लेखक हर्षनाथ शर्मा ने संस्कार-दीपक नामक ग्रन्थ के प्रारम्भ में सरस्वती की स्तुति की है। सिंहसिद्धान्तसिन्धु के लेखक शिवानन्दभट्ट; जानराजचम्पू के लेखक मिथिला के कृष्णदत्त; संगीत-रघुनन्दन के लेखक विश्वनाथसिंहजूदेव; वृत्तिवार्तिक (अलंकार) के लेखक अप्पयदीक्षित; राघवोल्लास (काव्य) के रचनाकार अद्वैतयति; पारिजातहरणचम्पू के लेखक श्रीकृष्ण; साहित्यरत्नाकर के लेखक धर्मसूरि; वीरमित्रोदय के लेखक मित्रमिश्र आदि ने अपने-अपने ग्रन्थों का मङ्गलाचरण सरस्वती की स्तुति से किया है। पुरुषोत्तम के पुत्र, रामकृष्ण के पौत्र, नंदपण्डित के पिता तथा रामपण्डित के शिष्य ढुण्डिराज

(1560-70 ई0) ने कुण्डकल्पलता ग्रन्थ में सरस्वती की स्तुति की है। ज्योतिष-कल्पद्रुम नामक ग्रन्थ में सरस्वती देवी की वही स्तुति की गई है जो मल्लिनाथ ने अपने रघुवंश की टीका में किया है-

शरणं कर वाणि शर्मदं ते चरणं वाणि चराचरोपजीव्यम्।
करुणामसृणैः कटाक्षपातैः कुरु मामम्ब कृतार्थसार्थवाहम्।।

कुण्डमण्डपसिद्धि अथवा कुण्डसिद्धि नामक ग्रन्थ की व्याख्या में विट्ठलदीक्षित (1619 ई0) ने सरस्वती देवी का मङ्गलाचरण किया है। विट्ठल दीक्षित कृष्णात्रिगोत्र बाबू शर्मन् के पुत्र थे तथा संगमनेर के थे। बनारस में इस ग्रन्थ की रचना की। 1628 ई0 में विट्ठलदीक्षित ने तुलापुरुषदानविधि तथा मुहूर्त्तकल्पद्रुप तथा इसकी टीका भी लिखी। विद्वद्भूषण ग्रन्थ के लेखक बालकृष्णभट्ट (1610 ई0) अत्रि गोत्र के थे, इन्होंने ग्रन्थारम्भ में सरस्वती देवी की स्तुति की है। हलायुध (1175-1200 ई0) ने कविरहस्य नामक ग्रन्थ में; भल्लट ने भल्लटशतक नामक ग्रन्थ में; वैद्यनाथ ने वैद्यकल्पतरु ग्रन्थ में; नागार्जुन ने नागार्जुनकामरत्न नामक ग्रन्थ में; जीवनाथ ने भावप्रकाश (ज्योतिष्) नामक ग्रन्थ में; श्रीक्षेत्र के पुत्र सूत्रधारमण्डन ने शिल्पशास्त्र के ग्रन्थ प्रासादमण्डन तथा वास्तुशास्त्रराजवल्लभ नामक ग्रन्थ के मङ्गलाचरण में माँ शारदा की स्तुति की है। धरणीधर के पुत्र, बनारस के रहनेवाले नागर परिवार के गंगाधर के पौत्र, दयाशङ्कर या कृपाशंकर या करुणाशंकर ने हयग्रीव रचित जटापटल ग्रन्थ की दीपिका नामक टीका के मङ्गलाचरण में सरस्वती की स्तुति की है। दुर्लभराज के पुत्र तथा नरसिंह के पौत्र जगदेव ने स्वप्नचिन्तामणि नामक ग्रन्थ में सरस्वती की वन्दना की है। सोमराज दीक्षित के पुत्र तथा व्रजराज के पिता कामराज दीक्षित (1681 ई.) ने शृङ्गारकलिकात्रिशती नामक ग्रन्थ में; व्रजनाथ के पुत्र हर्षनाथ ने जलाशयोत्सर्ग-पद्धति तथा चातुश्चरणयज्ञ-पद्धति नामक ग्रन्थ का मङ्गलाचरण सरस्वती देवी का किया है। वाणीविलसितम् नामक ग्रन्थ में लेखक रामशरणत्रिपाठी ने सरस्वती देवी का सुन्दर मङ्गलाचरण किया है। सभी मङ्गलाचरणों में माँ भारती को प्रणाम करते हुये उनके स्वरूप का सुन्दर वर्णन किया गया है। जगद्व्यापिनी, परमा, आद्या, जडता को हरने वाली, बुद्धि को देने वाली माँ सरस्वती श्वेत हंस पर आरूढ़ होकर गगन में विचरण करती हैं, उनके दाहिने हाथ में अक्षमाला, बायें हाथ में पुस्तक है तथा वीणा वादन में तत्पर हैं-

शुद्धब्रह्मविचारसारपरमाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्तैः स्फाटिकमालिकां च दधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्।।

वीणा-पुस्तक धारण करने के साथ-साथ वे पाशाङ्कुश भी धारण करती है-

पाशाङ्कुशधरा देवी वीणापुस्तकधारिणी।
मम वाचि वसेन्नित्यं दुग्धकुन्देन्दुनिर्मला।।

जो माहमाया है, चिन्मयी है वह देवी सरस्वती वाग्-विलास की प्रदात्री है-

महामायेति या गीता चिन्मयी मुनिसत्तमैः।
तनोतु वाग्विलासं मे जिह्वायां सा सरस्वती।।

वह वागधिष्ठात्री है उसकी कृपा से मूकत्व सर्वदा स्फुटता को प्राप्त हो जाता है, जड व्यक्ति बुद्धि को प्राप्त करता है-

यस्याः प्रसादमासाद्य जडो याति बुधार्यताम्।

एवं

यस्याः प्रसादविरहे मूकत्वं सर्वदा स्फुटम्।
तामेकां वागधिष्ठात्रीं महादेवीमुपास्महे।।

वह सूक्ष्म है, पवित्र है तथा अपने वाक्-तन्तु से जगत् रूपी पट पर विचित्र विन्यास करती है-

सूक्ष्माय शुचये तस्मै नमो वाक्तत्वतन्तवे।
विचित्रो यस्य विन्यासो विदधाति जगत्पटम्।।

मल्लिनाथ ने कुशल पदविन्यास से शारदा की स्तुति की है-

शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे।
सर्वदा सर्वदास्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात्।।

सत् और असत् का बोध कराने वाली वागीशा का वाहन हंस भी जल-दुग्ध के निर्णय में दक्ष है-

जलदुग्धनिर्णयविधौ यस्या वाहोऽपि विश्रुतो दक्षः।
सा सदसत्वविबोधकवागीशा स्तान्ममाद्य गतिः।।

भल्लट कृत-भल्लट-शतक के मङ्गलाचरण में सुन्दर पद-विन्यास दर्शनीय है-

तां भवानीं भवानीतक्लेशनाशविशारदाम्।
शारदां शारदाम्भोदसितसिंहासनां नुमः।।

चतुराकृति-वाणी चतुरानन-अज को पति रूप में वरण करती हैं-

गीर्नः श्रेयः परं दद्यादजा सा चतुराकृतिः।
अनुरूपमजं वव्रे या पतिं चतुराननम्।।

लक्ष्मी के प्रति ईर्ष्या भाव को दर्शाने वाले इस श्लोक में वीणा की झंकार को सरस्वती की हुंकार कहा गया है-

लक्ष्मीमुखमालोकति भगवति सेर्ष्या वचोदेवी।
ननु वदनान्निजवीणाक्वणनमिषाज्जयति हुंकृतिं ददती।।

कविलोककुटुम्ब की कामधेनु माँ सरस्वती को हम प्रणाम करते हैं। जिसकी कृपा से सम्पूर्ण जाड्यता का नाश होता है वह भगवती हमारी रक्षा करे-

सा मां पातु सरस्वती भगवती निश्शेषजाड्यापहा।।

वाग्देवी तीनों धामों में रहने वाली परावाक् है- उद्यत्... (418)। इनकी कान्ति चन्द्र के समान है और जो श्वेत कमलासना है वही शारदा के रूप में हैं जिनका सम्पूर्ण शरीर सप्तवर्णों से बना है- अचक... (401)। जिनके दोनों नेत्रों में चन्द्र और सूर्य है जो शाश्वत एवं विश्वयोनि है। भारती के रूप में पुस्तक अक्षमाला धारण किये हैं- अमल... (405)। वही वाणीरूपा है, श्वेतकमला हैं उनका शरीर लिपिमय है- उन्निद्र... (419)। वाणीरूपा सरस्वती के कानों में कदम्बतरुमञ्जरी है, हाथों में विपञ्चिका है तथा शारिका भी है- कदम्बतरु... (421)। वाणीरूपा भारती त्रिलोचना, अभयवरदा एवं चन्द्रकलायुक्ता है- करकमल... (423)। शारदा के ललाट में केसर तथा हाथ में जपमाला है- काश्मीर... (432)। सरस्वती चतुराकृति है जिनके पति चतुरानन हैं- गीः... (438)। ऐसी, भारती, वाणी, सरस्वती तथा शारदा की हम स्तुति करते हैं और लेखन की शुद्धता की प्रार्थना करते हैं— कलित... (427)।

काली—

तांत्रिक ग्रन्थों में महाविद्याओं के नाम अलग-अलग मिलते हैं। चामुण्डतन्त्र के अनुसार काली, तारा, षोडशी, भुवनेश्वरी, भैरवी, छिन्नमस्ता, धूमावती, बगला, मातङ्गी, कमलात्मिका है। तन्त्रसार नामक ग्रन्थ के अनुसार- काली, नीलामहादुर्गा, त्वरिता, छिन्नमस्ता, वाग्वादिनी, अन्नपूर्णा, प्रत्यङ्गिरा, कामाख्या, बाला, वासली, मातङ्गी, शैलवासिनी महाविद्याओं के नाम है। महाविद्या-क्रम में सबसे प्रथम स्थान काली का माना जाता है। महाकाल संहिता काली तत्त्व के विषय में अति उत्कृष्ट ग्रन्थ है। इस ग्रन्थ में लिखा है कि विभिन्न देवता विभिन्न युगों में फल प्रदान करते हैं,किन्तु चारों युगों में फल प्रदान करने की सामर्थ्य एकमात्र दश महाविद्याओं में है। उनमें काली, तारा और सुन्दरी का विशेष उत्कर्ष है। इस परिसर मे संगृहीत 'गुरुगीतास्तोत्रम् ' (2359) हस्तलेख जो बंग लिपि में है, उसके अन्तिम पृष्ठ पर लिपिकार ने काली के विषय में लिखा हैं - "एकांशेन भवेद् ब्रह्मा एकांशेन जनार्दनः एकांशेन भवेद्छम्भुः कालिकायाः सुलोचने। अपरा सा महाकाली नद्यादीनां समुद्रवत् । गोष्पदे च यथा तोषं ब्रह्माद्या देवतास्तथा। गोष्पदः किं विजानीयात् समुद्रस्य जलं शिवे! तेन ब्रह्मा न जानाति विष्णुः किं वेत्ति शङ्कर? सृष्टिकर्त्ता यदा काली तन्यते च सुरादयः तथा प्रलयकाले तु पुनस्तस्यां प्रलीयते। अति निर्वाणदा काली पुरुषः स्वर्गदायकः।" काली कपालहस्ता है ....(599)। कलियुग में कूर्चाकारा काली को भजे....(602)। काली भीषणाङ्गी हैं सिंहस्था हैं, खड्ग कपाल धारण किये है, शिव के हृदय मे पैर

रखे हुये हैं। निर्मांस-अस्थिजालयुक्त शरीर, नेत्र लाल है, कल्पान्तसूर्य के प्रकाशवाली हैं, शत्रुओं को भय देने वाली हैं। यही भैरवी है, कालरात्रि है, प्रौढारूप है, श्यामा है, मुक्तकेशी है, अवस्त्रा है, उग्रदन्ता है, मुण्डमालाधारी है, विकटानना है। दोनों कर्णों में शवालंकार है तथा शवकर की मेखला धारण किये है–....(621)।

छिन्नमस्ता—

देवी छिन्नमस्ता अपने बाँये हाथ मे रुधिर बहते हुये अपने सिर को लिये हुये हैं—भास्वन्....(625)।

तारा—

प्राप्त मङ्गलाचरणों में देवी तारा का स्वरूप उग्र है। निकले हुये विकट दाँत हैं, अट्टहास करने वाली हैं, नरशिरोमाला धारण किये हैं, कपालहस्ता हैं–प्रकट....(627)। देवी तारा भवतापदुःखशमनी तथा पिशाचभयशमनी है–हरि....(629)।

बगलामुखी—

मङ्गलाचरणों में बगलामुखी पीताम्बरा हैं, द्विभुजा हैं, मुख इन्दु के समान है, शत्रु की जिह्वा को पकड़े हुये है तथा गदा या मुद्गर से शत्रु पर घात करती है।

मातङ्गी—

मतङ्ग मुनि की सुदीर्घ तपस्या से देवी ने प्रसन्न होकर उनकी कन्या के रूप में जन्म लिया और मातङ्गी कहलायी। वल्लकी वीणा को बजाती हैं, श्यामलाङ्गी है तथा समीप में शुक है ....(635)।

चन्द्र—

इन्दु, शशि, रोहिणीश, मृगाङ्क, विधु, सुधांशु, श्वेतभानु, द्विजेश्वर आदि नामों से अभिहित चन्द्र के सभी मङ्गलाचरणात्मक पद्यों में कवियों ने अधिकांशतः ऐसे चन्द्र का वर्णन किया है जो शिव के शीर्ष पर सुशोभित है जिसकी अमृतमयी किरणों से कवि रक्षा की प्रार्थना करता है। आचार्य क्षेमेन्द्र, बिल्हण, हिंगण, भास्करकवि, गोवर्द्धनाचार्य, वामन, सुबन्धु, उपापतिधर, राजशेखर, कृष्णदत्त, गङ्गेश्वर, रामचन्द्रकवि आदि लेखकों ने अपने-अपने ग्रन्थों के मङ्गलाचरण में चन्द्र की स्तुति की है। आचार्य क्षेमेन्द्र ने अपने बृहत्कथामञ्जरी नामक ग्रन्थ में चन्द्र की कला का वर्णन किया है जिस चन्द्र

को गौरी ने शिव से द्यूतक्रीड़ा में जीतकर कर्णफूल बना लिया है- गौर्या... (747)। एक प्रस्तराभिलेख के मङ्गलाचरण में शिव के शिरस्थ चन्द्रकिरणों का उल्लेख है जो पार्वती के कण्ठ में मालतीमाला के समान सुशोभित है- पान्तु... (755)। कवि बिल्हण ने शिव की जटा में स्थित अर्धचन्द्र की पूर्णता के सम्बन्ध में लिखा है कि पार्वती के शिव की अर्धाङ्गी होने पर उनका अर्ध मुखचन्द्र शिव के शिरस्थ अर्ध चन्द्र से मिलकर पूर्णचन्द्र हो जाता है- देहप्रविष्ट... (752)। आयुर्वेद के रसरत्नावली नामक ग्रन्थ के मङ्गलाचरण में ग्रन्थकार हिंगण ने चन्द्र की शिव के शिरस्थ होने की सार्थकता को व्यक्त करते हुए लिखा है- शिव के कण्ठस्थ कालकूट की ज्वाला के शमनार्थ ही शिव के मस्तक पर चन्द्र स्थित है- विश्वेश्वरस्य... (767)। एक प्रस्तराभिलेख के मङ्गलाचरण में ऐसे चन्द्र से रक्षा की प्रार्थना की गई है जो स्वयं भयभीत है- नृत्य करते समय शिव के तृतीय नेत्र की ज्वाला से शिरस्थ चन्द्र की अमृत किरणें पिघलकर शिव के कण्ठस्थ मुण्डमाल को स्पर्श करने लगीं जिससे सभी मुण्डमाल जीवित होकर अनेक राहु होने का भ्रम उत्पन्न करने लगे जिससे चन्द्र भयभीत होने लगा- विद्युत्पिंगल... (766)। उन्मत्तराघव ग्रन्थ के प्रणेता भास्कर कवि ने रक्ताभ मुख वाले चन्द्र की किरणों से रक्षा की प्रार्थना की है जो शिव के पार्वती के चरणों में सिर रखने के समय पार्वती के आलक्तक से लाल वर्ण का हो गया है- कलाचन्द्री... (745)। मैथिलकवि कृष्णदत्त ने कुवयलाश्वीय नाटक में चन्द्रकला से रक्षा की प्रार्थना की है- भालप्रज्वल... (758)। नीलाम्बर अथवा संकर्षण सुत गोवर्द्धनाचार्य (12 वीं शती) ने आर्यासप्तशती के मङ्गलाचरण में चन्द्र की स्तुति की है पूर्णनखेन्दु... (756)। बंगाल के कवि उमापतिधर या उमापति राजा विजयसेन (1095-1158) के कोर्ट में थे, उन्होंने चन्द्रचूडचरित नामक काव्य की रचना की, अपने ग्रन्थों के मङ्गलाचरण में चन्द्र की स्तुति की है।

सूर्य—

मङ्गलाचरणों में सूर्य सविता, विवस्वत, आदित्य, अर्क, दिनकर, दिवाकर, भास्कर, मार्तण्ड, भानु, रवि, अंशुमाली, ग्रहेश, द्युमणि, पूषा, आदि अनेकानेक नामों से अभिहित होकर स्तुत हैं। विभिन्न ग्रन्थकारों, यथा- आयाजी अथवा आपाजी भट्ट, दिवाकरसुत-विश्वनाथ, शार्ङ्गधर, दैवज्ञगुणाकर, रोमक, रुद्रकवि, जगन्नाथ, मुनीश्वर, भास्कराचार्य, काशीनाथ, वराहमिहिर, हेमाद्रि, नीलकण्ठसुत-शङ्करभट्ट, हलायुध, धर्मसूरि, श्रीपतिमिश्र, क्षेमराज, गणपति, नारायण, आदित्यसूरि, लक्ष्मीनृसिंहभट्ट, नरपति, श्रीपति, नृसिंहदैवज्ञ, जीवनाथ, बैजनाथ, भल्लट, मदनपाल, नीलकण्ठ, वोपदेव, मीनराज तथा धर्मेश्वर आदि ने अपने ग्रन्थों में मङ्गलाचरण सूर्यदेव का किया है।

सूर्यदेव के लिए समर्पित मङ्गलाचरणात्मक श्लोक अधिकांशतः ज्योतिष्, धर्मशास्त्र, आयुर्वेदादि विषयक ग्रन्थों में प्राप्त होते हैं। ज्योतिष् विषयक ग्रन्थों के प्रणेता वराहमिहिर, भास्कराचार्य,

श्रीपति मिश्र, आदित्यसूरि, गुणाकर आदि, धर्मशास्त्र विषयक ग्रन्थों के प्रणेता हेमाद्रि, शार्ङ्धर, आयाजी भट्ट तथा आयुर्वेद विषयक ग्रन्थों के प्रणेता मदनपाल, शार्ङ्गधर आदि ने अपने-अपने ग्रन्थों का प्रारम्भ सूर्यदेव की स्तुति से किया है। ज्योतिषविषयक ग्रन्थों में सूर्यदेव के मङ्गलाचरण की एक परम्परा सी दिखाई देती है। आदित्यदास के पुत्र तथा पृथुयशस् के पिता ज्योतिषाचार्य वराहमिहिर (छठी शताब्दी ईस्वी) अवन्ती के कपित्थक (कामथा) के निवासी थे इन्होंने अपने ग्रन्थ बृहज्जातक अथवा होराशास्त्र में; अवन्ती के ही खजुरा ग्राम निवासी नारायण पुत्र-श्रीपति पुत्र-गुणाकर ने अपने होरामकरन्द के ग्रन्थारम्भ में; लल्ला के शिष्य नागदेव पुत्र-श्रीपति भट्ट या श्रीपतिमिश्र (1039 ई0) ने रत्नमाला अथवा ज्योतिष्-रत्नमाला नामक ग्रन्थ में; लक्ष्मीनृसिंह भट्ट के पुत्र श्रीपति (11वीं शती) ने रमलसार नामक ग्रन्थ में सूर्यदेव का मङ्गलाचरण किया है।

आदित्यसूरि या भट्ट ने (1200-1325 ई0) कालादर्श नामक ग्रन्थ में सूर्य की स्तुति की है, ये गर्ग परिवार के थे और मालवा कहलाते थे, वीरेश्वर इनके गुरु थे। भास्कराचार्य (1114 ई0) का जन्म सह्याद्रि पर्वत के समीप विज्जडवीड ग्राम में हुआ था, इनके पिता महेश्वर थे, इन्होंने सिद्धान्त शिरोमणि ग्रन्थ के मङ्गलाचरण में सूर्य की स्तुति की है। दैवज्ञ धर्मेश्वर मालवा के थे, इनके पिता रामचन्द्र मालवीय थे। धर्मेश्वर ने केशवकृत-जातक-पद्धति ग्रन्थ पर वासनाभाष्योदाहरण टीका में सूर्य की स्तुति की। त्रिशती या ज्वरत्रिशती या वैद्यवल्लभ ग्रंथ की रचना देवराज पुत्र शार्ङ्धर ने की तथा सूर्यदेव का मङ्गलाचरण किया, ये गुजरात के नागर ब्राह्मण थे। शार्ङ्धर ने आयुर्वेद के ग्रन्थ शार्ङ्धर संहिता की रचना भी की। शङ्करभट्ट के पुत्र नारायणभट्ट के पौत्र तथा रामेश्वर भट्ट के प्रपौत्र नीलकण्ठ भट्ट ने शृंगीवर (सेंगर) परिवार के भरेहा के राजा भगवन्त देव की आज्ञा से भगवन्त-भास्कर या स्मृति-भास्कर ग्रन्थ की रचना की तथा सूर्य देव की स्तुति की। नीलकण्ठ भट्ट रङ्गनाथ, दामोदर, तथा नृसिंह के छोटे भाई थे। नीलकण्ठ के पुत्र शंकर भट्ट ने व्रतार्क ग्रन्थ की रचना की। वृद्ध-यवनजातक ग्रन्थ के ग्रन्थकार मीनराज ने, सिंहसिद्धान्तसिन्धु (तंत्र) के रचयिता शिवानन्द भट्ट पुत्र जगनिवास गोस्वामी ने, देवगिरि के राजा महादेव के पण्डित वोपदेव (सुत-केशव) ने कविकल्पद्रुम के ग्रंथारम्भ में सूर्य देव की स्तुति की है।

मदनविनोद निघण्टु नामक ग्रन्थ के रचयिता मदनपाल (1375 ई0) ने, भल्लटशतक नामक ग्रन्थ के रचयिता भल्लट ने तथा कर्णकुतूहलम् नामक काव्य ग्रन्थ के रचयिता हरिदेवमिश्र (1184 ई0) ने सूर्यदेव का मङ्गलाचरण किया है। दीपप्रकाश ग्रन्थ तन्त्र का है इसके रचयिता प्रेमनिधि पन्थ (1755ई0) ने सूर्य की स्तुति की है।

शुद्धिप्रकाश एवं स्मृतिप्रकाश नामक धर्मशास्त्रीय ग्रन्थ के रचयिता भास्करभट्ट पुत्र आया जी भट्ट शुद्धिप्रकाश एवं ने सूर्य की स्तुति की है। मयूरकवि ने सूर्यशतक अथवा मयूरशतक की रचना की तथा मङ्गलाचरण में सूर्य की स्तुति की है। हेमाद्रि (1260-71) पुत्र वासुदेव, पुत्र-वामन ने देवगिरि के राजा महादेव के अधीन रहकर चतुर्वर्गचिन्तामणि ग्रन्थ की रचना की तथा

उसमें सूर्यदेव का मङ्गलाचरण किया। साहित्यकार धर्मसूरि ने साहित्यरत्नाकर नामक ग्रन्थ में सूर्य का मङ्गलाचरण किया है। इनके अतिरिक्त अन्य अनेक रचनाकारों ने अपने-अपने ग्रन्थों में सूर्यदेव का मङ्गलाचरण किया है। इन मङ्गलाचरणों में सूर्य को जगत् के उद्भव, स्थिति एवं लय के कर्त्ता के रूप में वर्णित किया गया है तथा सूर्य के अनेक रूपों का आलङ्कारिक वर्णन सुन्दर शब्दों में किया गया है। एक ओर जो सूर्य निर्गुण है वहीं दूसरी ओर वह गुणमय संसार के निर्माता है, निरन्तर तप्त रहते हुये भी जगत् के तापत्रय को हरते है, कालात्मक होते हुए भी जगत् को जीवन प्रदान करते है तथा ब्रह्माण्ड सम्पुट का मणि होते हुए भी द्युलोक के मणि है- यो निर्गुणो... (८६४)। सृष्टि की रचना के लिये ब्रह्मा हैं, स्थिति के लिये विष्णु हैं तथा संहार के लिए शिव हैं लेकिन इन तीनों कार्यों को सूर्य अकेले ही करते हैं– सृष्टौ विधात्रे... (८९१)। जिसका रथ एक चक्र का है, सारथि पङ्गु है फिर भी वह सूर्य रथ पर चढ़कर सप्तघोड़ों को संयोजित कर तीनों लोक का भ्रमण करते है- यः पङ्गुसारथि.... (८६७)। जिसके उदय होने पर जगत् प्रतिबोधित होता है, जिसके मध्यस्थिति होने पर जगत् क्रियाओं में लग जाता है तथा जिसके अस्त होने पर जगत् सो जाता है ऐसे तीन भावों से अपने प्रभाव को प्रकट करने वाले सूर्य त्रयीमयतनु हैं- यस्योदये... (८६०)। सूर्य अपनी किरणों से जगत् का हित करते है वह दिनकर है, अंशुमाली है, किरणमाली है और मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाले है। दिवस रूपी शिशु के जन्म के उपलक्ष्य में सूर्य की प्रथम सिन्दूरी किरणें दिशारूपी वधुओं के मुख को मानों सिन्दूरी कर देती है- युष्माकमम्बरमणेः...(८६१)। बन्धूक पुष्प की कान्ति वाले, माणिक्यमौलि वाले, केयूर, हार, कुण्डल धारण करने वाले, रक्तकमल को दोनों हाथों में धारण करने वाले, अभयदान हस्त वाले तथा त्रिनेत्री सूर्य हैं रक्ताब्ज...(८७०)। तीनों जगत् को जो दीपवत् द्योतित करते है ऐसे सविता के तेज को नमस्कार है- दीपवद्...(८२१)।

कवि सूर्य को उदयाचल पर्वत में तिलक के समान, दिग्वनिताओं के स्वर्णकर्णपूर के समान देखता है- उदयाचल... (७९३) जो अन्धकाररूपी हाथी के लिए किरात के समान हैं; प्रतिदिन के सूत्रकर्त्ता हैं; कमलों को खिलाने वाले है; दया के सागर हैं, त्रिभुवन के दीप हैं, कुष्ठादि के नाशक हैं ऐसे सुरनर सेवित सूर्य हमारी रक्षा करें- तिमिर... (८१४)।

गङ्गा—

मङ्गलाचरणों में गङ्गा चिद्रूपा भी है जडरूपा भी है जो सम्पूर्ण जगत् के कष्टों को प्रतिदिन दूर करती है- इयं चिद्रूपा . . . (८९४)। गङ्गा धर्मकी पताका है, भगीरथ की तप हैं- एष धर्मपताकिनी . . .(८९५)। जठर (माता के गर्भ) में निवास के समय अत्यधिक यन्त्रणा होती है, फिर भी कवि माता के जठर से निकल कर पुनः माँ गङ्गा के जठर में निवास की प्रार्थना करता है- जठर . . . (९०६)। नीलकण्ठ दीक्षित ने अपने ग्रन्थ शिवलीलार्णव में गङ्गा से प्रार्थना की है- गङ्गा स्वयं पूत है किन्तु शिव के शिरस्थ होने के कारण पूततर हो गई है और पार्वती के पादाहत

से पूततम हो गई है - पूतं . . . . (912)। उद्भट सागर ने अपने ग्रन्थ उद्भटसागर में गङ्गा का मङ्गलाचरण किया है- विष्णु के पद से आविभूर्ता, शिव के शिरस्था, त्रैलोक्य में विहरण करने वाली, ब्रह्मा के कमण्डलु में स्थित तथा मोक्ष की प्रदात्री मन्दाकिनी हैं- यार्विभूत ...(920)। एक मातृका के स्फुट श्लोक में गङ्गा के स्वरूप का वर्णन मिलता है-श्वेतमकर में बैठी हुई, शुभ्रवर्णा, त्रिनेत्रा, हाथ में कलश धारण किये तथा कमर में दुकूल धारण किये हैं- सितमकर ... (932)। कुण्डरत्नाकर ग्रन्थ के रचयिता विश्वदेव द्विवेदी ने गङ्गा को त्रैलोक्य को पवित्र करने वाली कहा है- चञ्चत् .... (902)। गङ्गा कलिकलुषहरा हैं - दृष्टाः.... (909)। गङ्गा सभी देवो के द्वारा नमस्कृत हैं सुधा-.... सर्वदेवैर्नमस्कृता (933)।

प्रकीर्णानि—

मङ्गलाचरण कभी-कभी ग्रन्थ के वर्ण्य विषय के सूचक भी होते है। इन मङ्गलाचरणों को वस्तुपरक की श्रेणी में रखा गया है। भास्कराचार्य ने अपने ग्रन्थ सिद्धान्तशिरोमणि में विषयगत गणित की वन्दना की है। शृङ्गारपरक ग्रन्थ के मङ्गलाचरण में कान्तामुखप्रशंसा, कान्ताकटाक्ष प्रशंसा का वर्णन मिलता है। आयुर्वेद विषयक ग्रन्थों में अश्विनीकुमार की स्तुति या धन्वन्तरि की स्तुति की गई है। पात्रवन्दना नामक ग्रन्थ में भैरवपात्र की वन्दना की गई है। संस्कृतमाला नामक ग्रन्थ में संस्कृत-वाणी की प्रशंसा है। टीकाकारों ने अपनी टीकाओं में ग्रन्थकार को प्रणाम किया है। जैसे-रामायण की टीका विषमपदव्याख्या में टीकाकार रामभट्ट ने वाल्मीकि की वन्दना की है, भगवद्गीता की टीका सुबोधिनी में टीकाकार श्रीधर ने व्यास को नमस्कार किया है। विषयवस्तु की दृष्टि से 'विधवोद्वाहशंकासमाधि' नामक ग्रन्थ में सती अनसूया और सती अरुन्धति से कशुलता प्राप्ति की कामना की गई है। शिवभक्तविलास की टीका में शिवभक्तों की वन्दना की गई है। इसी प्रकार के अनेकानेक उदाहरण संस्कृत साहित्य में भरे पड़े है।

मङ्गलाचरणों के एकत्र-संग्रह की इस मङ्गल-योजना के प्रेरक एवं निदेशक, विविध शास्त्रज्ञ, भाषाविद्, सहृदयी एवं अत्यन्त विनयी, राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित प्रोफेसर गयाचरण त्रिपाठी, (नेशनल स्कॉलर, इंस्टीट्यूट ऑफ एडवांस स्टडीज़, शिमला) की हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने मुझे इस मङ्गल कार्य के लिए चुना और निरन्तर आवश्यक निर्देश देते रहे।

ग्रन्थ के प्रकाशन में अमूल्य सहयोग के लिए मैं राष्ट्रिय-संस्कृत-संस्थान के कुलपति प्रो0 राधावल्लभ त्रिपाठी का आभार व्यक्त करती हूँ।

ग्रन्थ के सम्पादन के विधि-विज्ञान का श्रेय मेरे पूर्व सहयोगी एवं वर्तमान में इस परिसर के प्राचार्य, वेद, तन्त्र एवं विविध शास्त्रों के मर्मज्ञ विद्वान् डॉ0 प्रकाश पाण्डेय को है। ग्रन्थ के तीनों

भागों के सम्पादन में उनका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। यह अत्यन्त सौभाग्य की बात है कि डॉ0 प्रकाश पाण्डेय प्राचार्यत्वेन ग्रन्थ के इस तृतीय भाग के प्रमुख सम्पादक के रूप में हैं। उनके प्राचार्य पद को ग्रहण करने के पश्चात ही इस ग्रन्थ के प्रकाशन में गति आई और अन्ततः यह ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है।

ग्रन्थ को टाइप करने के लिये श्री विनोद कुमार द्विवेदी एवं श्री ओम प्रकाश शुक्ल को हार्दिक शुभकामनायें। पृष्ठविन्यास के लिए श्री ब्रह्मानन्द मिश्र बधाई के पात्र हैं, मैं उनको आशीर्वाद देती हूँ।

सदैव प्रोत्साहन एवं अनुकूलता के लिए परिवार के सभी लोगों का हृदय से आभार।

मुक्तक रचनाओं के सम्पादन में यद्यपि समस्याएँ आईं किन्तु उनका निदान कर ग्रन्थ को सम्पादित किया गया, त्रुटियों के लिए सहृदयी पाठको से क्षमा चाहूँगी।

कोश साहित्य के इस विलक्षण कोश-ग्रन्थ से भारतीय जनमानस का मङ्गल हो यही हमारी मातृशक्ति से प्रार्थना है।

चैत्रशुक्ल प्रतिपदा
संवत् 2068

मङ्गलकामनाओं सहित

डॉ. बीना मिश्रा

ग्रन्थसङ्केत-सूची

शा०प०	शार्ङ्गधरकृत- शार्ङ्गधरपद्धतिः संपादकः पीटर पीटर्सन, पुनर्मुद्रणम् , देहली -1987
सदुक्ति०	श्रीधरदासकृत-सदुक्तिकर्णामृतम्, संपादकः सुरेशचन्द्र बैनर्जी,कलकत्ता-1965
सुभा०	वल्लभदेवकृत-सुभाषितावलिः संपादकः पीटर पीटर्सन, पुनर्मुद्रणम् , पुणे - 1961
सुभा०सुधा०भा०	शिवदत्त कविरत्न-संगृहीतः सुभाषितसुधा-रत्नभाण्डागारः मुम्बई, संवत् - 1985
सुभा०सुधा०	सायणकृत-सुभाषित-सुधानिधिः, संपादकः के० कृष्णमूर्त्तिः, धारवाड़ - 1968
सूक्तिमु०	भगदत्तजल्हणकृत-सूक्तिमुक्तावली, संपादकः एम्बर कृष्णमाचार्य, बडोदरा - 1938
स्तुतिकु०	जगद्धरकृत-स्तुतिकुसुमाञ्जलिः, अच्युत-ग्रन्थमाला-कार्यालय, काशी-1964

मङ्गलमणिमाला

तृतीयो भागः

(पार्वती-लक्ष्मीः-सरस्वती-देवतात्मकाः मङ्गलाचरणश्लोकाः)

आदिशक्तिः

1 अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां
बह्वीः प्रजाः सृजमानां नमामः।
अजा ये तां जुषमाणां भजन्ते
जहत्येनां भुक्तभोगां नुमस्तान्॥

-साङ्ख्यकारिकाटीकायां साङ्ख्यतत्त्वकौमुद्यां वाचस्पतिमिश्रस्य

2 उत्पत्तिभावविधुरा ननु याऽद्वितीया
सत्त्वात्मिकां च रजसस्तमसोऽप्यभिन्ना।
सृष्टिं करोति महदादिविकारभाजां
तां शाश्वतीमविरतं प्रकृतिं नमामि॥

-सांख्यरहस्ये श्रीरामपाण्डेयस्य

3 ऊर्ध्वरूपाप्यधोरूपा तथावस्थापि मध्यगा।
मध्यरूपापि चान्तस्था या तां वन्दे वरप्रदां॥

-चिद्रूपशक्तिस्तुत्याम्

4 ऐन्द्रजालिकवद्विश्वं रचितं स्वीयमायया।
यया तां भुवनेशानीं चिद्रूपां प्रणाम्यहम्॥

-भागवतस्थितौ नीलकण्ठस्य

5 यामाराध्य पितामहस्त्रिजगतामुत्पत्तिकार्ये विभुः
यां सञ्चिन्त्य जनार्दनस्तनुभृतां सम्पालनां कौशलः।
यां संस्मृत्य महेश्वरः पुरहरः संहारकार्येश्वरः
तामानन्दमयीं नमामि शुभदां सर्वेश्वरीं चिन्मयीम्॥

-आरव्ययामिन्यां जगद्बन्धोः

6 यामाराध्य विरञ्चिरस्य जगतः स्रष्टा हरिः पालकः
संहर्ता गिरिशः स्वयं समभवद् ध्येया च या योगिभिः।
यामाद्यां प्रकृतिं वदन्ति मुनयस्तत्त्वार्थविज्ञाः परां
तां देवीं प्रणमामि विश्वजननीं स्वर्गापवर्गप्रदाम्॥

-शाक्तदर्शने चक्रेश्वरभट्टाचार्यस्य

7 शक्तिर्या परमा साक्षाद्बीजभूताऽखिलस्य च।
वन्दे तामनिशं भक्त्या लकुलीशशिवान्विता॥

-चिद्रूपशक्तिस्तुत्याम्

इच्छा

8 इच्छासंज्ञा च या शक्तिः परिपूर्णशिवोदरा।
वन्दे तामादरेणैव भक्तेष्टफलदायिनीम्॥

-चिद्रूपशक्तिस्तुत्याम्

कुण्डलिनी

9 जयति जगत्त्रयजननी
कुण्डलिनी नामतः पराशक्तिः।
सुरनरवन्दितचरणा
वापीरूपात्मना सततम्॥

-अभिलेखे

गायत्री

10 या वेदत्रयमातृमूर्तिरपरा या भूर्भुवस्स्वः परा
तद् भर्गस्सवितुर्वरेण्यमतुलं देवस्य या शाश्वतम्।
चिच्छक्तिश्च धियः प्रचोदयति नस्तां तत्त्ववर्णात्मिकां
गायत्रीं निजमन्त्रवाचकपरित्रात्रीं सदा धीमहि॥

-सुसंहतभारते पुल्लेलरामचन्द्रुडोः

महती

सामस्त्येनमयैकयापि विततं त्रैलोक्यमेतत्कृतं
कायार्थे निजमूर्त्तिभेदपरमप्रारब्धशक्तिव्रजैः।
मूर्त्तिं प्राप्य यया समग्रमरुतां तेजः समुत्थां परां
हत्वा दैत्यगणानरक्ष्यतजगत् तस्यै महत्यै नमः।।

-देवीभगवतीमाहात्म्ये

मातृका

सा जयत्यसकृद् देवी मातृका लोकविश्रुता।
ययाकारादिभिर्वर्णैर्व्याप्तं सर्वं चराचरम्।।

-अभिलेखे

सावित्री

मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवलच्छायैर्मुखैस्तीक्षणै-
र्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमुकुटां तत्त्वात्मवर्णात्मिकाम्।
सावित्रीं वरदाभयाङ्कुशकुशां शुभ्रं कपालं गुणं
शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्तीं भजे।।

-गायत्रीन्यासे

शुक्लवर्णा समुद्दिष्टा कौशेयवसना तथा
श्वेतैर्विलेपनैर्दिव्यैरलङ्कारैश्च भूषिता।
आदित्यमण्डलस्था च ब्रह्मलोकगताथवा
अक्षसूत्रधरा देवी पद्मासनगता शुभा।।

-सन्ध्याप्रयोगे

पार्वती

अङ्कनिलीनगजाननशङ्काकुलबाहुलेयहृतवसनौ।
सस्मितहरकरकलितौ हिमगिरितनयास्तनौ जयतः।।

-सुभा. सुधा. भा.

अनुकृतमरकतवर्णा शोभितकर्णा कदम्बकुसुमेन।
नखमुखमुखरितवीणा मध्ये क्षीणा शिवा शिवं कुर्यात् ॥

-वैद्यावतंसे लोलिम्बराजस्य

अपर्णेयं सती सेव्या विद्वद्भिरिति मे मतिः।
ययावृतः पुराणोऽपि स्थाणुः सूतेऽमृतं फलम् ॥

-सुभा. सुधा. भा.

अभिमतफलसिद्धिसिद्धमन्त्रावलि बलिजित्परमेष्ठिनोरुपास्ये।
भगवति मदनारिनारि वन्दे निखिलनगाधिपभर्तृदारिके त्वाम्॥

-सदुक्ति. वामदेवस्य

अमलकमलसंस्था लेखनीपुस्तकोद्यत्
करकमलसरोजा कुन्दमन्दारगौरा।
धृतशशधरखण्डोल्लासिकोटीरचूडा
भवतु भव भवानां भङ्गिनीभा सती वः॥

-मन्त्रमञ्जर्यां महेशभट्टसुतसोमनाथस्य

अम्बा जगदवलम्बा शम्बररिपुवैरिशक्तिमञ्जूषा।
मामविलम्बाच्छम्वायुधमुखगीर्वाणवन्दिता पायात् ॥

-सिद्धान्तसञ्चये कृष्णभट्टसुत-नारायणभट्टस्य

अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं
धृतपाशाङ्कुशबाणचापहस्ताम् ।
अणिमादिभिरावृतां मयूखै-
रहमित्येव विभावये भवानीम् ॥

-दुर्गासप्तशत्याम्

अव्यादव्याहतैश्वर्या भव्याभव्यार्त्तिनाशिनी।
दृष्ट्यादृष्ट्या न मन्दन्तु कामाकामारिकामिनी॥

-निर्णयामृते सिद्धलक्ष्मणसूनुअल्लाडनाथसूरिणः

अशेषसुरनायिका-सुखसमूहसंदायिका
मुरारिपरमायिका शुभमतेक्षणं गायिका।
विमूढनरनन्दिका मम नितान्तमाजीविका
सदा भवतु भञ्जिका भयततेः समित्रस्य मे।।

-दुर्गास्तोत्रे जगन्नाथशर्मणः -

आदौ प्रेमकषायिता हरमुखव्यापारलोला शनै-
र्व्रीडाभारविघूर्णिता मुकुलिता धूमोद्गमव्याजतः।
पत्युः संमिलिता दृशा सरभसव्यावर्तनव्याकुला
पार्वत्याः परिणीतिमङ्गलविधौ दृष्टिः शिवायास्तु नः।।

-पार्वतीपरिणये बाणभट्टस्य

आनन्दतुन्दिलपुरन्दरमन्दमुक्त-
मन्दारदामविगलन्मकरन्दसिक्तम् ।
वन्दे गिरीन्द्रतनयाचरणारविन्दम्
योगीन्द्रवृन्दहृदयभ्रमरावलीढम् ।।

-शङ्करीसङ्गीते जयनारायणस्य

आशोणा कोणदेशात् विकसितकुमुदामोदिनी पार्श्वभागा-
न्नीलेन्द्राक्लान्तकान्ता कलिकलुषहरा संसरन्ती च मध्यात् ।
व्योमस्थेव त्रिवेणी त्रिगुणवशकरी देवतेव त्रिरूपा
त्रीन् संस्कारान् धमन्ती जयति नयनयोः कापि कान्तिर्भवान्याः।।

-विश्वनाथकविराजकृत-साहित्यदर्पणस्य टीकायां
-विमलाख्यायां शालिग्रामशास्त्रिणः

आस्ये पूर्णसुधानिधिश्चरणयोः काल्पद्रुमं वैभवं
देहे काञ्चनकान्तता त्वचि पुनर्हैयङ्गवीनं स्वयम् ।
यस्या लोचनयोर्निरुपधि सदोदीतानुकम्पाततिः
सा माता जगतां प्रसादपदवी साक्षान्मुदे स्तादुमा।।

-सुभा. सुधा. भा.

ईर्ष्यारोषप्रसादप्रणतिषु बहुशः स्वर्गगङ्गाजलै-
रामूलं पूरितया तुहिनकरकलारूप्यशुक्त्या रुद्रः।

ज्योत्स्नामुक्ताफलाढ्यं नतमौलिनिहिताभ्यामग्रहस्ताभ्यां द्वाभ्या-
मर्घ्यं शीघ्रमिव ददज्जयति गिरिसुतापादपङ्केरुहयोः॥

-कर्पूरमञ्जर्यां राजशेखरस्य

उत्तप्तहेमरुचिरां रविचन्द्रवह्नि-
नेत्रां धनुश्शरयुताङ्कुशपाशशूलम्।
रम्यैर्भुजैश्च दधतीं शिवशक्तिरूपां
कामेश्वरीं हृदि भजामि धृतेन्दुलेखाम्॥

-दुर्गासप्तशत्याम्

उदारचरिताद्भुता सुरगणैः समस्तैः स्तुता
युता निखिलसद्गुणैर्द्रुतधुताघसङ्घा नृणाम्।
कृपाकलितसेवनोद्यततमात्मभक्तायुता
शुभं तव निरन्तरं कलयतु क्षमाभृतसुता॥

-सिंहसिद्धान्तसिन्धौ शिवानन्दभट्टस्य

उदितदिवाकरदेहां पुरहरवामाङ्गकृतगेहाम्।
परिपूरितभक्तेहां सस्नेहां शैलजां वन्दे॥

-मन्त्रचन्द्रिकायां गोस्वामीजनार्दनस्य

उद्यत् ग्लौगोप्रकाशिन्यसमशररिपोः प्रेक्ष्य भाले स्वबिम्बं
मत्वा सापत्न्यमन्यत्पदमितिरुषितव्यायताधि स्फुरन्ति।
क्रोडाक्रीडत्कुमारोदितकरकमलच्छायमिन्दुं विहर्त्तुं
भूयो दृष्ट्वोल्लसन्ती क्षणमिह भवतां पर्वतात् पार्वती वः॥

-वृत्तरत्नावल्यां मणिराममिश्रस्य

उद्यत्भास्वत्समाभां विजितनवजपामिन्दुखण्डावनद्ध
द्योतद्न्मौलिनेत्रां विविधमणिलसत्कुण्डलां पद्मरागाम्।
हारग्रैवेयकाञ्चीमणिगणवलयाद्यैर्विचित्राम्बराढ्या-
मम्बां पाशाङ्कुशेष्टाभयकरकमलामम्बिकां तां नमामि॥

-मन्त्रमञ्जर्यां महेशभट्टोपाध्यायसुतसोमनाथस्य

उद्वाहारोपिताद्र्राक्षतनिजपदयोः सङ्गतामिन्दुमौला-
वानम्रे यां सुधांशोर्व्यधित किल कलां तूर्णमेवान्नपूर्णाम् ।
सक्तानामक्षतानाममृतदृगनलोपाधितः पक्वभावान्
नानार्थैरन्नपूर्णा प्रणतजनततेः पूर्णतामातनोतु॥

-सुभा. सुधा. भा.

उन्नालनाभिपङ्केरुह इव येनावभाति शम्भुरपि।
जयति पुरुषायितायास्तदाननं शैलकन्यायाः॥

-सुभा. सुधा. भा.

एकः स्तनस्तुङ्गतरः परस्य वार्त्तामिव प्रष्टुमगान्मुखाग्रम् ।
यस्याः प्रियार्द्धस्थितिमुद्वहन्त्याः सा पातु वः पर्वतराजपुत्री॥

-विक्रमाङ्कदेवचरिते विद्यापतिबिल्हणस्य

कणकङ्कणलम्बित चन्दनचुम्बित चारुचतुर्भुजभीमबले
हिमशैलशिखण्डिनि वैरिविखण्डिनि कुण्डलमण्डितगण्डतले।
दलदञ्जनगञ्जिनि भवभयभञ्जिनि मञ्जुलमणिमयमुकुटवरे
पञ्चाननचारिणि शशधरधारिणि जयजय जनति जयन्ति परे॥

-विरुदावल्यां रघुदेवस्य

कर्णस्वर्णविलोलकुण्डलधरमापीनवक्षोरुहां
मुक्ताहारविभूषणां परिलसद्धम्मिल्लसन्मल्लिकाम् ।
लीलालोलितलोचनां शशिमुखामाबद्धकाञ्चीस्त्रजम्
दीव्यन्तीं भुवनेश्वरीमनुदिनं वन्दामहे मातरम् ॥

-पृथ्वीधराचार्यकृत-भुवनेश्वरीमहास्तोत्रस्य टीकायां पद्मनाभस्य

कर्पूरगौरहरिदम्बरडम्बरस्य
वक्षःस्थले निजतनोरभिवीक्ष्य बिम्बम् ।
शङ्कावृताक्षिगलिताविरताश्रुपाता-
त्संबोधिता नगसुता हसितावतान्नः॥

-तारार्चनचन्द्रिकायां राजनाथशर्मणः

कल्याणं चलकुञ्जगुञ्जदलिनी सङ्गीतलोलापि या
कर्णौ काश्यपधर्मसूक्तिकलितौ नान्यत्र दत्ते मनाक् ।
या मातमहसस्त्रयीमयतनोर्मूर्तेव पातिव्रती
सा नो भद्रसमुद्रमाकलयतां दाक्षायणी सन्ततम् ।।

-विधवोद्वाहशङ्कासमाधौ राजारामशास्त्रिणः

कल्याणं नः प्रभूतं कलयतु ललितालापशैलेशबाला-
लीलाजालानुकूला शिशिरकरकलाभानुमालाजटाला।
एषा शेषाहिभूषा परिकलितसुधापूरधारानुकारा
भद्रा मुद्रा विनिद्रा पुरहरणविधौ कापि कारुण्यपूर्णा।।

-भागवतचम्प्वां अभिनवकालिदासस्य

कल्याणावसरे सह स्मरजित कल्याणपीठेऽस्थिता
सख्या पार्श्वगया तदात्वपुलकस्वेदौ निरीक्ष्यात्मनः।
भीता किं पतिभूषणोरगततेस्तन्मौलिगङ्गाम्भसा
सिक्ता किं त्वमितीरिता गिरिसुता नम्रानना पातु वः।।

-कुशकुमुदद्वितीये अतिरात्रयाजिनः

कल्याणोज्ज्वलकार्मुकाञ्चितकरां कान्तेन्दुमन्दस्मिताम्
कारुण्याङ्कुशपञ्चबाणकलितां कन्दर्पदर्पोन्नताम् ।
कामाकर्षणदिव्यपाशभरितां बालार्ककोटिप्रभाम्
कादिक्षान्ततनुत्रयां त्रिनयनां ध्यायेच्छिवां शाम्भवीम् ।।

-पञ्चदशाक्षरीस्तोत्रे

कल्हारोत्पलकैरवाम्बुजलसन्माकन्दसन्मञ्जरीः
कोदण्डं करपङ्कजेन दधतीं पुण्ड्रेक्षुदण्डोद्भवाम् ।
सौवर्णाङ्कुशपाशपाणिमरुणामारक्तवस्त्रावृता-
माताम्राम्बुजसंस्थितां त्रिनयनां चन्द्रार्द्धचूडां भजे।।

-शङ्कराचार्यकृत- सौन्दर्यलहरी व्याख्यायां

कान्ते कृतागसिरुषापरुषं ब्रुवाणा
कुण्ठीकृताथ रसनार्द्धनियंत्रणेन।

मौनेन मानमधिगच्छति या ददातु
सा पार्वती हरिविभक्ततनुः शिवं वः॥

-महार्णवकर्मविपाके मदनपालसुत-मान्धातुः

कामार्त्तं पतिमाकलय्य गिरिजा लाजान् प्रभूतं पयः
क्षिप्त्वान्यत्र जगाम धामधवलं तत्राप्यधावद्धरः।
हस्ताहस्तिमिषात्कपर्द्दपटलैर्भालं बबन्ध प्रभोः
पश्चात्कामकलाकलापविदुषी स्मेरोन्मुखी पातु वः॥

-श्यामार्चनचन्द्रिकायां राजनाथमिश्रस्य

किं देवैः किं जीवैः किं भावैस्तेऽपि येन जीवन्ति।
तव चरणं शरणं मे दरहरणं देवि कान्तिमत्यम्ब॥

-गीतिशतके सुन्दराचार्यकवेः

कुचकलशपयोभिर्मेऽनया साधुसिक्ता
पुरमथनसुरदुस्तम्बमालम्बमाना।
करकिसलयकान्ता मन्दहासप्रसूना
फलतु फलमभीष्टं कल्पवल्ली शिवा नः॥

-बृहद्योगतरङ्गिण्यां त्रिमल्लभट्टस्य

कुन्दसुन्दरमन्दहासविराजिताधरपल्लवा-
मिन्दुबिम्बनिभाननामरविन्दचारुविलोचनाम्।
चन्दनागरुपङ्करूषिततुङ्गपीनपयोधराम्
चन्द्रशेखरवल्लभां प्रणमामि शैलसुतामुमाम्॥

-नवरत्नमालिकास्तोत्रे

केलीकोपदृशासु तन्वति नतिं चन्द्रार्द्धचूडामणौ
चूडाचन्द्रकलानुषङ्गकलया यद्धूयते कोमलम्।
यद्वा कर्कशकासरासुरशिरोनिष्पेषणे निर्दयं
पायाद्वस्तदिदं गिरीन्द्रदुहितुः पादारविन्दद्वयम्॥

-महिषमङ्गले राजराजवर्मणः

कैलासालयभाललोचनरुचा निर्वर्तितालक्त-
व्यक्तिःपादनखद्युतिर्गिरिभुवः सा वः सदा त्रायताम्।
स्पर्धाबन्धसमृद्धयेव सुदृढं रूढा यया नेत्रयोः
कान्तिः कोकनदानुकारसरसा सद्यः समुत्सार्यते॥

-सुभा. सुधा. भा.

क्रीडासरोषगिरिजाचरणारविन्दं
वन्दे यदग्रपतिता हरिणाङ्कलेखा।
कामापहस्तितवृषध्वजधैर्यलक्ष्मी-
पातावभग्नवलयार्द्धनिभा विभाति॥

-सूक्तिमु.

खर्वन्ति त्रिदशेश्वरस्य ललनाः खिद्यन्ति नागाङ्गना
लज्जन्ते च समस्त दैत्यवनिताः सौन्दर्यदर्पोद्धुराः।
यद्दृष्ट्वा कमलाकराब्जविधृतप्रोत्फुल्लकल्हारजि-
द्देव्यास्तच्चरणारविन्दयुगलं भूयाद् भवत्भूतये॥

-अनूपविवेके अनूपसिंहस्य

गङ्गे विमुञ्च रुषमेष नमेऽपराधः
सन्ध्यान्नमाम्यहमशेषजनाभिवन्द्याम्।
तत्स्वप्नतायितमिदं स्वपतेर्निशम्य
कण्ठश्लथीकृतभुजा गिरिजा पुनातु॥

-काव्यप्रकाशस्य टीकायां मधुमतीत्याख्यायां रवेः

गणपतिगुरोर्वक्रश्चूडाशशाङ्ककलाङ्कुरः
स्फुटफणिफणारत्नच्छायाछटाछुरणारुणः।
गिरिपतिसुतासंसक्तेर्ष्याविलासकचग्रह-
च्युतनखशिखालेखःकान्तस्तनोतु सुखानि वः॥

-सुवृत्ततिलके क्षेमेन्द्रस्य

गणेशमुखचुम्बिनी सुरकदम्बकादम्बिनी
दयारसतरङ्गिणी दनुजसङ्घसंहारिणी।

अघव्रजविडम्बिनी हरकुटुम्बिनी सन्ततं
भवत्वमरवन्दिता मम हृदन्तरालम्बिनी।।

-रसतरङ्गिण्यां सदानन्दशर्मणः

गिरीन्द्रदुहितुर्नमत् सुरवरावतंसीभवत् ।
पदाम्बुजरजःकणाकलिततीक्ष्णधीसम्पदा।।

-वाधगादाधरीटीकायां गदाधरभट्टाचार्यस्य

चञ्चन्मौक्तिकहेममण्डनयुता माताऽतिरक्ताम्बरा
तन्वङ्गी नयनत्रयातिरुचिरा बालार्कवद्भासुरा।
या दिव्याङ्कुशपाशभूषितकरा देवी सदा भीतिहा
चित्तस्था भुवनेश्वरी भवतु नः सेयं मुदे सर्वदा।।

-पृथ्वीधराचार्यकृत- भुवनेश्वरीमहासत्रोतस्य टीकायां पद्मनाभस्य

चतुर्भुजे चन्द्रकलावतंसे
कुचोन्नते कुङ्कुमरागशोणे।
पुण्ड्रेक्षुपाशाङ्कुशपुष्पबाण-
हस्ते नमस्ते जगदेकमातः।।

-ललिताख्याने

चर्मालम्बिदुकूलवल्लरिचिताभस्मावधूतस्तनो-
न्मीलच्चन्दनमुत्तरीयभुजगव्यासक्तमुक्तावलि।
मुग्धाया अपि शैलराजदुहितुर्गङ्गाधरालिङ्गनं
गाढप्रेमरसानुबन्धनिकषग्रावा शिवायास्तु वः।।

-सदुक्ति. जलचन्द्रस्य

चुम्बितमन्मथशासनललाटनयना गिरीन्द्रजा जयति।
रतिरिव वैरावेशात्तदभिगलितुमभिमुखीभूता।।

-आर्यासप्तशत्यां विश्वेश्वरस्य

जगदम्ब विलम्बलम्बताहरहेरम्बवरालम्बदे।
तरुणां करुणां मयीश्वरे कुरु रोलम्बकदम्बसेविते।।

-चण्डीविलासे रुद्रशर्मन् त्रिपाठिन :

जङ्घाकाण्डोरुनालो नखकिरणलसत्केसरालीकरालः
प्रत्यग्रालक्ताभाप्रसरकिसलयो मञ्जुमञ्जीरभृङ्गः।
भर्तुर्नृत्तानुकारे जयति निजतनुस्वच्छलावण्यवापीं
सम्भूताम्भोजशोभां विदधदभिनवो दण्डपादो भवान्याः।।

-सुभा. सुधा. भा.

जन्मान्तरीणरमणस्याङ्गसङ्गसमुत्सुका।
सलज्जा चान्तिके सख्याः पातु नः पार्वती सदा।।

-सुभा. सुधा. भा.

जयति रतिविलासे सागसः शङ्करस्य
स्रमसनिगडनिबन्धः काञ्चनः शैलपुत्र्याः।
गरलकवलकालीभूतभूतेशकण्ठ-
स्थलजलधरविद्युद्विभ्रमा बाहुबल्ली।।

-वादिविनोदे शङ्करमिश्रस्य

ज्याकृष्टिबद्धखटकामुखपाणिपृष्ठ-
प्रेङ्खन्नखांशुचयसंवलितोऽम्बिकायाः।
त्वां पातु मञ्जरितपल्लवकर्णपूर-
लोभभ्रमद्भ्रमरविभ्रमभृत्कटाक्षः।।

-अमरुकशतके अमरुकस्य

ज्योत्स्नासन्दोहरूपा प्रमुदितवदना प्रस्फुटत्कान्तिकान्ता
भक्तान्तस्था पुरस्तान्नयनविषयतामानयन्ती स्वरूपम्।
देवीभिः सेव्यमाना परभयहरणप्रेक्षणा प्रेक्षणीया
कारुण्याधारभूता मम भवतु मुदे सर्वदा सा भवानी।।

-सुभा. सुधा. भा.

तत्पादपद्मयुगलं गिरिकन्यकायाः
लोकातिशायिचरितं भवतः पुनातु।

उल्लासयन्ति यदिदं मुहुरीश्वरस्य
चूडानिशाकरकिशोरमयूखलेखाः॥

-लीलावतीवीथ्यां रामपाणिवादस्य

तपस्वीकांगतोऽवस्थामिति स्मेराननोत्सुकौ।
गिरिजायाः कुचौ वन्दे भवभूतिसितराननौ॥

-सारसङ्ग्रहे शम्भुदासपाण्डितस्य

दिगम्बरधरश्श्रिताज्वलनभस्मधारी महा-
भुजङ्गभुजकङ्कणो गरलभक्षणोऽलक्षणः।
जगत्पतिपदङ्गतोऽयमपि पाणिमस्याः स्पृशन्
भजे भुवनसुन्दरीं सततमन्नपूर्णामिमाम् ॥

-बृहद्दैवज्ञरञ्जनस्य टीकायां श्रीधरीत्याख्यायां

दुरितनिचयहन्त्रीं सर्वसिद्धिप्रदात्री -
मचलनृपहिमाद्रेः कन्यकां हेमवर्णाम् ।
हृदयकमलकोषे सन्निधाय प्रयत्नात्
सुमतिविततिहेतोः सुन्दरीं प्रार्थयामि॥

-चन्द्रग्रहणाधिकारटीकायां नीलकण्ठस्य

देवश्रीगुरुकल्पशाखि विलसद्धस्तोल्लसच्छाखया
या लक्ष्मीः शिवयोगिना पुरभिदा या चोत्तमाङ्गे धृता।
साकारुण्यसुधार्णवान्तरगता व्योमान्तरालम्बिनी
लोकेऽस्मिन्नुपकारिणी परशिवा काचित्कला वर्त्तते॥

-प्रेमरसायने प्रेमविभागखण्डे विश्वनाथपाण्डितस्य

देवसमूहैरीड्यां देवानां कार्यसिद्धये जाताम् ।
भुवनेशीं गिरिकन्यां नमामि योगीश्वरीं बालाम् ॥

-कृष्णधूर्जटिदीक्षितकृत-सिद्धान्तचन्द्रोदयमातृकायां स्फुटश्लोकः

देवीं सुवर्णरुचिरां परिभाव्यमान -
भूषाविभाऽतिशयतां प्रकृतेर्दधानाम् ।

कामं द्विषन्तमपि कामवशं नयन्तीं
स्मेराननां भगवतीं शिरसा नमामि।।

-सुभा. सुधा. भा.

देव्यास्तदस्तु कुचचूचुकमिन्दुमौलि-
देहार्द्धबद्धवसतेरमृताप्तये वः।
अभ्येति यन्मदनपूज्यसुवर्णपीठ-
पृष्ठप्रतिष्ठितहरिन्मणिलिङ्गभङ्गिम्।

-स्तुतिकु. जगद्धरस्य

धात्रादीनां जनित्री सकलतनुभृतां नेत्रगात्रप्रदात्री
नेत्री भूतेन्दुवह्निद्युमणिपरशिवोत्सङ्गरङ्गे विहर्त्री।
धात्री नीरामलात्मत्रिभुवनजननत्राणसंहारकर्त्री
सा भूभृद्राजपुत्री भवतु मम सदा सर्वसम्पद् विधात्री।।

-कुवलयानन्दमातृकायां स्फुटश्लोकः

नमामि यामिनीनाथलेखालङ्कृतकुन्तलाम्।
भवानीं भवसन्तापनिर्वापणसुधानदीन् ।।

-न्यायमञ्जर्यां जयन्तभट्टस्य

नवनवरससारैर्नाट्यसंगीततालै-
रभिनयकुशला सा चाद्भुतोल्लासभावा।
दिनकररुचिभासा शोभिताष्टादशाङ्गैः
करणगतिविदग्धैर्नर्तितेशप्रियाव्यात् ।।

-बालरामभरते बालरामवर्मणः

नादत्ते फणिकङ्कणप्रणयिनं नीवीनिवेशे करं
नो चूर्णैरुपहन्ति भालनयनज्योतिर्मयीं दीपिकाम्।
धत्ते चर्महरेण मुक्तमपि न द्वैपं भयादित्यसौ
पायाद्वो नवमोहनव्यतिकरव्रीडावती पार्वती।।

-सदुक्ति. आचार्यगोपीकस्य

नानाशास्त्रास्त्रभीमा दनुजदलदमा कालमेघाभिरामा
प्रेमोच्छ्रासेन वामा पशुपतिनयनाकेकरालोककामा।
कैवल्योल्लाससीमा भवगहनगतक्लेशनाशिप्रणामा
काचित् कैलासधामा कलयतु कुशलं कामिनी कान्तकामा।।

-उद्भटसागरे उद्भटसागरस्य

नित्यं वैरिप्रशान्त्यै नमदमरलसच्छेखराबद्धराज-
न्मान्दारोद्धूतपुष्पावलिरचितपदाम्भोजयुग्माम्बिकायाः।
देवेन्द्राम्भोजयोनिद्युमणिहरिचमूदुर्जयः सौनिभाख्यो
दैत्यो यच्छातशूलाहननिपतितः सास्तु नित्यं श्रिये नः।।

-कातीयगृह्यकारिकायां रेणुकस्य

नित्यादिसौख्यपदवीप्रदकीर्त्तिजाला-
मालाधराम्मणिगणाभरणम्महेशीम् ।
श्रीस्थानतीर्थतटमन्दिरसल्लताङ्गी-
मानौमि लोकजननीं चिरभाग्यभूत्यै।।

-कन्याक्षेत्रमाहात्म्ये

निर्द्दग्धोप्यत्रनेत्रज्वलनकवलनैस्तावकीनैर्म्मनोभू-
र्भूयो जन्मानुयाने गमित इति रुषारुक्षितेन त्वमेयम् ।
किं भोः शम्भो रणाम्भोनिधिमधिशयिता त्यज्यते लज्यते नो
शृङ्गीति प्रोक्तिकारी रिपुरशमियया सावतात्पार्वती वः।।

- अभिलेखे

निर्यद्रेणुपरम्परापरिमलव्यालोलभृङ्गाङ्गना-
झङ्कारैकमनोहरं सुमशरं संधाय सम्मोहनम् ।
कर्षन्तीमिदमैक्षवं धनुरिमामापक्वबिम्बाधरा-
मम्बामम्बुरुहासनादिभजनारम्भामहं भावये।।

-शारदातिलकभाणे शङ्करस्य

नेत्रोत्थवह्निकणदग्धतनुं सुमेषुं
नैत्रेरजीवयदथोतमनङ्गरूपम्।

या योधयन्निजवरेण शिवोऽपि तुष्टः
सा शर्वपट्टमहिषी मम सौख्यदा स्यात्॥

-शक्तितत्त्वविमर्शिनीटीकायां नीलकण्ठस्य

पतिः सतीत्वादिगुणैरतीव
प्रीतिः स्वदेहार्द्धमदत्त यस्यै।
सात्यन्तसौभाग्यनिधिर्ददातु
मनोरथान् पर्वतराजपुत्री॥

-अभिलेखे

पादाग्रस्थितया मुहुः स्तनभरेणानीतया नम्रतां
शम्भोः सस्पृहलोचनत्रयपथं यान्त्या तदाराधने।
ह्रीमत्या शिरसीहितः सपुलकस्वेदोद्गमोत्कम्पया
विश्लिष्टान्कुसुमाञ्जलिर्गिरिजया क्षिप्तोऽन्तरे पातु वः॥

-रत्नावल्यां श्रीहर्षदेवस्य

पार्वतीमोषधमेकामपर्णां मृगयामहे।
शूली हालाहलं पीत्वा यया मृत्युञ्जयोऽभवत् ॥

-सुभा. सुधा. भा.

पार्वतीं मातरं वन्दे स्नानोद्वर्तनपिण्डतः।
गणेशः श्रेयसे पुंसा यया विघ्नेश्वरः कृतः॥

-डुग्गरस्तुतौ शुकदेवशास्त्रिणः

पितरुपनय मह्यन्नाकनद्या मृणालं
न हि तनय मृणालः किन्त्वसौ सर्पराजः।
इति रुदति गणेशे स्मेरवक्त्रे च शम्भौ
गिरिपतितनयायाः पातु कौतूहलं वः॥

- कीर्त्तिलतायां विद्यापतेः

पीयूषांशुकलामनोज्ञमुकुटां शैवालतुल्यालकां
भालश्रीविजिताष्टमीशशिधरां नीलारविन्देक्षणाम् ।

चापं बाणगुणाङ्कुशान्मृदुतरैस्संबिभ्रतीं बाहुभिः
प्रत्यङ्गं सुमनोरमामरुणभां वन्दे गिरीन्द्रात्मजाम् ।।

-मन्त्रचन्द्रिकायां गोस्वामीजनार्दनस्य

प्रव्यक्तरक्तरुगलक्तनवातपश्री-
विश्रान्तितोनखमयूखमरन्दगर्भम् ।
वन्दे पुरन्दरवधूकबरीनितम्ब-
रोलम्ब चारुचरणाम्बुजमम्बिकायाः।।

-मथुरानिरुद्धनाटके

प्रह्वप्राचीनबर्हिप्रमुखसुरवरानीककोटीरकोटि-
शिलष्टस्पष्टेन्द्रनीलामलमणिरुचिरश्रेणिजुष्टं कृषीष्ट।
श्रीपादाम्भोजयुग्मं नखमुखविलसद्रश्मिकिञ्जल्कपुञ्जं
सिञ्जन्मज्जीरहंसीमुखरितमनिशं मङ्गलं वो भवान्याः।।

-त्रिपुरासारसमुच्चये नागभट्टस्य

बन्धूककाञ्चननिभं रुचिराक्षमालां
पाशाङ्कुशौ च वरदां निजबाहुदण्डैः।
बिभ्राणमिन्दुशकलाभरणं त्रिनेत्र-
मर्द्धाम्बिकेशमनिशं वपुराश्रयामि।।

-दुर्गासप्तशत्यां

बन्धूकबन्धूभवदाननाया भासैवदासीकृतशोणसिन्धोः।
सानन्दवृन्दारकवन्दिताङ्घ्रेर्भासः शिवाया वयमेवदासाः।।

-सप्तशत्यङ्गषट्कविवरणाख्यायां टीकायां नीलकण्ठभट्टस्य

बालार्कमण्डलाभासां चतुर्बाहुं त्रिलोचनाम् ।
पाशाङ्कुशवराभीतिर्धारयन्तीं शिवां भजे।।

-दुर्गासप्तशत्यां

ब्रह्माजेशपुरन्दरादिविविधानीकस्फुरच्छेखरा
शिष्ट-स्पृष्टमणिप्रदीपनिकरैर्नीराजितांघ्रिद्वये।

संसारानलदह्यमानमनिशं कारुण्यवारांनिधे
मातर्मां शरणागतं शरणदे दीनं समालोकय ॥

-मानसपूजने चतुर्भुजाचार्यसुत-विजयरामाचार्यस्य

ब्रह्मादयोऽपि यदपाङ्गतरङ्गभङ्ग्या
सृष्टिस्थितिप्रलयकारणतां व्रजन्ति।
लावण्यवारिनिधिवीचिपरिप्लुतायै
तस्यै नमोऽस्तु सततं हरवल्लभायै॥

-सुभा.सुधा.भा.

ब्रह्मेन्द्रादित्रिदशमकुटीपद्मरागप्रकाश-
प्रातः सन्ध्यासमधिगमनस्मेरपादाम्बुजश्रीः।
श्रद्धापूर्णप्रणतजनताकामसन्तानवल्ली
नित्यानन्दं दिशतु भवतां नन्दिनी चन्द्रमौलेः॥

-कालीकेलियात्राभाणे

भक्त्यानम्रविरिञ्चिमौलिविलसन्मन्दारमालावली-
निर्यातैर्मकरन्दबिन्दुविसरैः स्नाताङ्घ्रिपीठान्तिका।
ध्यानैरेव निषेविता गुरुतरैरिन्द्रादिवृन्दारकैः
शम्भोरम्बुजलोचना भगवती देवी शिवायास्तु नः॥

-श्रीतत्त्वचिन्तामणौ पूर्णानन्दस्य

भवजलधिजलावलम्बयष्टिर्महिषमहासुरशैलवज्रधारा।
हरहृदयतडागराजहंसी दिशतु शिवं भवतश्चिरं भवानी॥

-सदुक्ति. भगीरथदत्तस्य

भिक्षुः क्वास्ति बलेर्मखे पशुपतिः किं नास्त्यसौ गोकुले
मुग्धे पन्नगभूषणः सखि सदा शेते च तस्योपरि।
आर्ये मुञ्च विषादमाशु कमले नाहं प्रकृत्या चला
चेत्थं तां कमलां पराजितवती पायादुमा सर्वदा॥

-सुभा. सुधा. भा.

भूतिधिया निशि लिप्तं कज्जलमङ्गे महेशेन।
प्रातर्वीक्ष्य विरूपं मुहुर्हसति साम्बिका जयति॥

-कामकन्दले कृष्णपण्डितस्य

भूयोऽपि सा जयति या शशिशेखरस्य
देहार्द्धमुद्वहति भक्ततया हरस्य।
या भक्तवत्सलतया प्रविभर्त्ति लोकान्
मातेव स्वीयसुतप्रेमविवृद्धस्नेहा॥

-अभिलेखे

भ्रूलास्योत्सविनी सविभ्रमगतिर्मूर्च्छन्नितम्बस्थली
सङ्कीर्णे वयसि स्मितार्द्रफणितिः सा पार्वती पातु वः।
यस्याः कर्णतटं दृशावगमता तूर्णं तदन्तःपथे
गत्वा द्रष्टुमिवेश्वरं हृदि कृताधिष्ठानमुत्कण्ठितम् ॥

-सूक्तिमु. मदनस्य

मध्ये बद्धमयूरपिच्छनिवहां श्यामां प्रवालाधरां
गुञ्जाहारधरां धनुः शरकरां नीलाम्बराडम्बराम् ।
शृङ्गीवादनतत्परां सुनयनां मूर्द्धालकैर्बर्बरै-
र्भिल्लीवेषधरां नमामि शम्बरीं त्वामेव वीरां पराम् ॥

-मन्त्रमञ्जर्यां महेशभट्टसुतसोमनाथस्य

मन्दस्मितोल्लसितमिन्दुकलावतंस-
मिन्दीवरोदरसहोदरनेत्रशोभि।
हेतुस्त्रिलोकविभवस्य नवेन्दुमौले-
रन्तःपुरं दिशतु मङ्गलमादराद्वः॥

-शारदातिलके लक्ष्मणार्चायस्य

मातर्ममातितमसावृतमाद्यविद्ये
चेतोऽतिकुत्सितचिताऽञ्चितमीशहृद्ये।
नान्ये स्पृशन्तु घृणयन्तु सुराः शरण्ये
नोपेक्ष्यमत्र नटनं तव दक्षकन्ये॥

-तत्त्वसारे राखालदासन्यायरत्नस्य

मातस्तातजटासु किं सुरसरित्किं शेखरे चन्द्रमाः
किं भाले हुतभुग्लुठत्युरसि किं नागधिपः किं कटौ।
कृत्तिः किं जघनद्वयान्तरगतं यद्दीर्घमालम्बते
श्रुत्वा पुत्रवचोऽम्बिका स्मितमुखी लज्जावती पातु वः।।

-सुभा. सुधा. भा.

माता भवानी च पिता भवानी बन्धुर्भवानी भगिनी भवानी।
भूतं च भव्यं च भवेद्भवानी तस्माद् भवानीशरणं प्रपद्ये।।

-रामाश्रमकृत-देवीमाहात्म्यटीका-मातृकायां-स्फुटश्लोकः

मानापनोदनविनोदनते गिरीशे
भासेव संकुचितयोरुचितं तदिन्दोः।
भेत्तुं भवानिशचितं दुरितं भवानि
नम्री भवामि घनमंह्रिसरोजयोस्ते।।

-खण्डनखण्डखाद्ये श्रीहर्षस्य

मा भाङ्क्षीर्विभ्रमं भ्रूरधर विधुरता केयमास्यास्य रागं
पाणे प्राण्येव नायं कलयसि कलहश्रद्धया किं त्रिशूलम् ।
इत्युद्यत्कोपकेतून्प्रकृतिमवयवान्प्रापयन्त्येव देव्या
न्यस्तो वो मूर्ध्नि मुष्यान्मरुदसुहृदसून्संहरन्नङ्घ्रिरंहः।।

-चण्डीशतके बाणभट्टस्य

मामन्तरायात्प्रणतं भवानि त्रायस्व ते पादसरोजयुग्मम् ।
कूजन्महाहंसकहंसशोभि विद्वन्महाभृङ्गगणैः परीतम् ।।

-तत्त्वचिन्तामणिटीकायां महेशठाकुरस्य

मृणालव्यालवलया वेणीबन्धकपर्दिनी।
हरानुकारिणी पातु लीलया पार्वती जगत् ।।

-सुभा. सुधा. भा.

मृदुं वाणीं लज्जां श्रियमपि दधानां मणिलसत् -
किरीटेन्दुद्योतां मणिपटलमत्सव्यचरणाम् ।

त्रिनेत्रां स्मेरास्यां समणिचषकाब्जोद्यतकरां
जपारक्तां भक्ताभजत भुवनेशीं पृथकुचाम् ।।

-अभिलेखे

मोक्षदात्रीं जगद्धात्रीं कालरात्रीं सुरद्विषाम् ।
भक्तपात्रीं विधात्रीं च वन्देऽहं शङ्करप्रियाम् ।।

-श्रुतबोधस्य टीकायां मनोरमाख्यायां लक्ष्मीनारायणशर्मणः

यत्पादाम्बुरुहद्वन्द्वमिलिन्दीकृतमानसाः।
भक्ता भवन्ति सिद्धीनां सदनं तामुमां भजे।।

-उदाहरणचन्द्रिकायां वैद्यनाथस्य

यत्रास्ति भोगो न च तत्र मोक्षो
यत्रास्ति मोक्षो न च तत्र भोगः।
उमापदाम्भोजयुगार्चने तु
भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव।।

-उद्भटसागरे पूर्णचन्द्रस्य

यदीयचरणाम्भोजस्मर्तुः सकलसिद्धयः।
भवन्ति वशवर्तिन्यः सिद्धेशीं तामहं भजे।।

-भास्कराचार्यकृत-बीजगणितस्य टीकायां बीजाङ्कुराख्यायां कृष्णदैवज्ञस्य

या कण्ठनालकवलीकृतकालकूट-
च्छायेव विस्फुरति वक्षसि चन्द्रमौलेः।
सा मे समस्तदुरितानि कटाक्षमाला
तुच्छीकरोतु तुहिनाचलकन्यकायाः।।

-सिद्धान्तचन्द्रिकाव्याख्यायां गङ्गाधरसुधियः

यानुद्धूत्ययतीश्वरः सिकतिला यैर्मौलिमन्दाकिनी
यैर्बालेन्दुकणार्द्रकेतकदलोत्सङ्गे परागायितम् ।
यैः कैलासविलासकाननतटीकङ्केल्लिपुष्पोद्गम-
क्रीडाकार्मणमद्रिजाचरणयोस्ते रेणवः पान्तु वः।।

-सदुक्ति. उमापतिधरस्य

यामर्चन्त्यनिशं सुरासुरगणा ध्यायन्ति यां योगिनो
व्यक्ताव्यक्तगिरस्तुवन्ति सततं यां केशवेशादयः।
यां ज्ञात्वा मुनयो व्रजन्ति परमं स्थानं रमाचिन्तितं
तां विद्वज्जनवन्दितां भगवतीं भक्त्याहमीशां भजे।।

-नवग्रहपद्धत्यां

या वाचः साधुतायास्त्रिभुवनभुवनस्याङ्गनं सञ्चरन्ती
वामांसासक्तवीणाध्वनिगणविलसन्मूर्च्छनानन्दपूर्णा।
सन्तोषोल्लासिमौलिः स्फुरदमलमणिः स्वर्णताटङ्कभूषा
विभ्राजत्सुस्मितास्या भवतु भवमुदे भव्यभाग्यम्भवानी।।

-सुभा. सुधा. भा.

योगेश्वरी वो भवतु प्रसन्ना
देवी स्वभावानवमप्रभावा।
षट्कर्मसंसाधनलीनचित्तै-
र्योगीन्द्रवृन्दैरभिवन्दितांह्रिः।।

-अभिलेखे

यः पाटीरजहृद्यसौरभमसौ शुण्डाग्रमङ्ग्यामुहु-
र्घ्रातुं पातुमुपैक्षत स्तनयुगं चैलाञ्चलान्तर्गतः।
चाञ्चल्यं तदवेक्ष्य तं गजमुखं सन्धारयन्त्युत्थिता
चुम्बन्ती मुखपङ्कजं गिरिसुता माङ्गल्यमाविष्क्रियात् ।।

-राधाविलासे हरिहरदत्तशर्मणः

रचयति सहसा यच्चित्रमेतत् प्रपञ्चं
प्रशमयति च तद्वत् केनचित्कौतुकेन।
अविदितमपरैस्तच्चण्डमुण्डादिनाना
दनुजदलनदक्षं शर्व सर्वस्वमव्यात् ।।

-हरिविलासे

रमासमासेवितपादपद्मां
उमाममेयाममितप्रभावाम् ।
कुमारहेरम्बसमाश्रिताङ्कां
नमामि देवीं हिमवत्तनूजाम्॥

-कविकर्णरसायने षडक्षरीशस्य

रहस्यक्षद्यूते विजितमवलोक्य त्रिनयं
प्रतिज्ञारक्षायै पुरहर सकामाङ्कररतिम् ।
उदीर्यैवं तस्मिन्नथ च परिरब्धुं व्यवसिते
हसन्ती रुद्राणी विशदयतु भद्राणि भवताम् ॥

-कान्तिमतीपरिणये चोक्कनाथस्य

लग्नः केलिकचग्रहश्लथजटालम्बेन निद्रान्तरे
मुद्राङ्कः शितिकन्धरेन्दुशकलेनान्तःकपोलस्थलम् ।
पार्वत्या नखलक्ष्मशङ्कितसखीनर्मस्मितव्रीडया
प्रोन्मृष्टः करपल्लवेन कुटिलाताम्रच्छविः पातु वः॥

-सुभा. सुधा. भा.

लाक्षारागं हरति शिखराज्जाह्नवीवारि येषां
ये तत्वन्ति स्रजमधिजटामण्डलं मालतीनाम् ।
प्रत्युत्सर्पद्विमलकिरणैर्यैस्तिरोधानमिन्दो-
र्देव्याः स्थाणौ चरणपतिते ते नखाः पान्तु विश्वम् ॥

-सदुक्तिः

लीलानतेन गुरुणा शशिशेखरेण
लज्जीकृतां श्रियमहं बहुशो भवान्याः।
वन्दे तुरीयफलदामथवाऽऽशु तस्याः
संकोचितां चपलपादसरोजशोभाम् ॥

-गङ्गेशोपाध्यायकृत-सिंहव्याघ्रलक्षणरहस्यस्य विवृत्तौ वामाचरणभट्टाचार्यस्य

वक्षोजकुम्भयुगनम्रशरीरवल्लीं
ब्रह्मादिमौलिमणिमण्डितपादपद्माम् ।

वक्त्रप्रभालहरिनिर्जितपूर्णचद्रां
वन्दे गिरीन्द्रतनयां जगदेकरम्याम् ।।

-तत्त्वचिन्तामण्यालोकदर्पणे जयदेवस्य

वक्षःपीठे निरीक्ष्य स्फटिकमणिशिलामण्डलस्वच्छभासि
स्वां छायां साभ्यसूया त्वमियमिति मुहुः सत्यमाश्वासि तापि।
वामे मे दक्षिणेस्याः श्रवसि कुवलयं नाहमित्यालपन्ती
दन्ताश्लेषा सहासं मदनविजयिना पार्वती वः पुनातु।।

-सुभा. सुधा. भा.

वशाब्रह्मस्तम्भां जितखलकदम्बां स्मरजित-
कृतालम्बामम्बां गुणसमुदयैराननरुचाम् ।
जितेन्दुद्युद्बिम्बां तनुधृतकदम्बाच्छकुसुमा-
मिमामम्बामम्बात्रिमितभुवनानां भज मनः।।

-अमरकाव्ये रणछोड़भट्टस्य

वहन्ती सिन्दूरं प्रबलकबरीभारतिमिर-
त्विषां वृन्दैर्बन्दीकृतमिव नवीनार्ककिरणम् ।
तनोतु क्षेमं नस्तव वन्दनसौन्दर्यलहरी-
परीवाहस्त्रोतः सरणिरिव सीमन्तसरणिः।।

-सुभा. सुधा. भा.

वागुद्भूता पराशक्तिर्या चिद्रूपा शिवाभिधा।
वन्दे तामनिशं भक्त्या श्रीकण्ठार्द्धशरीरिणीम् ।।

-चिद्रूपशक्तिस्तुत्यां

विद्राणे रुद्रवृन्दे सवितरि तरले वज्रिणि ध्वस्तवज्रे
जाताशङ्के शशाङ्के विरमति मरुतित्यक्तवैरे कुबेरे।
वैकुण्ठे कुण्ठितास्त्रे महिषमतिरुषं पौरुषोपघ्ननिघ्नं
निर्विघ्नं निघ्नती वः शमयतु दुरितुं भूरिभावा भवानी।।

-शा.प. बाणभट्टस्य

विरिञ्चिनारायणवन्दनीयो
मानं विनेतुं गिरिशोऽपि यस्याः।
कृपाकटाक्षेण निरीक्षणानि
व्यपेक्षते साऽवतु वो भवानी।।

-बृहत्स्तोत्ररत्नाकरे

वृन्दारकासुरगणैरचर्चितांह्रियुगाम्बुजा-
देवी मलयभूपालं सा पायादाम्रलोहिता।।

-अभिलेख

वेणीबन्धकपर्दिनी सिततनुः श्रीखण्डपांशूत्करैः
केतक्येकदलेन्दुभृद्विलसता व्यालोपवीतिन्यपि।
प्राक्पाणिग्रहणाद्विनोदरभसा सख्याः पुरो लीलया
कुर्वाणानुकृतिं हरस्य दिशतु श्रेयांसि वः पार्वती।।

-सुभा. सुधा. भा.

व्याजस्वीकृतसेवया विधुरभूदग्रेसरः श्रीमतां
मानव्याहतिकैतवावनमनादीशस्त्रिलोकीपतिः।
संभिन्नाब्जकुलप्रसूतिविभवादम्भोजमब्जालयो
यस्य श्रीगिरिजापदाम्बुजयुगं तत् स्यादभीष्टप्रदम्।।

-गदाधरभट्टाचार्यकृत-व्युत्पत्तिवादस्य टीकायां गूढार्थतत्त्वालोकाख्यायां धर्मदत्तस्य

शम्भोरानन्दमूर्त्तेरपि सततसदानन्दविस्फूर्त्तिकीर्त्तेः
प्राणानां पुण्यतायाः प्रणय इव वपुष्मावनानां निदानम् ।
लीलालावण्यशीलामृतरससरसीचारुकारुण्यपूर्णा
निस्त्रैगुण्याऽपि गुण्या वितरतु भविकं राजराजेश्वरी वः।।

-जानराजचम्प्वां कृष्णदत्तस्य

शम्याकस्य रजः प्रमृज्य चरणे दत्तो मया यावको
निर्मृज्य स्तनकुड्मले च भसितं पत्राङ्कुरो निर्मितः।
स्वच्छन्दं विहरेति जल्पितगिरं साकूतमालीजनं
दृष्ट्या केवलमाघ्नती कुटिलया दाक्षायणी पातु वः।।

-सुभा. सुधा. भा.

शर्वाधरमालिन्यान्मालिन्या विजयते हसितम् ।
शर्वाणीवदनाम्बुजविनिगूहनचन्द्रिकायमाणं तत्।।

-आर्यासप्तशत्यां विश्वेश्वरपण्डितस्य

शाणोल्लीढनवेन्द्रनीलमहसि श्रीकण्ठकण्ठस्थले
संसक्ता कनकच्छविर्गिरिसुतादोः कन्दली पातु वः।
यामालोक्य सनीरनीरददलश्लिष्यत्तडिद्विभ्रम-
भ्रान्त्या नोज्झति चण्डताण्डवनवोल्लेखं शिखी षाण्मुखः।।

-स्तुतिकु. जगद्धरस्य

शिरसि धृतसुरापगे स्मरारावरुणमुखेन्दुरुचिर्गिरीन्द्रपुत्री ।
अथ चरणयुगानते स्वकान्ते स्मितसरसा भवतोऽस्तु भूतिहेतुः।।

-सुभा. सुधा. भा.

शिवायाः शवतापन्नमपि यन्न जहौ हरः।
वपुस्तन्नौमि येनान्तःकीटः कैटभजित्कृतः।।

-सूक्तिमु. हरिहरस्य

शिवेनसाकूतविलोकिताया भावोदयप्रस्खलदञ्चलायाः।
लज्जाकुलाया नमिताननाया पायादुमाया मनसोऽनुबन्धः।।

-षट्कारिकायांरत्नपाणेः

शूलक्षतद्विरददानवकुम्भमुक्त-
मुक्ताकलापकलितामलकण्ठकान्तिः।
विश्वं पुनातु गिरिजा वदनावधूत-
चन्द्रोपनीतपरिवेषमिवोद्वहन्ती।।

-अभिलेखे

शैवालवन्या रुचिरे तटिन्यास्तीरे भवान्यादरलेशशून्या।
इन्द्रादिमान्या भुवनेष्वनन्या मां पातु धन्या गिरिराजकन्या।।

-न्यायसिद्धान्तमञ्जर्याः भावदीपिकाख्यायां
टीकायां कृष्णन्यायवागीशस्य

श्रीकण्ठं निजताण्डवप्रवणताप्रोद्दाममोदोदयं
पश्यन्त्याः कुतुकाद्भुतप्रियतया सञ्जातभावं मुहुः।
मन्दान्दोलितदुग्धसिन्धुलहरीलीलालसंलोचन-
प्रान्तालोकनमातनोतु भवतां भूतिम्भवान्याः शुभाम् ।।

-शारदातिलकस्य टीकायां पदार्थादर्शाख्यायां भट्टराघवस्य

श्रीकण्ठस्य ललाटलोचनपुटादुद्भ्रान्तसप्तार्चिषा
साकं पुष्पशरैः सहेक्षुधनुषा दग्धे मनोजन्मनि।
या स्वोन्मुक्तकटाक्षसायकवरेणादत्तदेहार्द्धकं
पत्युः सा तुहिनाचलप्रियसुता भूयात् प्रमोदाय वः।।

-सुबालावज्रतुण्डे रामस्य

श्रीशङ्करप्रियतमाचरणारविन्द -
मानन्दसद्महरिपद्मभवादिवन्द्यम्।
भक्तार्तिहन्तृपरिपूरितसर्वकामं
कामन्दिशत्वविरतं शुचि मङ्गलं वः।।

-वृत्तचन्द्रिकायां देवदत्तपण्डितसुतरामदयालस्य

श्रुत्वा षडाननजनुर्मुदितान्तरेण पञ्चाननेन सहसा चतुराननाय।
शार्दूलचर्मभुजगाभरणं सभस्मं दत्तं निशम्य गिरिजाहसितं पुनातु।।

-सुभा. सुधा. भा.

श्रेयः शिवाद्वयजुषो दिशतात्स एको
वक्षोजहेमकलशो गिरिराजपुत्र्याः।
षड्वक्त्रहस्तिवदनावमृतं यदीयं
पातुं मिथः कलहमातनुतो नितान्तम् ।।

-जगद्धरभट्टकृत-स्तुतिकुसुमाञ्जलि-टीकायां लघुपञ्चिकाख्यायां राजानकरत्नकण्ठस्य

सकलसुखनिधानं भुक्तिमुक्तिप्रदं यत् -
जयति जगति सिद्धैः सर्वदोपास्यमानम् ।
करकलितवराढ्यं भीतिखड्गं प्रसन्नं
दिशतु फलमभीष्टं श्यामधामाम्बिकायाः।।

-रसविद्यासारोद्धारे

सत्वादिस्थैरगणितगुणैर्हन्त विश्वं प्रसूय
व्यक्तं धत्ते प्रहसनकरी या कुमारीति संज्ञाम् ।
मोहध्वान्तप्रसरविरतिर्विश्वमूर्तिः समन्ता-
दाद्याशक्तिः स्फुरतु मम सा दीपवद्देहगेहे।।

-सुभा. सुधा. भा.

सदा धृता तेन हिमाद्रिजाता महौषधीस्सर्वहितप्रभावा।
बाह्यान्तरानाशुगदानपोह्य शिवा प्रदद्यादनिशं शिवं वः।।

-हृदयप्रिये परमेश्वरस्य

स पायात्पार्वतीपाणिः फणिकङ्कणिना धृतः।
सात्त्विकेषु विकारेषु त्रासो यत्रास निह्नवः।।

-सूक्तिमु. हरिहरस्य

सम्यग्वाग्भवकामशक्तिजपनासक्तान्स्वभक्तान् मुदा
सम्यग्वाग्भवकामशक्तिसहितान्कामं करोतीह या।
सान्द्रानन्दमयी सुरासुरनरैरानंदिभिर्वन्दिता
आस्तान्नः शिवगेहिनी शिवकरी श्रीसुन्दरी सर्वदा।।

-सौन्दर्यलहर्य्यांष्टीकायां तरीत्याख्यायां
गौरीकान्तसार्वभौमभट्टाचार्यस्य

सर्वदेवमयीमीशां नौमि भूषासमन्विताम् ।
यस्याः कटाक्षमात्रेण जायन्ते विबुधाः नराः।।

-बुधभूषणे शंभुनृपस्य

सव्रीडा दयितानने सकरुणा मातङ्गचर्माम्बरे
सत्रासा भुजगे सविस्मयरसा चन्द्रेऽमृतस्यन्दिनि।
सेर्ष्या जह्नुसुतावलोकनविधौ दीना कपालोदरे
पार्वत्या नवसङ्गमप्रणयिनी दृष्टिः शिवायास्तु वः।।

-सुभा. सुधा. भा.

साकूताः शशिशेखरे सुरसरित्याविष्कृतानादराः
स्मेरा भृङ्गिरिटावनन्यशरणे दीने दयामेदुराः।
वात्सल्यप्रचुराः प्रसूनविशिखे रत्यां प्रसादोत्तराः
कल्याणानि तरङ्गयन्तु जगतां मातुः कटाक्षाङ्कुराः॥

-रतिमन्मथनाटके जगन्नाथपण्डितस्य

सान्द्रानन्दप्रदा या कलुषचयहरा भ्रामरीपीठसंस्था
त्रिस्रोतस्तीरगेहा निखिलभयहरा भीमरूपा सुरूपा।
भूगोलोकाभिधानं नरपतिनगरं सर्वतः पाति पूर्णा
तस्या आनन्दमय्याः पदकमलयुगेऽभीष्टसिद्धै स्मरामः॥

-आरव्ययामिन्यां जगद्बन्धोः

सा पातु वःत्र्यम्बकचुम्बितायाः
कपोलपाली चिरमम्बिकायाः।
प्रगल्भरोमाञ्चभरेण यस्याः
पुष्पायुधोऽभूत्क्षणमङ्कुरास्त्रः॥

-किरातार्जुनीयव्यायोगे वत्सराजस्य

सृष्टिस्थितिलयकर्त्री नगपतिपुत्री पुमर्थसन्दात्री।
काचिन्नवजलदाभा विधिहरिवन्द्या जयत्याद्या॥

-दीक्षाप्रकाशे जीवनाथस्य

संयुक्तां युक्तरूपामभिनवनिहितालक्तकारक्तभासा
सन्ध्यापीयूषभानोरतिरुचिरतरां चूर्णयन्तीमभिख्याम् ।
मानव्यामोकनम्रत्रिपुरहरशिरोरम्यभूषाविशेषं
भूयो भव्यं विधातुं चरणनखरुचं भावयामो भवान्याः॥

-न्यायदर्शनस्य भाष्ये वात्स्यायनमुनेः

स्थाणौ रागेण पाशौ कृतवति नयने किञ्चिदाकुञ्चयन्ती
रोमाञ्चोदञ्चिताङ्गी विगलदविरलस्वेदसान्द्रोत्तरीया।

मज्जन्ती हन्त लज्जासरिति गुरुजने वीक्ष्यमाणे समक्षं
पायाद् भूषाहिदोषात्प्रकटितकपटत्रासभाजा भवानी।।

-शिवलीलामृतमहाकाव्ये नित्यानन्दस्य

स्थूलां मूले तदन्तश्चतुरधिकदलां बिन्दुरूपां हराख्या-
मारव्यारेखाग्रयोगव्रतपवनपयोजन्मरामाभिरामाम्।
शुक्लप्राचुर्यसंस्थामृतकमलभरां भारतीजन्मभूमिं
स्वान्तः प्रध्वंसितेजः प्रसरपरधुरां नौमि शैलेन्द्रकन्याम्।।

-देवीस्तुत्याम्

स्वयं पञ्चमुखः पुत्रौ गजाननषडाननौ।
दिगम्बरः कथं जीवेदन्नपूर्णा न चेद् गृहे।।

-उद्भटसागरे पूर्णचन्द्रस्य

हन्तु हेमाद्रिकन्याया भ्रुकुटिर्दुरितानि वः।
पत्यङ्के जाह्नवीं दृष्ट्वा कोपरक्तातिभीषणा।।

-अभिलेखे

हरकण्ठग्रहानन्दमीलिताक्षीं नमाम्युमाम्।
कालकूटविषस्पर्शजातमूर्छागमामिव।।

-सूक्तिमु. बाणस्य

हरफणिमणिबिम्बे वीक्ष्य बिम्बं स्वकीयं
झटिति परपुरन्ध्रीसङ्गमं शङ्कमाना।
किमितिकिमितिकेयं केयमित्युग्रवाणी
हरतु दुरितजातं मामकं श्रीभवानी।।

-नरपतिजयचर्यायाष्टीकायां जगज्ज्योतिर्मल्लस्य

हरार्द्धतनुहारिणी दुरितसंघसंहारिणी
भजन्मतिविवर्द्धिनी प्रबलदानवोन्मर्दिनी।
तुषारगिरिनन्दिनी मुनिहृदन्तरालम्बिनी
मदन्तरवलम्बिनी हरनितम्बिनी जायतां।।

-स्मृतिप्रकाशे भास्करभट्टस्य

हेरम्बस्य कपोलसीम्नि मलिनां मालामलीनां घना-
मालोक्य प्रतिबिम्बितां हरशिरोगङ्गातरङ्गोपरि।
न्यस्तानेन कलिंदजापि शिरसीतीर्ष्याकुला यामरुद्-
वल्गत् कोकनदच्छदच्छविभृतो देव्या दृशः पान्तु वः।।

-काव्यभूषणशतके भट्टश्रीकृष्णवल्लभकवेः

हे हेरम्ब किमम्ब रोदिषि कथं कर्णौ लुठत्यग्निभूः
किं ते स्कन्दविचेष्टितं मम पुरा संख्या कृता चक्षुषाम् ।
नैतत्तेऽप्युचितं गजास्य चरितं नासां मिमीतेऽम्ब मे
तावेवं सहसा विलोक्य हसितव्यग्रा शिवा पातु वः।।

-सुभा. सुधा. भा.

गौरी

अमरीकबरीभारभ्रमरीमुखरीकृतम्।
दूरी करोतु दुरितं गौरीचरणपङ्कजम्।।

-कुवलयानन्दे-अप्पयदीक्षितस्य

एषा कापि न कामिनी त्वदपरा मन्मूर्द्धनि स्वर्द्धुनी
कान्ते कोपममुं निरस्य निपुणं पश्येहि नित्योदिता।
आलोक्य प्रतिबिम्बितां सुललितां तत्र स्वकीयां तनुं
गौरी स्मेरमुखी सखीषु निपतन्नेत्रा सदा त्रायताम् ।।

-ताराभक्तिसुधार्णवे नरसिंहठक्कुरस्य

औत्सुक्येन कृतत्वरा सहभुवा व्यावर्त्तमाना ह्रिया
तैस्तैर्बन्धुवधूजनस्य वचनैर्नीताभिमुख्यं पुनः।
दृष्ट्वाग्रे वरमात्तसाध्वसरसा गौरी नवे सङ्गमे
संरोहत्पुलका हरेण हसता श्लिष्टा शिवायास्तु वः।।

-रत्नावल्यां श्रीहर्षदेवस्य

कृष्णात् प्रार्थय मेदिनीं धनपतेर्बीजं बलात् लाङ्गलं
प्रेतेशात् महिषं तवास्ति वृषभः फालं त्रिशूलादपि।
शक्ता चास्मि तवान्नपानकरणे स्कन्दोऽपि संरक्षणे
दग्धाहं हरभिक्षया कुरु कृषिं गौरी वचः पातु वः।।

-कालिदासकृत-शृङ्गारतिलकमातृकायां स्फुटश्लोकः

क्षणादिदं या सकलं चराचरं
जगत्सृजत्यवत्यन्तयति त्रिभिर्गुणैः।
यया निरङ्गोऽपिशिवोऽङ्गवानभू-
त्करोतु गौरी मम सा शुभं सदा।।

-देवावतरणे शिवानन्दस्य

गोनासाय नियोजितागदरजाः सर्पाय बद्धौषधिः
कण्ठस्थाय विषाय वीर्यमहतः पाणौ मणीन् बिभ्रती।
भर्तुर्भूतगणाय गोत्रजरतीर्निर्दिष्टमन्त्राक्षरा
रक्षत्वद्रिसुता विवाहसमये प्रीता च भीता च वः।।

-सदुक्ति. राजशेखरस्य

गौरीपदयुगं शोणपद्मत्रागि पुनातु वः।
आननं शिवमौलीयस्वर्नदीजनितं किमु।।

-हलायुधविजये

गौरीलोचनचन्द्रिका तनुभृता कारुण्यकल्लोलिनी
दुःखध्वान्तयुगान्तसौरपटली विश्वेन्द्रजालौषधी।
गुञ्जद्विष्णुविरिंञ्चिमुख्यदिविषद्रोलम्बपद्माटवी
माया कापि पुनातु कौतुककरी दैगम्बरी नः सदा।।

-पद्यमुक्तावल्यां मुकुन्दपण्डितस्य

त्वन्नेत्रेण शपेति कोपवति नो गङ्गा मयाङ्गीकृता
पादान्तप्रणतोऽहमित्यवनतस्यैणाङ्कचूडामणेः।

दृष्ट्वा शीर्षतलस्थितां सुरनदीं गौर्यां विवृद्धक्रुधो
भर्तुर्मस्तकताडनोद्यततरं श्रीमत्पदं पातु वः।।

-अनङ्गजीवनभाणे कुच्चुण्णेः

द्यूते जेतुं महेशं बहुविहितवती साहसं नाशकद्यद्
गुप्ताभूतेनभित्ती पुनरपिकरसंस्पर्शता या शिवस्य।
देहं तत्त्याजमत्वा परपुरुषममुं धर्मसंस्थापनार्थं
गौरी पायाद्धि यस्यामुखमिति विदितं काशिकापीठमेतत् ।।

-विधवोद्वाहशंकासमाधौ राजारामशास्त्रिणः

धूमव्याकुलदृष्टिरिन्दुकिरणैराह्लादिताक्षी पुनः
पश्यन्ती वरमुत्सुका नतमुखी भूयो ह्रिया ब्रह्मणः।
सेर्ष्या पादनखेन्दुदर्पणगते गङ्गां दधाने हरे
स्पर्शादुत्पुलका करग्रहविधौ गौरी शिवायास्तु वः।।

-प्रियदर्शिकायां श्रीहर्षस्य

पत्युर्नेत्रे कराभ्यामपि च विदधती लक्षिता फालदृष्ट्या
पश्चाल्लीनापि पीता सरभसमधरे पश्चिमेनाननेन।
दीपे निर्वापितेऽपि प्रकटविहरणा चन्द्रिकाभिर्जटेन्दोः
ह्रीणा हृष्टा च भूयः प्रथमपरिचये पातु गौरी चिरं वः।।

-नलचरित्रे नीलकण्ठदीक्षितस्य

पाणौ बद्धभुजङ्गफूत्कृतिभयात्सङ्कोचयत्याः करं
व्याकृष्टं जरतीजनेन रभसाच्छम्भोर्दृढं गृह्णतः।
भ्रान्ताः सम्भ्रमतः सुखान्मुकुलिता विस्फारिताः कौतुकाद्
व्रीडामन्थरिता विवाहसमये देव्या दृशः पान्तु वः।।

-अभिलेखे

प्रत्यासन्नविवाहमङ्गलविधौ देवार्चनव्यस्तया
दृष्ट्वाग्रे परिणेतुरेव लिखितां गङ्गाधरस्याकृतिम् ।
उन्मादस्मितरोषलज्जितरसैर्गौर्या कथञ्चिच्चिराद्
वृद्धस्त्रीवचनात् प्रिये विनिहितः पुष्पाञ्जलिः पातु वः।।

-सदुक्ति. भासस्य

प्रातःकालाञ्जनपरिचितं वीक्ष्य जामातुरोष्ठं
कन्यायाश्च स्तनमुकुलयोरङ्गलीभस्ममुद्राम् ।
प्रेमोल्लासाज्जयति मधुरं सस्मिताभिः सखीभि-
र्गौरीमातुः किमपि किमपि व्याहृतं कर्णमूले।।

-सूक्तिमु.

ब्रह्मायं विष्णुरेष त्रिदशपतिरसौ लोकपालास्तथैते
जामाता कोऽत्र योऽसौ भुजगपरिवृतो भस्मरुक्षः कपाली।
हा वत्से वञ्चितासीत्यनभिमतवरप्रार्थनाव्रीडिताभि-
र्देवीभिः शोच्यमानाप्युपचितपुलका श्रेयसे वोऽस्तु गौरी।।

-सदुक्ति.

भर्त्तुः पार्वतिनामकीर्त्तयनचेत्त्वां ताडयिष्याम्यहं
लीलाब्जेन शिवः सखि स्फुटमिदं किं ते शृगालः पतिः।
न स्थाणु किमु कीलको नहि पशुस्वामी तु गोप्ता गवां
दोलाखेलनकर्मणीति विजयागौर्योगिरः पान्तु वः।।

-श्रीरामकल्पद्रुमे

वल्गत्कालीकटाक्षावलिकलित इव स्फारहाराहिराज-
स्फूर्जदद्रंष्ट्राग्रधूमभ्रममलिन इव त्र्यम्बकस्याशुकण्ठः।
भूत्यै वः क्षिप्तकर्णं प्रणयिकरधृतः केकिपिच्छाभिरामै-
र्गौरी लीलाकिराती भवति पुनरिव प्रेषभिर्यन्मयूखैः।।

-बृहत्कथमञ्यां क्षेमेन्द्रस्य

शम्भो सत्यमिदं पयोधिमथने लक्ष्म्यावृते केशवे
वैलक्ष्यात्किल कालकूटमशितं पीतं विषं यत्त्वया।
सत्यं पार्वति नास्ति नः सुभगता साक्षी तथा च स्मरो
देवेनेति कृतस्मृतिः स्मितमुखी गौरी चिरं पातु वः।।

-सदुक्ति. श्रीहर्षदेवस्य

शिरसि कुटिला सिन्धुर्दोषाकरस्तव भूषणं
सह विषधरैः प्रत्यासन्ना पिशाचपरम्परा।

' हरसि न हर प्राणानेवं न वेद कथं न्विति
प्रणयकुपितक्ष्माभृत्पुत्रीवचांसि पुनन्तु वः॥

-सदुक्तिः भगवद्गोविन्दस्य

श्रीमत्कङ्कणपन्नगेन्द्रशिरसि ज्वालावली भासुरो
यस्तिष्ठत्यमलो मणिस्तदुदरे संक्रान्त बिम्बद्युतिम् ।
रूपं भर्त्तुरवेक्ष्य लज्जितमुखी गौरी मनोहर्षणं
रोमाञ्चं दधती विवाहसमये नित्यं शिवायास्तु वः॥

-अभिलेखे

सन्ध्या रागवती स्वभावकुटिलागङ्गा द्विजिह्वः फणो
वक्राङ्कैर्मलिनः शशी कपिमुखो नन्दी च मूको वृषः।
इत्थं दुर्जनसंकटे पतिगृहे वस्तव्यमेतत्कथं गौरी-
त्थं नृकपालपाणिकमला चिन्तान्विता पातु वः॥

-सुभा. सु. भा.

स्वेदस्ते कथमीदृशः प्रियतमे त्वन्नेत्रवह्नेर्विभो
कस्माद्वेपितमेतदिन्दुवदने भोगीन्द्रभीतेस्तव।
रोमाञ्चः कथमेष देवि भगवन्गङ्गाम्भसां सीकरै-
रित्थं भर्तरि भावगोपनपरा गौरी चिरं पातु वः॥

-शा. प.

दुर्गा

अक्षस्त्रक्परशुं गदेषुकुलिशं पद्मं धनुष्कुण्डिकां
दण्डं शक्तिमसिं च चर्म जलजं घण्टां सुराभाजनं
शूलं पाशसुदर्शने च दधतीं हस्तैः प्रसन्नाननां
सेवे सैरिभमर्दिनीमिह महालक्ष्मीं सरोजस्थिताम् ॥

-दुर्गासप्तशत्यां

अतीव्रतेजो द्युपतीन्द्रपूज्यं
व्रतीश्वरैः सप्तशतीभिरर्च्यम् ।
रतीशजीवातुगतिं दधानं
प्रतीत दुर्गाङ्घ्रिमतीव वन्दे॥

-अभिलेखे

आनन्दमन्थरपुरन्दरमुक्तमाल्यं
मौलौ हठेन निहितं महिषासुरस्य।
पादाम्बुजं भवतु वो विजयाय मञ्जु
मञ्जीरराजितमनोरममम्बिकायाः॥

-सुभा. सुधा. भा.

आराध्य याङ्गिरिसुतां वरदां सुधीरै -
र्लब्धिं फलं समधिकं प्रथितैरभीष्टम् ।
संसारसागरतरिं भजनैकपात्रीं
दुर्गां नमामि भवभीतिविनाशनाय॥

-गदाधरभट्टकृत-शक्तिवादस्य टीकायां
माधवीत्याख्यायां माधवभट्टाचार्यस्य

आविष्कृतैर्दशभुजैर्दशदिग्भवेभ्यो
दुःखेभ्य आशु परिमोचयितुं स्वभक्तान् ।
कैलासनाम निजधाम विहाय भूमौ
दुर्गागता दशभुजा तनुते शुभं नः॥

-उद्भटसागरे पूर्णचन्द्रस्य

उद्यद्भानुसहस्त्रकान्तिमरुणक्षौमां शिरोमालिकां
रक्तालिप्तपयोधरां जपवटीं विद्यमाभीतिं वरम् ।
हस्ताब्जैर्दधतीं त्रिनेत्रविलसद्वक्त्रारविन्दश्रियं
देवीं बद्धहिमांशुरत्नमुकुटां वन्देऽरविन्दस्थिताम् ॥

-दुर्गासप्तशत्यां

उन्निद्रस्य सरोरुहस्य सकलामाक्षिप्य शोभां रुचा
सावज्ञं महिषासुरस्य शिरसि न्यस्तः क्वणन्नूपुरः।
देव्या वः स्थिरभक्तिवादसदृशीं युञ्जन्फलेनाथितां
दिस्यादच्छनखांशुजालजटिलः पादः पदं संपदाम् ॥

-अभिलेखे

एकं महिषशिरःस्थितमपरं सानन्दं सुरगणप्रणतम् ।
गिरिदुहितुः पदयुगलं शोणितमणिरागरञ्जितं जयति॥

-सदुक्ति. जलचन्द्रस्य

कण्ठोचितोऽपि हुङ्कृतिमात्रनिरस्तः पदान्तिके पतितः।
यस्याश्चन्द्रशिखः स्मरभल्लनिभो जयति सा चण्डी।।

-सुभा.सुधा.भा.

कारुण्यपूर्णहृदयां विधुखण्डभूषां
देवीं सुरासुरसमर्चितपादपद्माम्।
सृष्ट्युद्भवस्थितिलयैकनिदानभूतां
दुर्गां श्रिया विलसितां जननीं नमामः ।।

-फक्किकाररत्नमञ्जूषायां

कालाभ्रामां कटाक्षैररिकुलभयदां मौलिबद्धेन्दुरेखां
शङ्खं चक्रं कृपाणं त्रिशिखमपि करैरुद्वहन्तीं त्रिनेत्राम् ।
सिंहस्कन्धाधिरूढां त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं
ध्यायेद् दुर्गां जयाख्यां त्रिदशपरिवृतां सेवितां सिद्धिकामैः।।

-दुर्गासप्तशत्यां

खड्गं चक्रगदेषुचापपरिघाञ्छूलं भुशुण्डीं शिरः
शङ्खं संदधती करैस्त्रिनयनां सर्वाङ्गभूषावृताम् ।
नीलाश्मद्युतिमास्यपाददशकां सेवे महाकालिकां
यामस्तौत्स्वपिते हरौ कमलजो हन्तुं मधुं कैटभम् ।।

-दुर्गासप्तशत्यां

गुणातीतामीशां त्रिगुणसचिवां त्र्यक्षरमयीं
त्रिमूर्तिर्या सर्गस्थितिवलयकर्माणि तनुते।
कृपापारावारां परमगतिरेकां त्रिजगतां
पराम्बां बालान्तां चिदमितमहिम्नां हृदि भजे ।।

-दुर्गापाठक्रमे रमानाथस्य

घण्टाशूलहलानि शङ्खमुसले चक्रं धनुः सायकं
हस्ताब्जैर्दधतीं घनान्तविलसच्छीतांशुतुल्यप्रभाम् ।
गौरीदेहसमुद्भवां त्रिजगतामाधारभूतां महा-
पूर्वामत्र सरस्वतीमनुभजे शुम्भादिदैत्यार्दिनीम् ।।

-दुर्गासप्तशत्यां

चण्डीजङ्घाकाण्डः शिरसा चरणस्पृशिप्रिये जयति।
शङ्करपर्यन्तजितो वीरस्तम्भः स्मरस्येव॥

-सुभा.सुधा.भा.

चण्डीं चण्डादिहन्त्रीं विकसित वदनाम्भोरुहैश्वर्ययुक्ताम्
आद्यामाद्यादिसेव्यामरगणमुनिभिर्ध्यानयोग्यां वरेण्याम् ।
रुद्राणीं रौद्ररूपां वृजिनगणहरामर्कतुल्यप्रकाशां
वन्दे तां चारुनेत्रां विकसितवदनाम्भोजतुल्यां वरेण्याम् ॥

-कुमारसम्भवमातृकायां स्फुटश्लोकः

चिरमाविष्कृतप्रीतिभीतयः पान्तु वो द्विषाम् ।
बलयज्यारवोन्मिश्राश्चण्ड्याः कोदण्डकृष्टयः॥

-सुभा.

तद्वः प्रमार्ष्टुविपदःप्रणतार्तिहन्त्र्या
न्यस्तं पदं महिषमूर्द्धनि चण्डिकायाः।
वैरी यदीयनखांशुपरीतशृङ्गः
शक्रायुधाङ्कितनवाम्बुधरप्रभोऽभूत् ॥

-सुभा.सुधा.भा.

त्रिभुवनशुभपञ्जिकाञ्जिकेव
स्फुरति भवानि तवाङ्कुशः कराग्रे।
डमरुरपि बिभर्ति देवि तत्तद्
विपदवसानविसर्जनीयलक्ष्मीम् ॥

-सदुक्ति. हरेः

दक्षाधःकरपल्लवे लसदसिं दक्षोर्ध्वगे शूलिनीं
वामोर्ध्वे फलकोज्ज्वलां कटितटन्यस्तान्यहस्ताम्बुजाम् ।
शूलाग्राहतकासरासुरशिरोनिष्ठां प्रहृष्टां सुरैः-
र्जुष्टामिष्टवरप्रदां भगवतीं मुक्तिस्थलस्थां भजे॥

-श्रीपादसप्ततेः नारायणभट्टपादस्य

दिश्यान्महासुरशिरःसरसीप्सितानि
प्रेङ्खन्नखावलिमयूखमृणालनालम् ।

चण्ड्याश्चलच्चटुलनूपुरचञ्चरीक-
झाङ्कारहारि चरणाम्बुरुहद्वयं वः।।

-सुभा.

दीर्घाक्षी दीप्तदन्ता दनुजदलदला देवतादुःखदात्री
दिव्यास्त्रैर्दिव्यकान्तिर्दरदवदमना दीप्तदेहा दुकूलैः।
दृप्तानां दर्पदान्त्यै दशदिशि दशकं दृप्तदोषां दधाना
देवी दुर्गा दुरन्तं दलयतु दुरितं दुर्गतिद्रावदक्षा।।

-उद्भटसागरे पूर्णचन्द्रस्य

दुर्गा दानवनाशिनी हरजटाश्रेणीव्ययोल्लासिनी
वीणाशङ्खकरालतोमरधरा मुण्डस्रजा शोभिता।
रक्ताक्षी ननु रक्तबीजमथिनी भक्त्या सदानन्दिनी
पायात्सा परमेश्वरी प्रतिदिनं कल्याणमुक्तिप्रदा।।

-सुभा.सुधा.भा.

दृगञ्चलविवञ्चनारणगुणैर्यदालिङ्गितं
चिदेकरसमुत्तनोत्त्यखिलनामरूपात्मकम्।
अदोद्वयमतात्त्विकद्वयनिदानमाद्यं च यत्
तन्महो महिषनाशनं विविधवासनं मन्महे।।

-शारीरकमीमांसायां रामेश्वरस्य

देवी जयत्यसुरदारणतीक्ष्णशूला
प्रोद्गीर्णरत्नमुकुटांशुचलप्रवाहा।
सिंहोग्रयुक्तरथमास्थितचण्डवेगा
भ्रूभङ्गदृष्टिविनिपातनिविष्टरोषा।।

-अभिलेखे

नमोस्तु निर्जिताशेषमहिषासुरघातिने।
पार्वतीपादपद्माय जगदानन्ददायिने।।

-अभिलेखे

नागाधीश्वरविष्टरां फणिफणोत्तंसोरुरत्नावली-
भास्वद्देहलतां दिवाकरनिभां नेत्रत्रयोद्भासिताम्।

मालाकुम्भकपालनीरजकरां चन्द्रार्द्धचूडां परां
सर्वज्ञेश्वरभैरवाङ्कनिलयां पद्मावतीं चिन्तये।।

-दुर्गासप्तशत्यां

नृत्यन्त्यास्साङ्गहारं चरणभरपरिक्षोभितक्ष्मातलायाः
प्रभ्रष्टेन्दुप्रभायां निशिविसृतनखोद्योतभिन्नान्धकाराः।
ये लीलोद्वेल्लिताग्रा विदधति वितताम्भोजपूजा इवाशा-
स्ते हस्तास्सम्पदं वो ददतु विदलितद्वेषिणश्चण्डिकायाः।।

-अभिलेखे

पादावष्टम्भनम्रीकृतमहिषतनोरुल्लसद्बाहुमूलं
शूलं प्रोल्लासयन्त्याः सरलितवपुषो मध्यभागस्य देव्याः।
विश्लिष्टस्पष्टदृष्टोन्नतविरलबहुव्यक्तगौरान्तराला-
स्तिस्रो वः पान्तु रेखाः क्रमवशविकसत्कञ्चुकप्रान्तमुक्ताः।।

-सदुक्ति. बाणस्य

पायात्पातालचक्राक्रमणकृतभरोद्भ्रान्तभोगीन्द्रमुक्त -
क्रेङ्कारक्रुद्धकूर्मोन्नमितनिजनमत्पृष्ठनिष्ठास्थिकूटम् ।
उत्क्षिप्तव्यस्तहस्तोच्छ्वसितफणिफणोद्दीप्तफालाग्निदग्धम् ।
ब्रह्माण्डोद्दण्डभाण्डस्फुटनपटुरवं ताण्डवं चण्डिकायाः।।

-प्रचण्डभैरवे सदाशिवस्य

बालरविद्युतिमिन्दुकिरीटां तुङ्गकुचां नयनत्रययुक्ताम् ।
स्मेरमुखीं वरदाङ्कुशपाशाभीतिकरां प्रभजे भुवनेशीम् ।।

-दुर्गासप्तशत्यां

भगवती भवतां भवभीभिदे
भवतु शुम्भ-निशुम्भ विनाशनी।
सुरवरासुरकिन्नरनारद-
प्रभृतिभिर्विनुता वरदा भवेत् ।।

-अभिलेखे

मातर्मे मधुकैटभघ्निमहिषप्राणापहारोद्यमे
हेलालम्बितधूम्रलोचनवधे हे चण्डमुण्डार्दिनि।

निःशेषीकृतरक्तबीजदनुजे नित्ये निशुम्भापहे
शुम्भध्वंसिनि संहराशु दुरितं दुर्गे नमस्तेऽम्बिके॥

-देवीमाहात्म्ये

मुञ्चामुं चण्डिमानं मयि भुजगफणारत्नसंक्रान्तकाय-
च्छायां प्रेक्ष्य स्वकीयामपि मनसि वृथा मा कृथा दुर्वितर्कम्।
इत्युक्त्वा पादपद्मे सपदि निपततो मूर्ध्नि गङ्गाधरस्य
प्रेङ्खन्तश्चण्डिकायाः शतगुणितरुषः पान्तु वोऽपाङ्गभङ्गाः॥

-कंसवधे शेषकृष्णस्य

यत्पादाम्बुजवैभवं कथयितुं पञ्चाननश्शङ्करो
ब्रह्माभूच्चतुराननो हरिरहो जातः सहस्राननः।
एते चापि नखप्रभावमतुलं वक्तुं समर्था न ते
सा दुर्गा भवतां करोतु कुशलं श्रीराजराजेश्वरी॥

-वाँदावली नाम्नि मातृकायां स्फुटश्लोकः

यदिन्दिरानाथपुरन्दराद्यैराराधितं भक्तिभरानताङ्गैः।
श्रीचण्डिकायाश्चरणारविन्दं वन्दामहे तत्कुलदेवतायाः॥

-बालग्रहहरणे पृथिवीमल्लस्य

यस्याः शिल्पमनल्पकं त्रिभुवनं काव्यञ्च वेदत्रयं
यन्नाथस्त्रिपुरान्तकस्त्रिपथगा यस्याः सपत्नी मता।
या कालत्रयमीक्षितुं सुविपुलं धत्ते च नेत्रत्रयं
सा त्रैगुण्ययुता करोतु कमलं देवी त्रिशूलायुधा॥

-उद्भटसागरे पूर्णचन्द्रस्य

या नेत्रपक्ष्मपरिसञ्चलनेन सम्यक्
विश्वं सृजत्यवति हन्ति निरूढभावा।
सैवातनोति सततं द्रुहिणाच्युतेशां
तस्याः समस्तदधिको नहि कोऽपि देवः॥

देवीभागवतमातृकायां स्फुटश्लोकः

या माया मधुकैटभप्रमथिनी या माहिषोन्मूलिनी
या धूम्रेक्षणचण्डमुण्डशमनी या रक्तबीजाशनी।

शक्तिः शुम्भनिशुम्भदैत्यदलनी या सिद्धिलक्ष्मीः परा
सा दुर्गा नवकोटिमूर्त्तिसहिता माम्पातु विश्वेश्वरी।।

-देवीकवचमातृकायां स्फुटश्लोकः

यां संस्तुवन्ति गिरिजां प्रकृतिं च मायां
लक्ष्मीं गिरं सकलसृष्टिनिदानरूपाम्।
दुर्गां प्रचण्डमहिषासुरमर्द्दनी सा
भर्गैकसृष्टविभवा भवतात्प्रसन्ना।।

-अभिलेखे

लक्ष्मीकान्तसहोदरीं महिषदैत्याज्ञानविध्वंसिनीं
श्यामामिन्दुकलानिबद्धमकुटां शङ्खारिचापान्विताम्।
वात्सल्यातिशयात्तदेशिकपदामुद्धर्तुमज्ञं हि मां
देवीं पावकचन्द्रसूर्यनयनां दुर्गां मदम्बां श्रये।।

-होराशास्त्रस्य टीकायां
अपूर्वार्थप्रदर्शिकाख्यायां

वन्दे शङ्करगेहिनीं भगवतीं दुर्गां जगत्तारिणीं
मोहध्वान्तविनाशिनीं कुकृतिनां नेत्रे तमोरूपिणीम्।
चिद्रूपामपि शाश्वतीं बहुविधरूपैर्जगद्व्यापिनीं
भक्तानामुपकारिणीं चिरतरं शिष्टान्तराह्लादिनीम्।।

-दुर्जनमतमर्दने

विकटमुकुटमुद्यत्तेजसा व्योम्नि दैत्या-
निव भुवि मणिमय्या मेखलायाः क्वणेन।
अनणुरणितलीलाहंसकैस्त्रासयन्ती
फणिपतिभुवनान्तश्चण्डिका वः श्रियेऽस्तु।।

-अभिलेखे

विद्युद्दामसमप्रभां मृगपतिस्कन्धस्थितां भीषणां
कन्याभिः करवालखेटविलसद्धस्ताभिरासेविताम्।।
हस्तैश्चक्रगदासिखेटविशिखांश्चापं गुणं तर्जनी
बिभ्राणामनलात्मिकां शशिधरां दुर्गां त्रिनेत्रां भजे।।

-दुर्गासप्तशत्यां

शुम्भाद्ये दनुजव्रजे विनिहते यां स्तोतुमब्जासनः
सञ्जातश्चतुराननश्चबलजिद् द्रष्टुं सहस्त्रेक्षणः।
प्रीतोर्चामिषतो वितीर्य सकलां यस्यै श्रियं शङ्करः
चक्रे जागरणोत्सवं भगवती सा संततं पातु नः।।

-रामविलासकाव्ये विश्वनाथकवेः

सन्निहितनीलकण्ठा नितम्बतटशोभिनी ससिंहगुहा।
जयति प्रालेयाचलभूरिव दुर्गा सदा सुमुखा।।

-अभिलेखे

समन्तात्पश्यन्ती समसमयमेव त्रिभुवनं
त्रिभिर्नेत्रैर्दोभिर्दशभिरपि पात्री दशदिशः।
दधाना पारीन्द्रोपरि चरणमेकं परपदा-
हतारिर्वो हन्यान्महिषमथनी मोहमहिषम् ।।

-वीरमित्रोदये मित्रमिश्रस्य

समरमृदितदैत्याऽऽदित्यहर्षप्रकर्षा
ललितवदनभालाद्विस्त्रवत्स्वेदवृन्दा।
विगलदमृतबिन्दोर्बिभ्रती कान्तिमिन्दो-
र्जयति विहतविघ्ना कापि सा भक्तिनिघ्ना।।

-चन्द्रमहीपत्यां श्रीनिवासशास्त्रिणः

सिद्धिश्रीस्साधकानां प्रसरति पुरतो यत्पदाराधकानां
निर्विघ्नं यत्प्रसादादुदयति सहसा साऽपि निःश्रेयसश्रीः।
त्रैगुण्या तत् त्रिमूर्तिर्निरुपधिकरुणाश्चर्यमाधुर्यधुर्या
तुर्या सा कापि कुर्यात्सपदि मम मनः शुद्धिबुद्धिप्रसिद्धिम् ।।

-चण्डिकाचरितचन्द्रिकायां कृष्णदत्तस्य

सिंहादुत्थाय कोपाद्दडदडदडदधावमाना भवानी
दैत्यानां दिव्यशास्त्रैस्तटतटतटतत्रोटयन्ती शिरांसि।
तेषां रक्तं पिबन्ती घुटुघुटुघुटुतप्रेषयन्ती पिशाचान्
तृप्ता तृप्ता हसन्ती खदखदखददा शाम्भवी नः पुनातु।।

-शास्त्रपूजायाम्

सिंहारूढैकपादा दशभुजविलसच्चापचर्मासिचक्र-
प्रोद्यत्पाशाङ्कुशालीदरवरविलसत्तर्जनीबाणरम्या।
घ्नन्ती शूलेन वक्षस्यसुरमहिहरिग्रस्तहस्तं तु काञ्ची।
पीतक्षौमार्द्धचन्द्रा त्रिनयनललिता सा भवान्यस्तु सिद्ध्यै।।

-सुभा.सुधा.भा.

स्फुरदसिनिभदंष्ट्रां सिंहवक्त्रां त्रिनेत्रां
शरनिशितनखाग्रां पक्षविक्षोभिताशाम् ।
ज्वलदनलनिभाभिः पल्लवीभूतमौलीं
शरदृतुशशिशोभां शारभीं भावयामः।।

-ललितार्चानचन्द्रिकायां मातृकायां स्फुटश्लोकः

मङ्गला

आसीने चन्द्रमौलौ नगपतिसुतया साकमुद्वाहकाले
कर्त्तुं या मङ्गलार्थं तिलकमुपगता भ्रान्तहस्ता ललाटे।
नीते शोषं स्मरारेर्नयनहुतभुजा चन्दने जातहासा
सा देवी विश्ववन्द्या दिशतु शुभविधौ मङ्गलं मङ्गला वः।।

-गोभिलगृह्यसूत्रभाष्ये नारायणस्य

योगनिद्रा

या सा कल्पान्तकालप्रणिचिंतसलिले योगनिद्राभिधाना
संविष्टं बालरूपं वटविटपिदले तस्थुषी प्राप्य विष्णुम्।
प्रादात्तन्नाभिपद्मोदरधृतवपुषे सृष्टिकर्त्तेऽब्जवासा
सामर्थ्यं सर्गवृत्तौ सुमधुरवचसामञ्जसा नो ददातु।।

-शर्यातियज्ञे कुञ्जुनन्पीशस्य

ललिता

अतिमधुरेक्षुचापहस्तां
अपरिमितां मोदबाणसौभाग्याम्।
अरुणां अतिशयकरुणां-
अभिनवकुलसुन्दरीं वन्दे।।

-ललितोपाख्याने

विन्ध्यवासिनी

कुटिलासरित्समीपे त्रिकूटगिरिगहनभूषिणी नित्यम् ।
वाञ्छितफलप्रदात्री देवी श्रीविन्ध्यवासिनी जयति।।

-अभिलेखे

नन्दाभिधां भगवतीं भवदुःखहन्त्रीं
वश्यादिकर्मफलदां विदितां जगत्याम् ।
स्वर्णोत्तमोत्तमनिभां च तथैव भूषां
विन्ध्येश्वरीं सकलसिद्धिकरीं नमामि।।

-रससंग्रहसिद्धान्ते वेणीदत्तसुतगोविन्दरामस्य

निर्वाणदानगीर्वाणसर्वगर्वापहारिणि।
कर्मनिर्मूलनार्थाय दयस्व विन्ध्यवासिनि।।

-उद्भटसागरे उद्भटसागरस्य

भूमीभृत्स्वयमेधितस्थितिरियं गुर्वी नगाबन्धवो
विन्ध्योगस्त्यचरित्रतो न चकितःप्रस्थापयन् ब्राह्मणान् ।
कन्यामान्यतमा महोत्सवविधावित्येकमन्त्रोक्तितो
यामानीनयदर्चनाय गिरिजा विन्ध्यालया सावतात् ।।

-अभिलेख

शाम्भवी

ब्रह्माण्डमण्डपच्छद्म-पद्मकुड्मलदीर्घिका।
जायतां जगतः शान्त्यै शाम्भवी शक्तिरेकला।।

-राघवपाण्डवीये कविराजपण्डितस्य

हरसिद्धिः

शतायुः सिद्धिं वा सदसि बहुवृद्धिं विदधतीं
प्रसिद्धिं लोके वा सततमृणवृद्धिं च विगताम् ।
गुणानामृद्धिं वा सुभगसुतवृद्धिं धनगिरां
समृद्धिं भक्तानां सपदि हरसिद्धिं भज मनः।।

-अभिलेखे

लक्ष्मीः

अकुण्ठोत्कण्ठवैकुण्ठकण्ठपीठलुठत्करः।
संरम्भः सुरतारम्भे स श्रियः श्रेयसेस्तु वः॥

–अभिलेखे

अगणितमहिमायै साधकानन्ददायै
सकलविभवसिद्ध्यै दुर्गतिध्वान्तहन्त्र्यै।
अमृतजलधिजायै जातरूपात्ममूर्त्त्यै
मधुरिपुवनितायै चेन्दिरायै नमोस्तु॥

-नाडीमूत्रनेत्रजिह्वापरीक्षायां रावणस्य

अशेषभुवनामोदमादधानां शुचिस्मिताम् ।
करुणामधुराकारां लक्ष्मीं देवीमुपास्महे॥

-सुभा.सुधा.भा.

आनन्देन्दूदयसमुदिताम्भःकणासारकीर्णा
माला चन्द्रोपलदलमयीसम्पदाग्रथ्यमाना।
कण्ठे दातुं ममपरिलसत्यग्रतो देवि शङ्के
येयं पङ्केरुहनिवसते त्वद्दृगान्दोललक्ष्मीः॥

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदास

आसीना सरसीरुहे स्मितमुखी हस्ताम्बुजैर्बिभ्रती
दानं पद्मयुगाभये च वपुषा सौदामिनीसन्निभा।
मुक्ताहारविराजमानपृथुलोत्तुङ्गस्तनोद्भासिनी
पायान्नः कमलाकटाक्षविभवैरानन्दयन्तीं हरिम्॥

-सौभाग्यफलप्रदानमन्त्राख्यायां मातृकायां स्फुटश्लोकः

ईशानाञ्जगतोऽस्य वेंकटपतेर्विष्णोः परां प्रेयसी-
न्तद्वक्षस्थलनित्यवासरसिकान्तत् क्षान्तिसंवर्द्धनीम् ।
पद्मालङ्कृतपाणिपल्लवयुगां पद्मासनस्थां श्रियं
वात्सल्यादिगुणोज्ज्वलां भवगतीं वन्दे जगन्मातरम् ॥

-श्रीस्तुत्यां वेंकटनाथवेदान्तदेशिकस्य

उत्तिष्ठन्त्या रतान्ते भरमुरगपतौ पाणिनैकेन कृत्वा
धृत्वा चान्येन वासो विलुलित कबरीभारमंसे वहन्त्या।
भूयस्तत्कालकान्तिद्विगुणितसुरतप्रीतिना शौरिणा वः
शय्यामालिङ्ग्य नीतं वपुरलसलसद्बाहुलक्ष्म्याः पुनातु।।

-सारसङ्ग्रहे शम्भुनाथपण्डितस्य

उत्तुङ्गस्तनमण्डलोपरिलसत्प्रालम्बमुक्तामणे -
रन्तर्बिम्बितमिन्द्रनीलनिकरच्छायानुकारिद्युति।
लज्जाव्याजमुपेत्य नम्रवदना स्पष्टं मुरारेर्वपुः
पश्यन्ती मुदिता मुदेऽस्तु भवतां लक्ष्मीर्विवाहोत्सवे।।

-सुभा.सुधा.भ.

उत्थायाम्बुनिधेर्निरीक्ष्य परितः पुंसः प्रतापोद्भटान्
नारीरूपधरस्य कैटभरिपोः सान्निध्यमभ्यागता।
अन्तर्मोदभरेण बिभ्रतिपुरस्तस्मिन्निजामाकृतिं
व्रीडामोहितविस्मिता भगवती लक्ष्मीः शिवायास्तु वः।।

-आनन्दलहरीटीकायां रघुनन्दनस्य

कदाचित्कर्पूरैः कुचकलशयोः सीम्नि हरिणा
विनाकूतं वीणाललितललना कापि लिलिखे।
श्रियस्तां पश्यन्त्या मुकुलितदृगन्तस्मितलवं
चलत्कर्णोत्तसं जयति शिरसो धूननविधिः।।

-आनन्दकन्दचम्प्वां मित्रमिश्रस्य

कमलासन कमलेक्षण कमलारिकिरीटकमलभृद्वाहैः।
नुतपदकमला कमला करधृतकमला करोतु मे कमलम् ।।

-सुभा.सुधा.भ.

करद्वन्द्वन्यस्तस्फुटकमलकोषादविरलं
मरन्दस्य स्त्रोतो द्वयमुपरि यत्ते विजयते।
तदेतत्ते धत्ते जननि जनसौभाग्यजननीं
समुन्मीलन्मञ्जुस्मितरचितवीचीरुचिरताम् ।।

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

करे धत्ते शौरिः परिमृशति देवो दिनकरः
करैरावासाय स्पृहयति विधाता स्वयमपि।
सरोजातं मातस्तव चरणसंसर्गसुभगं
जगन्मध्ये को वा गणयति न सेवासुखविधौ।।

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

कल्याणं कलयन्तु कल्यकमलप्रान्तोत्पतद्धम्भर-
प्रायाः कोऽपि समस्तसम्पदयनप्रत्यग्रकल्पद्रुमाः।
काम्याः पद्मभवादिभिः सकुतुकाः कालुष्यविध्वन्सने
कारुण्यामृतवर्षकालजलराः कल्याः कटाक्षाः श्रियः।।

-साहित्यरत्नाकरस्य मन्दराख्यायां टीकायां लक्ष्मणसूरिणः

कान्त्या काञ्चनसंनिभां हरगिरेरुच्चैश्चतुर्भिर्गणैः -
र्हस्तोक्षिप्तहिरण्मयामृतघटैरासिच्यमानां श्रियम् ।
बिभ्राणां वरदाब्जयुग्ममभयं हस्तैः किरीटोज्ज्वलां
क्षौमाबद्धनितम्बबिम्बलसतीं वन्देऽरविन्दस्थिताम् ।।

-सौभाग्यफलप्रदानमन्त्राः इत्याख्यायां मातृकायां स्फुटश्लोकः

कारुण्यं परिकल्प्य कल्पविटपि प्रागल्भ्य पण्डीकरं
वाजिद्वीपिसुवर्णरत्नवसनालङ्कारभारोदयम् ।
आनन्दद्रुममञ्जरीपरिमलस्तोमायमानं दृशो-
रुल्लासप्रविकाशनं विदधतीं वन्देरविन्दासनाम् ।।

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

किञ्जल्कराजिरिव नीलसरोजलग्ना
लेखेव काञ्चनमयी निकषोपलस्था।
सौदामिनी जलदमण्डलगामिनीव
पायादुरःस्थलगता कमला मुरारेः।।

-बृहत्स्तोत्ररत्नाकरे

केलीतल्पमुपेयुषः सरभसं प्रेक्ष्योरसि प्रेयसः
क्रीडन्तीं निजमूर्तिमुत्पुलकितामुत्कम्पिबिम्बाधरा।

ताम्रानम्रमुखेन्दुशून्यहसितं तं वीक्षमाणात्मनो
वक्षस्युत्पुलकं निमेषविकलं पायात् प्रिया श्रीपतेः॥

-कृष्णकुतूहले मधुसूदनसरस्वत्याः

कौन्द्योमाला इति मधुकरैर्मौक्तिकानीतिहंसै-
श्चान्द्र्यो ज्योत्स्ना इति परिचयादुल्लसद्भिश्चकोरैः।
सौधं स्त्रोतः स्फुटमिति सुरैर्योनुबद्धः समन्ता-
ल्लक्ष्म्याः सोऽयं पदनखरुचां राशिरास्तां मुदे नः॥

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

क्षीराम्बुधौ मुकुन्दं स्थितं समालोक्य शेषशय्याम् ।
तद्दक्षिणाक्षिमीलनलग्नकरा सा जयति लक्ष्मीः॥

-शृङ्गारकलिकात्रिशत्यां कामराजदीक्षितस्य

गौरीगिरीशसुवचोरचनाविदग्धा
मुग्धाहितागणिततन्त्रिगुणा सुवर्णा।
जन्मात्ययस्थितिविचारकरी नराणां
नारायणी मनसि मे वसतु प्रियेव॥

-नारायणीपद्धत्यां नारायणस्य

चतुर्भिः कैलासस्फुरितकरिभिर्हेमससुधै-
र्घटैःशुण्डोत्क्षिप्तैः स्मरति सुखसिक्तां कनकभाम्।
वराम्भोजद्वन्द्वाभययुतकरां त्वाम्बुजगतां
रमेश्रीमत्ते यो मुखमपि स मत्तेभधनवान् ॥

-अभिलेखे

जगति या कमलाकमलासन
स्मरहरादिसुरैरसुरैः स्तुता।
निजगणैः सहसासहसासिता
भगवती भवतां भवतान्मुदे॥

-प्रशस्तिपत्रिकायां

जयति महोदधिमथने मुररिपुपरिरम्भसंभृता लक्ष्मीः।
सत्वरसत्रपसरभससपुलकसोत्कम्पसस्वेदा॥

-सदुक्ति.

जयन्ति जगतां मातुस्स्तनकुङ्कुमबिन्दवः।
मुकुन्दाश्लेषसंक्रान्तकौस्तुभश्रीविडम्बिनः॥

-बसन्ततिलकभाणे वात्स्यवरदार्यस्य

तल्पीकृताहिरगणितगरुडो हाराभिहतविधिर्जयति।
फणशतपीतश्वासो रागान्धयाः श्रियः केलिः॥

-सुभा.सुधा.भा.

त्वत्कारुण्यकटाक्षकल्पविटपिछायासु शंसेरते
ये केऽपि क्षणमप्यहो भुवि पुनस्तेषामपूर्वं फलम् ।
उद्यद्दारुणदुष्कृतातपकृतोत्तापो न सम्पद्यते
त्रैलोक्ये भ्रमतामंपि क्वचिदपि श्रीरम्ब तुभ्यं नमः॥

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

दन्तैः कोरकिता स्मितैर्विकसिता भ्रूविभ्रमैः पत्रिता
दोर्भ्यां पल्लविता नखै कुसुमिता लीलाभिरुद्वेलिता।
उत्तुङ्गस्तनमण्डलेन फलिता भक्ताभिलाषे हिता
काचित्कल्पलता सुरासुरनुता पायात्सुधाब्धेः सुता॥

-सुभा.सुधा.भा.

दरिद्रतोन्मूलनकर्मदक्षा प्रत्यक्षसिद्धेश्वरतानिदानम् ।
सम्पद्विधात्री करुणानिधात्री धात्रीव सा सौख्यपदस्य दात्री॥

-सुभा.सुधा.भा.

दारिद्र्योरगदर्पदारणकरी गारुत्मती मालिका
पापस्तोमकृताभितापशमनस्फूर्जद्रसावापिका।
वाञ्छारूढफलप्रदा सुरतरुश्रेणीसुखस्त्रोतसा-
माकीर्णा घनशीकरावलिरियं लक्ष्म्याः कटाक्षावलिः॥

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

दुःखैरेव दृढीकृतं यदि हृदम्भोजे पदं मामके
तत्त्वत्केलिसरोजसद्मनिपदं धत्ते हठान्मे मतिः।
एतच्चेदरविन्दवासिनि तव क्लेशावहं जायते
तद् दूरी कुरु दुःखदारुणपदं मच्चेतसः सत्वरम् ।।

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

दृगम्भोजक्रीडन्मधुपपटली पक्षतिरियं
मरन्दाली लीढा विरचयति पक्ष्मावलिरुचिम् ।
किमुन्मीलन्नीलोत्पलदलमिलन्ती मधुकणा-
प्रनाडी त्वनेत्रद्युतिकपटशीला विजयते।।

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

दृष्ट्वा कौस्तुभदिव्यदर्पणमुरः सासूयमुत्क्षिप्तया
दृष्ट्या कामपि पूर्वपक्षरचनामालक्ष्य लक्ष्म्या हरेः।
जीयासुः प्रतिवन्दिमुत्तरयितुं लक्ष्मीविवाहोत्सवे
तस्याः स्वप्रतिबिम्बचुम्बिनि कुचद्वन्द्वे कटाक्षच्छटा।।

-न्यायसिद्धान्तदीपप्रभायां शेषानन्तस्य

देवी श्रीऋद्धिलक्ष्मीर्विमलकुलभवा नीतिमार्गे निविष्टा
शिष्टाचारैकभूमिस्त्रिभुवनजननी पादलब्धप्रसादा।
शम्भोरम्भोजजन्मप्रभृतिभिरमरैः सेवितस्यातिभक्त्या-
विख्याता व्यक्तकीर्त्तिर्जगति विजयते सत्प्रजानन्ददात्री।।

-अभिलेखे.

देवेऽर्पितवरणस्त्रजिबहुमाये वहति कैटभीरूपम् ।
जयति सुरासुरहसिता लज्जाजिह्मेक्षणा लक्ष्मीः।।

-अभिलेखे

देवः काञ्चनशैलसेवनपरा रत्नाकरं सेवते
विष्णुः सख्यमहो कृतं दिनकृता पद्मालये पङ्कजे।
योगीन्द्रोऽपि दधाति वारिधिसुता भ्रातेति चन्द्रं शिवो
लोकेऽस्मिन्नहि कोऽपि लोभजलधेः पारंगतो लक्ष्यते।।

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

द्वारि द्वारि द्रविणविरही याच्यमानोऽतिदीनः
स्नातो कस्मादपि तव कृपापातपीयूषपूरैः।
द्वारे द्वारे वितरणकलाकौशलं तत्क्षणं सः
कर्त्तुं चित्तं कलयति वलन्मोदसंदोहमूर्त्तिः॥

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

नमामि सर्वलोकानां जननीमब्जसम्भवाम् ।
श्रियमुन्निद्रपद्माक्षीं विष्णुवक्षःस्थले स्थिताम् ॥

-सुभा.सुधा.भा.

निरीक्ष्य विष्णोश्चरणारविन्द -
नखेषु लक्ष्मीः प्रतिबिम्बमस्मात् ।
दशावतारादपि मन्यमाना -
स्वाधिक्यमास्तात् विदुषां सुखाय॥

-रसरत्नहारे शिवरामत्रिपाठिनः

नीलश्रीरलकेषु शङ्खगरिमा कण्ठे कुचे माकरी
रेखा कुन्दवरद्युतिः स्मितसुधाकान्तेषु दन्तेषु च।
पादौ कच्छपभूषितौ करयुगं यस्याः सपद्मं महा-
पद्मानन्दमयी मुकुन्दरमणी सद्यः प्रसद्यान्मम॥

-शृङ्गारतरंगिण्यां वेंकटाचार्यस्य

नेत्राम्भोजाञ्जलिविलुलितापाङ्गनीताब्जपुञ्जैः
पूजां कर्तुं वदनशशिनः शार्ङ्गिणः संप्रवृत्तम् ।
कृष्णालोकातिशयितमिषच्चित्तपद्मप्रगुंजत्
कन्दर्पालिः कमलनिलया पातु लोकानजस्त्रम्॥

-रसप्रकाशिकायां कृष्णशर्मणः

पद्मा ते वितनोतु भद्रमविनाभूतापि शक्तिर्विभो-
राविर्भावमुपेत्य दुग्धजलधेरापादयन्ती यशः।
वृद्धिं प्रागिव सम्पदां विदधती गीर्वाणलोकस्य या
सञ्जाता वनमालिका सहचरी वक्षस्थले शार्ङ्गिणः॥

-नीलापरिणये वेंकटेश्वरस्य

पद्मां पद्मासनासीनां पद्महस्तां दयामयीम् ।
पद्मनाभप्रियां वन्दे पद्मासनमुखैर्नुताम् ॥

-तत्त्वचिन्तामणिसारखण्डने वेदान्तश्रीनिवासाचार्यस्य

पद्मासने पद्माकरे सर्वलोकैकपूजिते
नारायणप्रिये देवि सुप्रीता भव सर्वदा॥
शङ्खचक्रगदाहस्ते शशिवर्णे सुखासने
मम देहि वरं देवि सर्वसिद्धिप्रदायिनि॥

-वरलक्ष्मीव्रतकल्प

पयोधिसम्भूततया समन्ताद्
दुग्धस्य बिन्दूनिव गात्रलग्नान् ।
लावण्यसन्तानमिषेण विष्वग्
विभावयन्ती भवताद् विभूत्यै॥

-सुभा.सुधा.भा.

पयोराशेरन्तः क्वचिदतिकलङ्केन विकलः
स्थितोमग्नः पङ्के स च सकलसौन्दर्यनिलयः।
इदानीमानन्दं जनयति हि चन्द्रस्त्रिजगता-
मये मातर्लक्ष्मी स्फुरति तव संगोत्तमफलम्॥

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

पायात्पयोधिदुहितुः कपोलामलचन्द्रमाः।
यत्र संक्रान्तबिम्बेन हरिणा हरिणायितम् ॥

-शा.प.

पुष्णातु श्रियमम्बुराशिरशनाकन्या चिरं कांक्षितां
क्षोणीन्दो रघुनाथनेतुरतुलां पाणौ कृता प्रेयसा।
आलीभिः परिहासपूर्वमसकृत्तत्पञ्चशाखं गृहं
मन्दाक्षेण नियोजिता विदधती सान्तः प्रमोदोदया॥

-पारिजातहरणे कुमारताताचार्यस्य

प्रवीरहठभोग्यापि जयति श्रीर्महासती।
कृत्स्नत्रैलोक्यवासापि कृष्णोरःस्थलशायिनी॥

-सदुक्ति. राजशेखरस्य

प्रेंखोल्लत्स्फुटनीलनीरजदला द्वैतप्रतीतिप्रदा
दृष्टिर्द्वेष्णितमालनीतिमगुणद्रोहिण्यलं तस्य वः।
लक्ष्म्याः सास्तु सुखाय बिम्बितवती या भाति नीलाम्बुद-
श्यामे श्रीयमुनाप्रवाहजठरे लोलेव मीनाङ्गना॥

-रसरत्नदीपिकायां

भृङ्गासङ्गविलोलदम्बुजमयच्छत्रादधोबिन्दवः
श्रेणीभूय पतति सततमतिस्फीतामरन्दस्य ये।
शङ्के ते तव कण्ठसङ्गमवशादासादयन्तः श्रियं
हारस्यैव समुल्लसन्ति हि पुरो नारायणप्रेयसि॥

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

मङ्गलं मङ्गलानां या दत्ते मङ्गलदेवता।
संश्रिता नृहरिं तस्यै लक्ष्म्यै भवतु मङ्गलम् ॥

-लक्ष्मीमङ्गलाशासने

मज्जत्यम्भोधिमध्ये निपतति भुजगे शूकरादिस्वरूपे
मायापाशेन सद्यो जगदपि सकलं प्रापयत्युग्रकष्टे।
पुण्ये वृन्दावने यः परयुवतिगणालिङ्गनानन्दशाली
सोऽयं कृष्णोतिपूज्यस्तदिह तव समासङ्ग एवास्य हेतुः॥

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

मनाक् प्रपन्नेपि कृपाकटाक्षे यस्याः कृतार्था सकलाश्चिराय।
सा निर्मलासेचनकस्वरूपा पायादपायात् कमलासना माम्॥

-सुभा.सुधा.भा.

मन्थानोल्लासलीलाचलचिकुरमिलत्कुण्डलां कर्णपालिं
मिथ्यैवोन्मोचयन्त्याः कृतकपटपरावृत्तयस्ते कटाक्षाः।

लक्ष्म्याः पायासुरन्तःस्मरभरविकसत्स्मेरगण्डस्थलाया
लज्जालोलं बलन्तो मधुरिपुवदनाम्भोजभृङ्गाश्चिरं वः॥

-सदुक्ति. भोजदेवस्य

मन्दं मन्दममन्दविभ्रमवता मन्दासवीक्षाजुषा
पद्माक्षेण चलाङ्गुला करतले चेलाञ्चलासञ्जिते।
ह्रीमत्याः पुलकोद्गमङ्कितततनोर्लक्ष्म्या नवे संगमे
चेतस्तोषसमुद्गतं प्रदिशताच्छ्रेयांसि वः सीत्कृतम् ॥

-कमलिनीकलहंसे नीलकण्ठस्य

मन्ये लक्ष्मि त्वया सार्द्धं समुद्राद् धूलिरुत्थिता।
पश्यन्तोऽपि न पश्यन्ति श्रीमन्तो धूलिलोचनः॥

-उद्भटसागरे पूर्णचन्द्रस्य

मम तु हृदरविन्दे स्वेश्वरा पादलक्ष्मीश्-
चरणकुमुदयोर्मे वैरिणां शीर्षलक्ष्मीः।
त्रिभुवनभवने मे सर्वदा कीर्तिलक्ष्मी-
र्वसतु वसतु कार्ये मे सदा पूर्णलक्ष्मीः॥

-चण्डीविलासे रुद्रशर्मन् त्रिपाठिनः

महालक्ष्मीं महामायां स्वकुलस्यैव देवता।
यस्याः स्मरणमात्रेण वाग्विलासो भवेद्ध्रुवम् ॥

-प्रवरदीपिकायां

मातर्लक्ष्मि ललामलोचनचमत्कारेण चञ्चत्सुधा-
वीचिव्रातनिभेन सिञ्चय महापापाभितापाकुलम्।
मामीषत्करुणायिते सुरतरुं पण्डी करोति क्षणा-
दश्लाघ्यत्वमुपानयत्यविरतं चिन्तामणिं सर्वथा॥

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

मातः कम्पं गुरुमपि कमले संत्यज त्वं विषादं
मा याहि त्वं बलभिदमयि संजृम्भमत्रैव तिष्ठ।

मा गास्त्वं वा श्वसनमुरुरयं मन्थमुग्धः समुद्र
इत्युक्तवा यां प्रशमनमनयत् पातु सा लोकमाता॥

-उद्भसागरे उद्भटसागरस्य

मुरारिश्रीदेव्योरुपरिसुरते सम्यगुदिते
विभोर्नाभीपद्मावसथमजमालोक्य कमला।
दरं लज्जाक्रान्तास्थगयदथ नेत्रं निजविभो-
रवामं तत्कालप्रणयललितं पातु सुरतम्॥

-प्रतापराघवे गोपालार्यस्य

यत्रास्ते दिव्यलक्ष्मीर्विविधगुणवती बिभ्रती पानपात्रं
सव्ये ज्ञानाब्धिपूतं भवतु गदहरं मातुलिङ्गं करेऽन्ये ।
भक्तान् संवादरीत्या वदत शिशुवराः सृष्टितप्तांश्च सर्वान्
पानं कुर्वन्तु चेदं कटु यदि न भवेत्तर्हि दास्ये फलं वः ॥

-दानसिन्धौ शङ्करस्य

यद्वाञ्छास्वपिनागतं न च दृशाप्यालोकितं यत्क्वचित्
यद्वाचापि न कल्पितं सुखमहो तत्त्वं ददासि क्षणात् ।
दीनेभ्यो भयभारभञ्जिनि भवत्कारुण्यकल्पद्रुमो -
न्मीलन्मञ्जुमरन्दबिन्दुलहरी लोके जरीजृम्भते॥

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

राजाधिराजस्य सखापि नग्नोऽनुपेत्य यां भ्राम्यति भिक्षमाणः।
उपेतवान् हन्त जनार्दनोऽपि शेतेऽस्तचिन्तं मम सा श्रिये श्रीः॥

-सुभा.सुधा.भा.

लक्ष्मि क्षमस्व वचनीयमिदं मयोक्त-
मन्धी भवन्ति पुरुषास्त्वदुपासनेन।
नो चेत् कथं कमलपत्रविशालनेत्रो
नारायणः स्वपिति पन्नगभोगतल्पे॥

-उद्भटसागरे पूर्णचन्द्रस्य

लक्ष्मीं क्षीरसमुद्रराजतनयां श्रीरङ्गधामेश्वरीं
दासीभूतसमस्तदेववनितां लोकैकदीपाङ्कुराम् ।
श्रीमन्मन्दकटाक्षलब्धविभवब्रह्मेन्द्रगङ्गाधरां
त्वां त्रैलोक्यकुटुम्बिनीं सरसिजां वन्दे मुकुन्दप्रियाम् ।।

-सुभा.सुधा.भा.

लक्ष्मीश्चिरञ्जयति वारिनिधेरनेक-
मन्थाकुलादधिगता पुरुषोत्तमस्य।
स्निह्यत्तिरोबलितसम्मदघूर्णमान-
नेत्रावलोकननिरस्तसमस्तविघ्ना।।

-अभिलेखे

लक्ष्म्याः क्षीरसमुद्रविद्रुमलतालग्ना मुखेन्दौ सुधा
धारार्द्रीकृतमौक्तिकावलियुता या कापि सा राजते।
स्वीये केलिनिकेतने जलनिधौ स्वापंगतायाश्चिरं
स्मेरस्निग्धरदावलीपरिलसन्मुग्धाधरस्यच्छलात् ।।

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

लोकेषु लोकोत्तरतानिधाननिदानभूता विभवाधिदेवी।
मन्दाररूपा नमतां जनानां न कस्य वन्द्यां विबुधस्य लक्ष्मीः।।

-सुभा.सुधा.भा.

विद्वानक्षरनष्टधीरिति शुचिर्धर्मध्वजीति स्थिर-
स्तब्धः क्रुद्ध इति ग्रहीति सुदृढः क्षन्ता लघीयानिति।
मायावीति च नीतिशास्त्रकुशलो यामन्तरेणेश्वरीं-
गण्यन्ते गुणिनोपि दूषणपदं तस्यै नमस्ते श्रिये।।

-सदुक्ति. सोलुकस्य

विधिहरिहरनमिताङ्घ्रिं योगिध्येयां पुरातनी-
मार्यां फुल्लेन्दीवरसंस्थां भक्ताभीष्टप्रदां वन्दे।।

-कृष्णधूर्जटिदीक्षितकृत-सिद्धान्तचन्द्रोदयमातृकायां स्फुटश्लोकः

विष्णुवक्षोगृहे लक्ष्मीरस्ति कौस्तुभदीपिके।
पुनातु निवसन्ती वो दृढदोःस्तम्भतोरणे।।

-सदुक्ति. राजशेखरस्य

वृत्ते साङ्गविवाहमङ्गलविधौ लब्धापि दैत्यद्रुहः
सौहार्दे विमनाः पुनातु भवतो लक्ष्मीः स्मरन्ती पितुः।
यामाश्वासयतीव सोदरतया प्रत्यग्रबिम्बग्रह-
व्याजादङ्कगतामनङ्कुशनिजस्नेहो मुहुः कौस्तुभः।।

-सदुक्ति. शरणदेवस्य

शिलाखण्डं लेभे किमपि किल चिन्तामणिपदं
जडो वृक्षो धत्ते त्रिजगदति दातृत्त्वपदवीम् ।
पशुर्धेनुः सापि प्रभवति हि कामोदयकरी
गरीयांस्त्वत्सङ्गोदितसुकृतरङ्गो विजयते।।

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

श्रियं धत्ते मूर्द्ध्ना कुचकलशयोर्वारणवरो
दलैरङ्घ्रिद्वन्द्वस्य च विबुधवाटीतरुवरः।
चिरासङ्गायातां तव वदनशोभामविरलं
वहन्निन्दुः प्राप्तस्त्रिजगदतिसौन्दर्यपदवीम् ।।

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

श्रियं नौमि देवीं परां पारिजातां पदाम्भोजरेणूपसेवापराणाम् ।
यदाद्याक्षरस्याभिधेयेन शूली प्रलीढोऽपि मृत्युप्रजेता गरेण।।

-चण्डीकुचपञ्चाशिकायां लक्ष्मणाचार्यस्य

श्रियः कटाक्षः स तनोतु नश्शिवं
विधित्सुना यत्सदृशं नवोत्पलम् ।
वितन्यतेऽस्मिन् विधिना दिवानिशं
निमीलनोन्मीलनसन्ततोद्यमः।।

-बालभागवते

श्रियः क्षीराम्भोधेर्निजविनयनम्रेण वपुषा
शनैरुत्तिष्ठन्त्याः पवनचलितेन्दीवरदृशः।
कटाक्षो मन्दाक्षस्तिमितलुलितभ्रूर्हरिमनु-
प्रकीर्णः कालिन्दीलघुलहरीवृत्तिर्विजयते।।

-सदुक्ति.

श्रीमातुरुज्वलसरोजरुचौ भजामि
पादौ पटीरनवपल्लवतल्लजाभौ।
यत्पीठपूजनविधिर्भवति त्रयाणां
सर्गस्थितिप्रलयकारिसुरोत्तमानाम् ।।

-शिवभक्तविलासस्य टीकायां प्रकाशिकाख्यायां नृसिंहस्य

श्रीराजीवाक्षवक्षस्थलनिलयरमाहस्तवास्तव्यलोल-
ल्लीलाब्जान्निःसरन्तीमधुरमधुझरीनाभिपद्मे मुरारेः।
अस्तोकं लोकमात्रा द्वियुगमुखशिशोराननेष्वर्प्यमाणं
शङ्खप्रान्तेन दिव्यं पय इति विबुधैः शंक्यमाना पुनातु।।

-विश्वगुणादर्शे वेंकटराध्वरेः

श्रीशाङ्घ्रिद्वितयीप्रपित्सुजनतासिद्ध्यत्समीहाविधौ
यस्याः स्वारसिकानवद्यकरुणा जागर्त्यमुत्रानिशम् ।
स्वाराजत्यतिदुर्गतोऽपि च यया दृष्टो दयातः सकृत्
यत्सम्बन्धनिबन्धनं भगवतः श्रीमत्वमेनां श्रये।।

-तुरीयमीमांसायां

श्रेणीभूताः कनकलतिकामञ्जरीमञ्जुरूपाः
स्वावासाब्जस्फुरितरजसामग्रतोयास्तु धाराः।
शङ्के पङ्केरुहनिवसतेरङ्गुलीराजिरूपं
तासु स्वैरं वहति बहुशो माधवस्यापि दृष्टिः।।

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

श्रेयः श्रीर्वो विधत्तां भ्रुकुटिभटसमाशेषलोकाधिराजा
निष्प्रत्यूहं नतानां विपुलतरचतुर्भद्रमन्दारशाखा।

वाणीदाक्षायणीन्द्राण्यनिमिषतरुणीपाणिशोणाब्जपूज्या
वेलातीतानुकम्पा त्रिजगति कुरुकावल्लिदेवी प्रतीता॥

-वरवरमुनिचम्प्वां वकुलाभरणसूरिणः

सद्मायाता स्वसद्मायितकमलदलान्दोलिरोलम्बमाला-
व्यालोलद्भिर्मरन्दैरखिलमयि ममावासमाछालयन्ती।
छत्रीभूतारविन्दच्छदपटलगलद्भिः परागैः सरागैः
सन्ध्यारागायमानं गगनमविरलं दर्शयन्ती पुनातु॥

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

समन्तादुन्मीलद्वहलबडवाग्निप्रतपिते
विषज्वालाजालाकुलसकलतोये जलनिधौ।
त्वदीयाङ्घ्रिद्वन्द्वद्रवदमृतवीचीपरिचया-
दये मातस्तस्थौ चिरममरवाटीतरुवरः॥

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

समुन्मीलन्नीलाम्बुजनिकनीराजितरुचा-
मपाङ्गानां भङ्गैस्स्मृतलहरीश्रेणिमसृणैः।
ह्रिया हीनं दीनं भृशमुदरलीनं करुणया
हरिश्यामा सा मामवतु जडसामाजिकमपि॥

-लक्ष्मीलर्य्यां जगन्नाथस्य

सम्पूर्णः पुनरभ्युदेति किरणैरिन्दुस्ततो दन्तिनः
कुम्भद्वन्द्वमिदं पुनः सुरतरोरग्रोल्लसन्मञ्जरी।
इत्थं यद्वदनस्तनद्वयवलद्रोमावलीषु भ्रमः
क्षीराब्धेर्मथने भवद्विविषदां लक्ष्मीरसावस्तु वः॥

-सदुक्ति.

सर्वानन्दमयीमशेषदुरितध्वन्सां मृगाङ्कप्रभां
त्र्यक्षां चोदर्ध्वकरद्वयेन दधतीं पाशं सृणिं च क्रमात् ।
दोर्भ्यां चामृतपूर्णहेमकलशं मुक्ताक्षमालां वरां
गङ्गासिन्धुसरिद्द्वयादिसंहितां श्रीतीर्थशक्तिं भजे॥

-जगन्नाथकृत-गङ्गालहर्य्यां मातृकायां स्फुटश्लोकः

सहोदरत्वं प्रतिपद्य यस्याः
स्फुरत्कलङ्कोऽपि मतो द्विजेशः।
समस्तसाद्गुण्यविधानदक्षा
सदा शरण्यां मम सास्तु लक्ष्मीः॥

-सुभा.सुधा.भा.

सानन्दं त्रिदशैः सविस्मयमविश्वस्तैः सुरद्वेषिभिः
साश्चर्यं सुरसुन्दरीपरिजनैः सेर्ष्यं च रम्भादिभिः।
साकूतं च सकौतुकं च समनोह्लादं च कंसद्विषा
दृष्टा दुग्धमहोदधिप्रमथने लक्ष्मीः शिवायास्तु वः॥

-सदुक्ति. शङ्करदेवस्य

सान्द्रं चन्द्रमरीचिमण्डलमिव स्फीतं समुन्मीलितं
वन्दे चित्तचकोरपारणमिदं युष्मद्दृगान्दोलनम्।
मातर्लक्ष्मि ललामलास्यकलया लावण्यलीलामयी
जाता प्रातरुदञ्चदम्बुजवना कीर्णेव मद्देहली॥

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

सृष्टिस्थित्यन्तकर्तुर्दनुजकुलरिपोः शार्ङ्गिणः कैटभारेः
वक्षःपीठीविहारप्रमुदितमनसो लोकमातुः कटाक्षाः।
ईषत्प्रोत्फुल्लनीलोत्पलवरकलिकाकान्तिचौर्यप्रवीणाः
पूर्णेन्दुस्निग्धधृष्टिव्यतिकरमसृणाः संश्रयन्तां मुदे वः॥

-प्रतापराघवे गोपालार्यस्य

स्वपादपीठविनमत्सु सत्सु स्मितच्छलेनं श्रियमादधाना।
पद्मासना पद्मभवादिवन्द्या सा मे शरण्या विभवाय पद्मा॥

-सुभा.सुधा.भा.

स्वाधिष्ठानाम्बुजदलमिलद् भृङ्गदो धूयमाना
विष्वग्व्याप्ताः कनकरुचयो रेजिरे रेणुधाराः।
तासामासादयति सुषमां हंसकासक्तरत्न-
ज्योतिर्ज्जालं वलयितमिदं वारिधेः कन्यकायाः॥

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

हाराः कण्ठे किमु विरचिताः सम्पदम्भोरुहाक्ष्याः
लीलावालावरणविहिताः किन्नु कुन्दस्य मालाः।
वेलालग्नाः धवलमणयो मोदपाथोनिधेः किं
लक्ष्म्याः क्षीराम्बुधिघनकणासारशङ्का कटाक्षाः।।

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

हृद्यस्वादितमदिरावैभवमाद्यद्द्विलोचनां बालाम्।
बालारुणकरभासुरवसनां कमलासनां वन्दे।।

-लक्षणावल्यां उदयनाचार्यस्य

त्रिपुरसुन्दरी

कदम्बवनवासिनीं मुनिकदम्बकानन्दिनीं
नितम्बजितभूधरां सुरनितम्बिनीसेविताम्।
नवाम्बुरुहलोचनामभिनवाम्बुदश्यामलां
त्र्यम्बककुटुम्बिनीं त्रिपुरसुन्दरीमाश्रये।।

-त्रिपुरसुन्दरीस्तोत्रे

करुणार्द्रकटाक्षान्तां तरुणादित्यसन्निभाम्।
बिम्बवर्णारुणां नौमि श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरीम्।।

-कुण्डरत्नावल्याष्टीकायां मञ्जूषाख्यायां
कृष्णदीक्षितसुतरामचन्द्रदीक्षितस्य

क्षोणीमण्डलपावनासितधुनी तीरोत्तरस्यां दिशि
प्रायेणेन्द्रसमानभाग्यवृषभारूढैर्जनैर्भूषिता।
श्रीवैराजपुरी-करि-श्रुतिमदामत्तद्विरेफध्वनि-
स्माराविर्भवकामिनीकरसमाश्लिष्टान्यकांतास्ति वै।।

-कितवोल्लासे वेणीमाधवाचार्यसुत-लक्ष्मणस्य

चरणाक्रान्तविबुधा श्रीबाला परमेश्वरी।
भक्तामृताय सन्माता नित्यं विजयतेतराम्।।

-कितवोल्लासे वेणीमाधवाचार्यसुत-लक्ष्मणस्य

नित्यानन्दां परां वन्दे ब्रह्मरूपां गुणान्विताम्।
सर्वभूतमयीं देवीं श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरीम्।।

-तन्त्ररत्ने

प्रणामो मातर्मे भवभयविनाशाय सततं
मम स्वान्तं बाले चरणकमले ते विलसतु।
सदा वाणी मे त्वत्सुगुणपटनायास्तु यदयं
परं किञ्चिल्लीलाललितपदगुम्फो भवतु मे।।

-कितवोल्लासे वेणीमाधवाचार्यसुत-लक्ष्मणस्य

प्रसन्नविमलाशयां समकरस्फुरत्कङ्कणां
चलद्घनपयोधरां सुरतरूपशोभामहम्।
शरज्जलधिवैभवप्रसृतिप्रावृडाखण्डल-
स्थलसमकलेवरां बहुलभक्तदेवीं भजे।।

-कितवोल्लासे वेणीमाधवाचार्यसुत-लक्ष्मणस्य

बालार्क्ककोटिरुचिरां नवचन्द्रचूडां
नेत्रारविन्दसमलङ्कृतभालदेशाम् ।
मुक्ताकलापविलसत्कुचमण्डलाग्रा
बालामबालाशशिबिम्बमुखीं नमामि।।

-बालापूजनक्रमे

मालाबर्हमनोज्ञकुन्तलभरां वन्यप्रसूनोक्षितां
शैलेयागुरुसक्तचित्रतिलकां शश्वन्मनोहारिणीम्।
लीलावेणुरवामृतैकरसिकां लावण्यलक्ष्मीमयीं
बालां बालतमालनीलवपुषां वन्दे परां देवताम्।।

-सुभा.सुधा.भा.

श्रीबालाचरणौ नमामि सततं संपत्प्रदौ सुन्दरौ
स्वच्छप्रेंखितराजहंसमहिलापक्षस्फुरच्चामरौ।
मुक्तिज्ञानकृपार्थकामसुकृतप्रागल्भ्यदानादरौ
श्रीमद्देवजनाधिनाथललनावंदारुमस्ताकरौ।।

-कितवोल्लासे वेणीमाधवाचार्यसुत-लक्ष्मणस्य

श्रीमातस्त्रिपुरे परात्परतरे देवि त्रिलोकीमहा-
सौन्दर्यार्णवमन्थनोद्भवसुधाप्राचुर्यवर्णोज्वलम्।
उद्यद्भानुसहस्त्रनूतनजपापुष्पप्रभं ते वपुः
स्वान्ते मे स्फुरतु त्रिलोकनिलयं ज्योतिर्मयं वाङ्मयम्।।

-देवीमहिम्नस्तवे दुर्वाससः

त्रैपुरीमंत्रशक्तिः

जयति निजसुधाम्भः संभवद्वाग्भवश्री-
रथ सरससमुद्यत्कान्ततत्त्वानुभावा।
तदनुपरमधामध्यानसंलब्धमोक्षा
रविशशिशिखिरूपा त्रैपुरीमंत्रशक्तिः।।

-योगिनीहृदयतन्त्रे

मीनाक्षी

गौरीं काञ्चनपद्मिनीतटगृहां श्रीसुन्दरेशप्रियां
नीपारण्यसुवर्णकन्तुकपरिक्रीडाविलोलामिमाम् ।
श्रीमत्पाण्ड्यकुलाचलाग्रविलसद्रत्नप्रदीपायितां
मीनाक्षीं मधुरेश्वरीं शुकधरां श्रीपाण्ड्यबालां भजे।।

-मीनाक्षीस्तोत्रे

रतिः

देवी रतिर्विजयते मृगनाभिचित्रं
पत्रावलीं पृथुपयोधरसीम्नि यस्याः।
भाति त्रिलोकविजयोपनतस्वकान्त-
प्रकान्तसायकनिशाणनकालिकेव।।

-अमरुशतकस्य टीकायां रसिकसञ्जीवनी
इत्याख्यायां अर्जुनवर्मदेवस्य

राधा

अन्तस्मेरतयोज्ज्वला जलकणव्याकीर्णपक्ष्माङ्कुरा
किञ्चित्पाटलिताञ्चला रसिकतोत्सिप्ता पुरः कुञ्चती।
रुद्धायाः पथि माधवेन मधुरव्याभुग्नतारोत्तरा
राधीया किलकिञ्चितस्तबकिनी दृष्टिः श्रियं वः क्रियात् ॥

-दानकेलिकौमुद्यां

कदाचित् रज्यन्तीं पदमनुपमालक्तकरसैः
कदाचित् गुम्फन्तीमतिमसृणकेशेषु कुसुमम् ।
कदाचिच्चोज्झन्तीं पठनमिषकान्ताङ्कवसतिं
सदा वामां राधां परिकलयति स्वान्तमनिशम् ॥

-राधाचरितमहाकाव्ये कालिकाप्रसादशुक्लस्य

कमलनयनकेलीसंभ्रमस्त्रस्तनीवि -
स्फुटजघनविराजत्किंकिणीजालकाञ्ची ।
कलयतु कमलाक्ष्या राधिकायाः प्रमोदं
मदनविजययात्रावीथिका तोरणश्रीः ॥

-मन्दारमरन्दचम्प्वां श्रीकृष्णकवेः

कस्तूरीचर्चिताङ्गी रविकिरणसदृक्पीतवासोदधाना
सम्यक् चन्दैरुदारैर्वलयितचिकुराबर्हिणानामुदारैः॥
देहं कृत्वा त्रिभङ्गं विनिहितमधरेवेणुमुत्कूणयन्ती
बिभ्राणा कृष्णलीलां जयति बहुतरस्त्रग्धरा राधिका सा ॥

-राधाकृष्णयुगलसहस्रनाममातृकायां स्फुटलोकः

कृष्णोऽपि कंसदलनोपि रमाप्रियोऽपि
ईशोप्यशेषजगतामधिनायकोऽपि
राधां प्रसादयितुमर्चतियां हि नित्यं
तां राधिकां सकलसौख्यप्रदां नमामि ॥

-गङ्गानन्दकृत-भृङ्गदूतस्य टीकायां
रामेश्वरप्रसादिनीत्याख्यायां चेतनाथस्य

छत्रारिध्वजवह्निपुष्पवलयान् पद्मोर्ध्वरेखाङ्कुशा-
नर्द्धेन्दुं च यवानवाममनु या शक्तिं गदां स्पन्दनम् ।
वेदीकुण्डलमस्त्यपर्वतदरं धत्तेथ सव्ये पदे
तां राधां चिरमूनविंशतिमहालक्ष्मार्चिताङ्घ्रिं भजे॥

-रूपचिन्तामणौ विश्वनाथचक्रवर्तिनः

दोर्भ्यां पल्लविनी नखैः कुसुमिनी भ्रूविभ्रमैः पत्रिणी
दन्तैः कोरकिणी स्मितैः सुषुमिणी लीलोभिरावालिनी ।
पीनोत्तुङ्गकुचद्वयेन फलिनी वृन्दावनस्थायिनी
काचित् कल्पलता सदास्तु हृदि मे कृष्णद्रुमालम्बिनी ॥

-उद्भटसागरे उद्भटसागरस्य

पदाम्भोजप्रान्तप्रणतहरिमाणिक्यमुकुट -
स्फुटद्यच्छुभ्रांशुप्रमुदितचकोराक्षियुगला ।
श्रियं लावण्याब्धिस्मरविहितनिर्मन्थनभवां
दधाना श्रीराधा मम विविधबाधां तिरयतु ॥

-श्रीलक्ष्मीश्वरीचरितस्य टीकायां बालकृष्णशर्मणः

मेघश्याममुकुन्दसुन्दरमुखे कुन्दावदातस्मिते
स्वच्छन्दं विलसन्ति येऽनवरतं सौदामिनी लीलया।
भावस्निग्धविलोकनस्नुतरसा वोऽव्यक्तरागाकुला
मुग्धाः पान्तु सुकोमलाधररुचो राधादृशोर्विभ्रमाः॥

-संयोगितास्वयम्वरे मूलशङ्करमानेकलालयाज्ञिनः

राधा पुनातु जगदच्युतदत्तचित्ता
मन्थानमाकलयती दधिरिक्तपात्रे।
यस्याः स्तनस्तबकचूचुकलोलदृष्टि-
र्देवोऽपि दोहनधिया वृषभं दुदोह॥

-सूक्तिमु. लीलाशुकस्य

राधिकां नौमि नीलाब्जमदमोचनलोचनाम् ।
श्रीनन्दनन्दनप्रेमवापीखेलन्मरालिकाम् ॥

-उद्भटसागरे पूर्णचन्द्रस्य

सकलरसविभातां कुञ्जकेलिप्रभातां
रसितरसिककृष्णां राधिकां कृष्णराध्याम् ।
अखिलरसरसज्ञां लम्बितश्रीपदाब्जां
व्रजयुवतिषु रम्यां श्रीकिशोरीं नमामि।।

-गीतगोविन्दटीकायां रसतरंगिण्यां

सुधाधाम्नः कान्तिस्तव वदनपङ्केरुहगुणै-
र्जितेव म्लानत्वं व्रजति सहाता प्राणदयिते।
वदत्येवं कान्ते दिवसविरहातङ्कचकिता -
मुधा सुप्ता राधा तव दिशतु नित्यं प्रियशतम् ।।

-वृषभानुजायां मथुरादासस्य

रुक्मिणी

श्रीकृष्णे सत्यभामाकुचकलशभुवि स्फीतमातङ्गकुम्भो -
तुङ्गायां पारिजातस्त्रजमुपनयति प्रेमभाजा करेण।
तस्मिञ्जम्भाभिघातिद्विरदकरधिया विस्मृतेर्ष्यारसाया
रुक्मिण्याः क्लान्तभङ्गावलिललितरुचः पान्तु दृग्भङ्गयो वः।।

-काव्यभूषणशतके भट्टश्रीकृष्णवल्लभकवेः

श्लाघ्याशेषतनुं सुदर्शनकरः सर्वाङ्गलीलाजित -
त्रैलोक्यं चरणारविन्दललितेनाक्रान्तलोको हरिः।
बिभ्राणां मुखमिन्दुसुन्दररुचं चन्द्रात्मचक्षुर्दधत्
स्थाने यां स्वतनोरपथ्यदधिकां सा रुक्मिणी वोऽवतात् ।।

-सुभा.सुधा.भा.

सत्यभामा

सानन्दं मकरन्दबिन्दुनिकरप्रस्यन्दबन्दीभव -
न्मन्दीभूतमिलिन्दतुन्दिलदलन्मन्दारमन्दादरम् ।

भूयः सौरभलोभसम्भ्रमभराद्भृङ्गीभिरङ्गीकृते
भामायाः किल पारिजातकुसुमे जीयात् सतृष्णं मनः।।

- पारिजातहरणचम्प्वां श्रीकृष्णस्य

सीता

उन्मृष्टं कुचसीम्नि पत्रमकरं दृष्ट्वा हठाल्लिङ्गना -
त्कोपो मास्तु पुनर्लिखाम्यहमिति स्मेरे रघूणां वरे।
रोषेणारुणितस्त्रपाविदलितः प्रेम्णा च विस्तारितो
दत्तो मैथिलकन्यया दिशतु वः क्षेमः कटाक्षाङ्कुराः।।

-शृङ्गारतिलकभाणे रामचन्द्रदीक्षितस्य

जीयाद्राघवसुन्दरी कुलपतिर्या नादभूमीश्वरी
या सादिस्वरनूपुरारणितयुक्ता नोभूरालापकीः ।।
ग्रामादित्रिकसप्तकावधिमयी मूर्छासमुच्छ्रायगा
सा श्रीचक्रमयीशितुः श्रुतिगुणीभूता विदेहात्मजा ।।

-शाङ्र्गदेवकृत-सङ्गीतरत्नाकरस्य व्याख्यां
सेतु- इत्याव्याख्यायां गङ्गारामस्य

पाणिग्रहावसर एव दृढोपगूढा रागस्पृशा रघुपतेर्नयनाञ्चलेन ।
लज्जावशान्नववधूरिव संकुचन्ती दृष्टिर्महीदुहितुरस्तु विभूतये वः ।।

-शृङ्गारतिलकभाणे रामचन्द्रदीक्षितस्य

प्रतिनृपतिशिरोभिस्सार्द्धमर्द्धेन्दुमौलि -
र्नमयति पणचापं राघवे लाघवेन ।
विदितमदनतन्त्रो मूलमन्त्रो रतानां
जयति जनकजाया लालसो दृग्विलासः ।।

-न्यायप्रकाशिकायां नरहरिमिश्रस्य

भूतिर्भूमितले पणः परिणये रामेण युद्धं पथि
कान्तारे गमनं दशास्यहरणं लङ्कापुरे रोधनम् ।

वह्नौ शुद्धिरथ प्रजापयशसाऽरण्ये च निर्वासनं
यैवं जन्मत एवं दुःखदलिता तां नौमि रामप्रियाम् ॥

-उद्भटसागरे उद्भटसागरस्य

ममसहजविरोधी निर्जितोनेनभित्वा
धनुरिति बहलोद्यत्प्रीतिभाजास्मरेण।
स्त्रगिवकुवलयानामादरेणोपनीता
जयति जनकजाया राघवे दृष्टिवृष्टिः ॥

-चन्द्रालोकप्रकाशे प्रद्योतनभट्टाचार्यस्य

मातापितृभ्यां कन्याया यन्नाम न हि रक्ष्यते ।
रामेण सह तन्नाम ममास्येऽस्तु निरन्तरम् ॥

-उद्भटसागरे पूर्णचन्द्रस्य

यत्पादाब्जप्रसृमरसुधापानबद्धादराणां
नृणां वाणी प्रवहति मुखाद्यत्कृपादृष्टिवृष्ट्या ।
शान्तस्तापो भवति भजतां रिक्ततासम्भवोऽयं
सीता सा मे कलयतु गिरां सम्पदां चाभिवृद्धिम् ॥

-कविमनोरञ्जकचम्प्वां सीतारामसूरिणः

रामप्रेमपयोधिवर्द्धनविधुः शृङ्गाररसारास्पदं
संसारार्णवदासतारणतरिर्मायातमोदीपिका।
विद्युद्भा सुखवृन्दवर्षणकरी कादम्बिनी काप्यसौ
मद्हृत्कञ्जनिवासिनी विजयतां श्रीजानकी सर्वदा॥

-सङ्गीतरघुनन्दने विश्वनाथसिंहजूदेवस्य

सन्तानकल्पतरुमण्डपमण्डितायां
कुण्डोल्लसज्ज्वलनकाञ्चनवेदिकायाम् ।
सीतारघूद्वहकराकलितैकपाणि -
र्वैवाहहोमसमये दिशताच्छुभानि ॥

-कुण्डसिद्धिव्याख्यायां विट्ठलदीक्षितस्य

सीते! चिन्तितपूरणातिनिपुणैः कल्याणकृद्वीक्षणै -
रेनं तावकपादपङ्कजरसास्वादैकबद्धस्पृहम् ।
मातः! प्रापय कामितार्थनिवहं हंसासनाराधिते !
नित्यं मद्विहितां नतिं त्वमुररीकृत्यादराद् भक्तितः ॥

-कविमनोरञ्जकचम्प्वां सीतारामसूरिणः

सुवर्णा पीताङ्गी धवलवसना चोत्पलकरा
सखीस्कन्धन्यस्तापरकरसरोजस्मितमुखी ।
स्फुरन्नानारत्नाभरणमधिकोद्दीपितदिशा
सदा चेतस्यास्तां जनकतनया रामदयिता॥

-भावप्रकाशे

सोमाभामरविन्द सुन्दरदृशां सौन्दर्यसद्वैभवां
मन्दं मन्दमनोहरस्मितमुखीं मन्दारमालान्विताम् ।
कुन्देन्दीवरपाटलीसुरभितां वृन्दारकैर्वन्दितां
वन्दे राघवसुन्दरीं त्रिभुवनानन्दैकदीपाङ्कुराम् ॥

-सीतानवरत्नमालास्तोत्रे

सरस्वती

अकचटतपयाद्यैः सप्तभिर्वर्णवर्गै-
र्विरचितमुखबाहापादमध्याख्यहृत्का।
सकलजगदधीशा शाश्वता विश्वयोनि-
र्वितरतु परिशुद्धिं चेतसः शारदा वः॥

-शाङ्करग्रन्थावल्यां

अपूर्वस्तव भाण्डारो मातर्भारति दृश्यते।
अव्यये व्ययमाप्नोति व्यये चाव्ययतामियत् ॥

-उद्भटसागरे पूर्णचन्द्रस्य

अब्जाहृत्पद्ममध्ये विलसति लपने शारदा सारदात्री।
मुक्ताकुन्देन्दुकान्तिर्नयनकुवलये पुष्पवन्तौ धरित्री।।

-वास्तुरत्नावल्यां जीवनाथशर्मणः

अमन्दानन्दसंदोहपीयूषरसदायिनीम् ।
स्तवीमि शारदां दिव्यां ज्ञानैकफलशालिनीम् ।।

-शृङ्गारार्णवचन्द्रिकायां विजयवर्णिमहोदयस्य

अमलकमलमध्येसन्निविष्टाङ्गयष्टिः
करजलरुहराजत्पुस्तकाक्षालिमाला।
अखिलनिगमसारः सर्वभूतान्तरस्था
भवतु भवभयानां भेदनी भारती नः।।

-आदिशेषकृत-परमार्थसारस्य टीकायां विवरणाख्यायां राघवानन्दस्य

अवगाहस्व वाग्देवि रम्यमुद्भटसागरम् ।
उद्भटश्लोकपद्मेन रचय श्रुतिभूषणम् ।।

-उद्भटसागरे पूर्णचन्द्रस्य

अवावरीं धीतिमिरस्य पीवरीं
संसारसिन्धोः परमार्थदृश्वरीम् ।
सुधीवरीं सत्पुरुषार्थसम्पदां
नमामि भक्त्या परया सरस्वतीम् ।।

-लौगाक्षिगृह्यसूत्राणां भाष्ये देवपालस्य

आढ्या गुणैर्विबुधता किल तर्ककूटै-
र्वन्द्या मनोहरकला रमणीयभाषाः।
येषां कृपाकृपणता गुणकुञ्जकर्त्री
तान् शुक्लसौम्यचरणान्नितरां नमामि।।

-सांख्यरहस्यस्य टीकायां प्रकाशाख्यायां श्रीरामपाण्डेयस्य

आदित्यादपि नित्यदीप्तममृतप्रस्यन्दिचन्द्रादपि
त्रैलोक्याभरणं मणेरपि तमः कार्षं हुताशादपि।
विश्वालोकि विलोचनादपि परब्रह्मस्वरूपादपि
स्वान्तानन्दनमस्तु धाम जगतस्तोषाय सारस्वतम् ॥

-सदुक्ति. बलदेवस्य

आदौ शास्त्रान्धकारे पतित इव ततोऽभ्यासमार्गे चरिष्णुः
पश्चाद्व्युत्पत्तिदेहल्युपग इव ततः शक्तिवाटीं प्रविष्टः।
नानाशब्दप्रसूनावचयकरणतो वाग्वशीभूतविश्वो
यत्प्रेमापाङ्गदृष्ट्या भवति कविवरो भारती सा पुनातु॥

-वसिष्ठस्मृतिविवृत्तौ कृष्णपण्डितस्य

आद्यां शारदचन्द्रकान्तिरुचिरामाह्लादयन्तीं जगत्
सर्वं सर्वपदार्थबोधचतुरां त्रैलोक्यधात्रीं सिताम् ।
सन्देहप्रकरान्धकारनिकरोत्सारप्रसारक्रियां
वाग्देवीं द्विजनायकाधिवसतिं ब्रह्मादिवन्द्यां स्तुमः॥

-संस्कारदीपके हर्षनाथझाशर्मणः

आरूढा श्वेतहंसं भ्रमति च गगने दक्षिणे चाक्षसूत्रं
वामे हस्ते च दिव्याम्बरकनकमयं पुस्तकं ज्ञानगम्यम् ।
सा वीणां वादयन्ती स्वकरकरजकैः शास्त्रविज्ञानशब्दैः
क्रीडन्ती दिव्यरूपा करकमलधरा भारती सुप्रसन्ना॥

-सरस्वतीस्तोत्रे

आशासु राशीभवदङ्गवल्ली-
भासैव दासीकृतदुग्धसिन्धुम् ।
मन्दस्मितैर्निन्दितशारदेन्दुं
वन्देऽरविन्दासन सुन्दरि! त्वाम् ॥

-रघुवंशटीकायां संजीवनीत्याख्यायां द्वितीयसर्गे मल्लिनाथसूरिणः

आसृष्टिप्रलयावधित्रिभुवने विस्तारसिन्धोः परं
यस्या द्रष्टुमपि क्षमो न यदि चेत्पारङ्गतौ का कथा।

ब्रह्मश्रीशशिवादिभिश्च सततं ज्ञानाय योपास्यते
तां वाचामधिनायिकां भगवतीं श्रीशारदामाश्रये।।

-अमरकोशस्य टीकायां मणिप्रभाख्यायां

आस्ते बाणवचोविनोदनविधिः श्रीकालिदासानन-
क्रीडाकोमलभारतीविलसितं व्रीडा तथापीह मे।
सूक्तिस्त्रोतसि मज्जतो न भवति प्रायस्तदीहे गिरां
देवी लोकविमोहनक्षमविधिं जानाति कश्चित्परम्।।

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

इन्दिन्दिरी भवति यच्चरणारविन्द-
द्वन्द्वे पुरन्दरपुरःसरदैवतानाम् ।
वन्दारुतां कलयतां सुकिरीटकोटिः
श्रीशारदा भवतु सा भवपारदा वः।।

-रसमञ्जर्यां वैद्यनाथसुतशालिनाथस्य

उच्चैरस्यति मन्दतामरसतां जाग्रत्कलङ्कैरव-
ध्वन्सं हस्तयते च या सुमनसामुल्लासिनी मानसे।
दुष्टोद्यन्मदनाशनाच्चिर्चरमला लोकत्रयीदर्शिका
सा नेत्रत्रितयीव खण्डपरशोर्वाग्देवता दीव्यतु।।

-चन्द्रालोके जयदेवस्य

उद्यत्सूर्यसहस्त्रभास्वरतनुः सूक्ष्मातिसूक्ष्मा परा
विद्युत्पुञ्जनिभेन्दुकोटिसदृशी धामत्रयाध्यासिनी।
तत्तेजस्त्रितयात्मकैकमुनिभिर्वाक्कामशक्त्याख्ययुक्-
कूटैस्त्र्यब्धिशरर्तुभिः परिणता नित्यात्मिका पातु वः।।

-श्रीविद्यार्णवतन्त्रे श्रीविद्यारण्ययतेः

उन्निद्रशुभ्रसरसीरुहसंनिषण्णां
निर्गच्छदच्छरुचिनिर्जितचन्द्रकान्तिम् ।

हारोज्वलां लिपितनुं स्फटिकाक्षकुम्भ-
मुद्राक्षपुस्तककरां प्रणमामि वाणीम् ॥

-चित्सुखाचार्यकृत-तत्त्वप्रदीपिकायाष्टीकायां
नयनप्रसादिनीत्याख्यायां प्रत्यक्स्वरूपभगवतः

कञ्जोद्भवसुतां नौमि भारतीमिवभारतीम् ।
धार्त्तराष्ट्रसमासीनां चमूं कर्णावतंसिनीम् ॥

-अधिकमासकथायां

कदम्बतरुमञ्जरीकलितकर्णपूरोज्ज्वलं
कलक्वणविपञ्चिकाकलनदत्तकर्णोत्सवम् ।
करस्फुरितशारिकं कठिनपीनतुङ्गस्तनं
जगत्रितयमङ्गलं जयति मन्मनोमन्दिरे॥

-अखिलाण्डनायिकादण्डके भास्करस्य

कमलासनमारूढां करधृतवीणां सदैव घोषयुताम् ।
मुक्ताहारविभूषां प्रहसितवदनां नमाम्यहं बालाम् ॥

-नवग्रहन्यासे मातृकायां स्फुटश्लोकः

करकमलकलितपुस्तकवराभयाक्षस्त्रजं विशुद्धाङ्गीम् ।
मौलिलसच्चन्द्रकलां त्रिलोचनां भारतीं वन्दे॥

-तंत्रसंग्रहव्याख्यायां

करबदरसदृशमखिलं भुवनतलं यत्प्रसादतः।
कवयः पश्यन्ति सूक्ष्ममतयः सा जयति सरस्वती देवी॥

-प्रस्तावरत्नाकरे हरिदासस्य

कर्पूरस्फुटकैरवेश्वरगिरिप्रालेयगोत्राधरः
स्वः सिन्धूदकपूर्णशारदविधुस्वच्छप्रभाभासुराम् ।
सद्वृत्तामलमौक्तिकावलिकृतैर्भूषागणैर्भूषितां
वाग्गुम्फाद्भुतशक्तिदाननिपुणां वागीश्वरीमाश्रये॥

-सिंहसिद्धान्तसिन्धौ शिवानन्दभट्टस्य

कलाविलासान्मकरन्दबिन्दु मुद्राविनिद्रे हृदयारविन्दे।
या कल्पयन्ती रमते कवीनां देवीं नमस्यामि सरस्वतीं ताम्॥

-विश्वप्रकाशे महेश्वरस्य

कलितकमलपुस्तन्यस्तहस्ताग्रमुद्रा
दिशतु लिखनशुद्धिं शारदा सारदा नः।
प्रतिवदनसरोजं या कवीनां कवीनां
वितरति मधुधारां माधुरीणां धुरीणाम् ॥

-प्रक्रियाकौमुद्याष्टीकायां प्रकाशाख्यायां कृष्णदत्तस्य

कल्पावसानसमये स्थितये कवीनां
देहान्तरं किमपि या सृजति प्रसन्ना।
यस्याः प्रसादपरमाणुरपि प्रतिष्ठा-
मभ्येति कामपि नमामि सरस्वतीं ताम् ॥

-हारावल्यां पुरुषोत्तमदेवस्य

कल्याणि वाणि निजपाणिसरोजयुग्मं
संयोज्य देवि करवाणि तव प्रणामम् ।
मत्तुण्डमण्डललसद्रसनाङ्गनान्ते
नृत्याय नित्यमिदमस्तु रसानुसिक्तम् ॥

-कुण्डमण्डपसिद्धिव्याख्यायां विट्ठलदीक्षितस्य

कविभिः करकलितमिव त्रैलोक्यमिदं विलोक्यते सद्यः।
आसाद्य यत्प्रसादं सा जयति सरस्वती देवी॥

-स्वप्नचिन्तामणौ दुर्लभराजसुतजगदेवस्य

कवीन्द्रमानसाम्भोजनिवासभ्रमरीं नुमः।
देवीं सहृदयानन्दशब्दमूर्त्तिसरस्वतीम् ॥

-कथासरित्सागरे सोमस्य

काश्मीरं बालभान्वातपसदृशतमं या दधाना ललाटे
तन्त्रीराजं कराब्जेऽशुमदुपलजपस्त्रग्धरानिर्ज्जराच्या।

श्वेताम्भोजासनस्था हिमकरविलसत्कान्तिशुभ्रा गुणाढ्या
सा मे कण्ठे प्रसन्ने निवसतु सततं शारदा शर्मदात्री।।

-भावप्रकाशे गोविन्दरामत्रिपाठिनः

कीरं वाचयितुं किलेव दधती हस्ताम्बुजे पुस्तकं
विज्ञानाममृतं प्रदातुमिव तन् नित्यं करे बिभ्रती।
अक्षस्त्रग्वलयं करेण गणनां कर्त्तुं च दातुं वरान्
सास्तादस्तसमस्तदोषनिचया वागीश्वरी श्रेयसे।।

-शङ्करविजयविलासे

कुन्देन्दुशङ्खस्फटिकामलप्रभा
ज्योतिर्मयी श्वेतसरोजवासिनी।
पाशाक्षमालाङ्कुशपुस्तकैर्युता
वाणी विभूतिं वचसः करोतु मे।।

-जगन्मोहने लक्ष्मणाचार्यस्य

कुमुदवान्धवकुन्दतुषारभा रुचिरक्षौमदुकूलधरा शुभा।
सुसितपद्मवरासनसंस्थिता जयति मङ्गलदा हि सरस्वती।।

-माधवकृत-माधवनिदानस्य टीकायां
मधुकोषाख्यायां विजयरक्षितश्रीकण्ठदत्तयोः

कोकावलिशोकापहभूकान्तमणिश्री-
र्लोकाहतराकाशशिनीकाशमुखश्रीः।
कोकास्यविकासास्पदसाकारतनुश्री-
र्धीचापलमाचामतु वाचामधिदेवी।।

-सरस्वतीप्रार्थनायां

क्वचिदिव रविर्जाड्यच्छेदि क्वचित्प्रचुराचिर-
द्युतिरिव चमत्कारि क्वापि क्षपाकरवन्मृदु।
शिखिवदनृजु क्वापि क्वापि प्रदीपवदुज्ज्वलं
विजयि किमपि ज्योतिः सारस्वतं तदुपास्महे।।

-सदुक्ति. आपदेवस्य

गीर्नः श्रेयः परं दद्यादजा सा चतुराकृतिः।
अनुरूपमजं वव्रे या पतिं चतुराननम् ।।

-हरिचरिते परमेश्वरस्य

गोविन्दाख्यानपीयूषप्लवैरिव सितीकृताम् ।
व्यासादिवदनाम्भोजभ्रमरीं भारतीं भजे।।

-सूक्तिमुक्तावल्यां हरिहरस्य

गौरीनाथशिरःस्रुतत्रिपथगास्रोतः परिप्लावितं
नम्रब्रह्मललाटचन्दनरजःप्रच्छादितालक्तकम् ।
श्रीविष्णोर्मुकुटाग्ररत्नमहसा नीतं विचित्रां रुचिं
वाग्देवीपदपङ्कजं परतरं वन्दे मतिश्रेयसे।।

-हरिरामतर्कवागीशकृत-मुक्तिवादविचारस्य टीकायां
मुक्तिलक्ष्मीति नाम्नि कालीपादतर्काचार्यस्य

चतुरा चतुराननाननाब्जे प्रतिभाति राजहंसी।
कमले कमलेव सर्वदा सा सुखदा सत्सुखदा सरस्वती स्यात्।।

-भर्तृहरिकृत-सुभाषितत्रिशतीटीकायां
सहृदयानन्दिनीत्याख्यायां रामचन्द्रबुधेन्द्रस्य

चतुर्मुखमुखाम्भोजवनहंसवधूर्मम।
मानसे रमतां नित्यं सर्वशुक्ला सरस्वती।।

-काव्यादर्शे दण्डिनः

चन्द्रार्ककोटिघटितोज्ज्वलदिव्यमूर्ते
श्रीचन्द्रिकाकलितनिर्मलशुभ्रवासे।
कामार्थदायि कलहंससमाधिरूढे
वागीश्वरि प्रतिदिनं मम रक्ष देवि।।

-सरस्वतीदेव्यष्टके

जगतां व्यवहारस्य याऽस्ति हेतुः सनातनी।
सारदां शारदाभ्राच्छवस्त्रां वन्देऽस्मि शारदाम्।।

-श्रीहर्षकृत-नैषधमहाकाव्यस्य टीकायां
जीवातु-इत्याख्यायां मल्लिनाथस्य

जडमतिहन्त्रीं जनधात्रीं वन्दे पङ्कजभवपुत्रीम् ।
वाचोदारां करवीरां कलये तारामणिहाराम् ।।

-रागरत्नाकरे गन्धर्वराजस्य

जयति सकलसंपत्कल्पनाकामधेनु -
र्जडशशिदृषदां वाग्वारिनिस्यन्दचन्द्रः।
विविधसुकृतलभ्यः कोपि वाग्देवताया
दुरितदलनदक्षः स्नेहपूर्णः कटाक्षः।।

-हरिवंशविलासे
रामपण्डितसुतस्य नन्दपण्डितस्य

जलदुग्धनिर्णयविधौ यस्या वाहोऽपि विश्रुतो दक्षः।
सा सदसत्त्वविबोधकवागीशा स्तान्ममाद्य गतिः।।

-सुभा.सुधा.भा.

जिह्वारङ्गतले मृगाङ्ककलया सम्प्रोतमौलिर्मुदा
नित्यं नृत्यतु नूपुरामलमुखोदाराभिरामाङ्घ्रिका।
हेलास्फालनलोकनाखिलजगत्संदर्शिनी नर्तकी
क्षोणीरङ्गतलस्य संसद इयं विस्मापनी भारती।।

-ब्रह्मसिद्धेः भावशुद्धिव्याख्यायां आनन्दपूर्णमुनेः

ज्योतिस्तमोहरमलोचनगोचरं
तज्जिह्वादुरासदरसं मधुनः प्रवाहम् ।
दूरे त्वचः पुलकबन्धि परं प्रपद्ये
सारस्वतं किमपि कामदुघं रहस्यम् ।।

-सुभा.सुधा.भा.

ज्योतिः सत्त्वमयं यदुद्भवमिदं विष्वग्व्यनक्त्यञ्ज
विश्वं प्राक् प्रणवं क्षकारचरमं शास्त्राण्यभूवन् यतः।
आद्या मन्त्रमयी समस्तजगतां सृष्टिर्यतः शाश्वती-
मालम्बे परमेश्वरीं त्रिजगतां वाग्देवतामेव ताम् ॥

-सज्जन्मचिन्तामणौ रामसुतशिवस्य

तद्दिव्यमव्ययं धाम सारस्वतमुपास्महे।
यत्प्रसादात्प्रलीयन्ते मोहान्धतमसश्छटाः॥

-सुभा.सुधा.भा.

तन्वाना निजसेवकेमतिभरं वीणोल्लसन्मानसा
मञ्जुस्फाटिकमालया द्युतिमती पद्मासनोद्भासुरा।
धन्या पुस्तकधारिणी सितगरुद्वाहा धृता भीवरा
राकाशीतलधामकान्तिधवला साऽव्यादिगरामीश्वरा॥

-बालकृष्णभट्टकृत-विद्वद्भूषणस्य टीकायां

तमोगुणविनाशिनी सकलकालमुद्योतिनी
धरातलविहारिणी जडसमासविद्वेषिणी ।
कलानिधिसहायिनी लसदलोलसौदामिनी
मदन्तरवलम्बिनी भवतु कापि कादम्बिनी॥

-विद्वन्मोदतरंगिण्यां चिरञ्जीवभट्टाचार्यस्य

तव करकमलस्थां स्फाटिकीमक्षमालां
नखकिरणविभिन्नां दाडिमीबीजबुद्ध्या।
प्रतिपलमनुकर्षन् येन कीरो निषिद्धः
स भवतु मम भूत्यै वाणि ते मन्दहासः॥

-उद्भटसागरे कमलाकरस्य

तां भवानीं भवानीतक्लेशनाशविशारदाम् ।
शारदां शारदाम्भोदसितसिंहासनां नुमः॥

-भल्लटशतके भल्लटस्य

त्वदनुग्रहलेशमात्रलाभादियमुच्छृंखलगामिनी मनीषा ।
अभिकर्षति मामगम्यभूमौ शरणं मे भव शारदे नमस्ते।।

-नैषधीयचरितस्य टीकायां

दक्षे वराक्षवलयावभयं च वामे
या पुस्तकं च दधती विधिनेत्रपेया।
सा शारदाब्जनयना शरदिन्दुशोभा
भासास्वया हरतु मे हृदयान्धकारम् ।।

- वाल्मीकिकृत-योगवासिष्ठस्य टीकायां

दत्ताद्वाण्यधिविश्य मे करुणया तं ते विलासं वचः
पद्यैर्गद्यविमिश्रितैर्विरचितं हृद्यं बुधानां रसैः।
युक्तं भावविशेषशोभितमहं त्वां भारतीं नौमि तां
वीणागानविलासलोलधिषणां वर्णस्वरूपां सदा।।

- कविमनोरञ्जकचम्प्वां सीतारामसूरिणः

दयमानदीर्घनयनां देशिकरूपेण दर्शिताभ्युदयाम् ।
वामकुचनिहितवीणां वरदां संगीतमातरं वन्दे।।

-शङ्करविजयमकरन्दे

देवीं शारदकौमुदीमदहरस्फारप्रभामण्डली-
लेशक्लेशितदुस्तरान्तरतमस्तोमोद्भवापद्भराम् ।
सीमान्तान्तनिवेशितोज्ज्वलकलासर्वाङ्गनिर्य्यत् सुधा-
धाराधोरणिपूरिताम्बरतलां वन्दामहे शारदाम् ।।

-चतुर्वर्गचिन्तामणौ हेमाद्रिसूरिणः

दोर्भिर्युक्ता चतुर्भिः स्फटिकमणिमयीमक्षमाला दधाना
हस्तेनैके च पद्मं सितमपि च शुकं पुस्तकं चापरेण।
पाशं शङ्खेन्दुकुन्दस्फटिकमणिनिभाभा समानासमाना
सा मे वाग्देवतेयं निवसतु वदने सर्वदा सुप्रसन्ना।।

-सरस्वतीस्तोत्रे

द्वाः सर्वार्थसमागमस्य रसनारङ्गस्थलीनर्तकी
तत्त्वालोकनकज्जलध्वजशिखा वैदग्ध्यविश्रामभूः।
शृङ्गारादिरसप्रसादलहरी स्वर्लोककल्लोलिनी
कल्पान्तस्थिरकीर्तिरम्भ्रमसखी सा भारती पातु वः।।

-कीर्त्तिलतायां विद्यापतेः

धातुश्चतुर्मुखीकण्ठशृङ्गारकविहारिणीम् ।
नित्यं प्रगल्भवाचालामुपतिष्ठे सरस्वतीम् ।।

-सुभा.सुधा.भा.

ध्यायन्ती रामरूपं हृदयसरसिजे रामनामोद्गृणन्ती
वाचावाचामधीशा तदमलचरितं वीणया वादयन्ती।
शुभ्राशुभ्रांशुशुभ्रा शुककुसुमलसन्मौक्तिकाभूषिताङ्गी
संस्कुर्याद्वाग्विभङ्गी मम वदनसरोजातसङ्गीतभृङ्गी।।

-आनन्दरघुनन्दने

ध्वनिर्वर्णाः पदं वाक्यमित्यास्पदचतुष्टयम् ।
यस्याः सूक्ष्मादिभेदेन वाग्देवीं तामुपास्महे।।

-सरस्वतीकण्ठाभरणे

नखाग्रैः सदा वादयन्ती सतानैः
स्वरैः षट्जकैः संयुतानां च मन्त्री।
प्रवृद्धिं सतीं मे सदा देववन्द्या
सरोजासने देवि बुद्धिं करोतु।।

-भैरवप्रश्ने भैरवस्य

नमस्कृत्य परां वाचं देवीं त्रिविधविग्रहाम् ।
निजालङ्कारसूत्राणां वृत्त्या तात्पर्यमुच्यते।।

-अलङ्कारसर्वस्वे राजानकरुय्यकस्य

नमस्तेऽस्तु देवि त्वदीयप्रसादा-
ज्जडा वा शठाः पापिनो वा विमूढाः।

सदा शारदे त्वत्सुनीरप्रधौता-
अबुद्धाः प्रबुद्धाः प्रकाशं प्रयान्ति॥

-कात्यायनशुल्बसूत्रे

नमामि मानसोल्लासभावनाफलदायिनीम् ।
शारदां शारदाम्भोजविशदामभयप्रदाम् ॥

-भावप्रकाशने शारदातनयस्य

नादाम्बुधेः परं पारं किं न वेत्सि सरस्वति।
अद्यापि मज्जनभयात् तुम्बीं वहसि वक्षसि॥

-उद्भटसागरे पूर्णचन्द्रस्य

नाभीसरोरुहोच्चैर्वदनसरोजासनोपरि स्थित्वा।
त्रिभुवनमपूर्वमिव या प्रदर्शयति सा सरस्वती जयति॥

-रसमीमांसायाष्टीकायां गङ्गारामस्य

निखिलमनुजवन्द्यां श्वेतपद्मोपविष्टां
हिमसदृशसुरूपां चन्द्रवत्स्मेरहास्याम् ।
करधृतवरमुद्राभीतिपुस्ताक्षसूत्रां
सितवसनविभूषां भारतीं भावयामि॥

- ईश्वरकृष्णकृत-सांख्यकारिकायाष्टीकायां
सांख्यतत्त्वप्रकाशाख्यायां श्रीनिवासस्य

नित्यं श्वेतसरोरुहासनपरा या शुभ्रहाराम्बरा
वीणासद्वरदण्डमण्डितकरा देवी सदाडम्बरा।
यस्याः सर्वसुरासुरेन्द्रनिकरैर्भक्त्यार्चितं प्राप्तये
मच्चित्ते चरणाम्बुजं विजयते सा भारती मङ्गलम् ॥

-मातृकायां स्फुटश्लोकः

निश्वसितनिगममालां निरतिशयानन्दनीरनिधिवेलाम् ।
करविलसदक्षमालां निरतिशयानन्दनीरनिधिवेलाम् ॥

-कुवलयानन्दव्याख्यायां रसिकरञ्जिनी इत्याख्यायां गङ्गाधराध्वरिणः

नीहारसन्दोहशरीरकान्तिं मुक्तावलीराजितचारुकण्ठीम् ।
विपञ्चिकावादनघूर्णिताक्षीं नमामि वाणीं जगदीशकान्ताम्।।

-कृष्णभट्टीये कृष्णभट्टस्य

पञ्चाशद्वर्णभेदैरपरिमिततरैरर्थजातैश्चयुक्ता
नानालङ्कारस्म्या गणितगुणगणासाधुवृत्तैरुपेता।
वाक्सृष्टिर्यत्प्रसादात्प्रसरति रसनोपान्तदेशे निमेषा-
न्नित्यं चित्तेऽनुरक्ते वसतु मम सुखं भारती सा रसाढ्या।।

-भानुदत्तकृत-रसमञ्जर्याष्टीकायां व्यङ्ग्यार्थकौमुद्यां
त्र्यंबकसुतस्य अनन्तपण्डितस्य

पञ्चाशद्वर्णभेदैर्विहितवदनदोःपादयुक्कुक्षिवक्षो
देहां भास्वत्कपर्दाकलितशशिकलामिन्दुकुन्दावदाताम् ।
अक्षस्त्रक्पुस्तचिह्नाभयवरदकरां त्रीक्षणां पद्मसंस्था-
मच्छाकल्पावतुच्छस्तनजघनभरां भारतीं तां नमामि।।

-महालक्ष्मीरत्नकोशे शङ्करस्य

पद्मा पद्मासनस्था सहृदयसदया शारदा शारदाभ्रा-
दभ्रश्रीरक्षमालाभयवरसकलक्वाणवीणाङ्कपाणिः।
सानन्दस्पन्दमन्दस्मितमधुरसुधार्द्राधरान्तागमान्ता-
म्नाता माता गिरां मे नटतु च रसनैकान्तरङ्गेऽन्तरङ्गे।।

-कालिन्दीमुकुन्दचम्प्वां

परब्रह्मात्मिकां देवीं भुक्तिमुक्तिफलप्रदाम् ।
प्रणम्य स्तौमि तामेव ज्ञानशक्तिं सरस्वतीम् ।।

-वाल्मीकिरामायणस्य टीकायां तत्त्वदीपिकाख्यायां महेश्वरतीर्थस्य

पातु वो निकषग्रावा मतिहेम्नः सरस्वती।
प्राज्ञेतरपरिच्छेदं वचसैव करोति या।।

-सुभा.सुधा.भा.

पायाज्जाया पयोजातजन्मनो मन्मनोमुदम् ।
शारदा पारदासारतुल्यधावल्यधारिणी॥

-सूक्तिमु. हरिहरस्य

पाशाङ्कुशधरा देवी वीणापुस्तकधारिणी।
मम वाचि वसेन्नित्यं दुग्धकुन्देन्दुनिर्मला॥

-सङ्गीतसारामृते

पीत्वेव श्रुततोयानि यस्याः शुध्यन्ति देहिनः।
मुनिहंससमाकीर्णां तां नमामि सरस्वतीम् ॥

-कविरहस्ये हलायुधस्य

पीयूषाधारसिन्धोर्मधुरलहरिकाबन्धुरान्दोललोल-
श्रीमत् पादारविन्दोच्चलदमलरसस्यन्दगन्धप्रबन्धैः।
अन्धीकृत्यामरेन्द्रान् भ्रमरतनुधरान् भ्रामयन्ती स्ववीणा-
झङ्कारोङ्कारनादैर्दिशतु शुभरतिं भारते भारती वः॥

-कालिदासाख्यनाटके जीवन्यायतीर्थस्य

प्रणौमि क्वणदोङ्कारमणिघण्टाविभूषिताम् ।
कविलोककुटुम्बस्य कामधेनुं सरस्वतीम् ॥

-सुभा.सुधा.भा.

प्रत्यूहव्यूहविहतिकारकं परमं महः
अन्तःकरणशुद्धिं मे विदधातु सनातनम् ।
यत्प्रसादात्कवीन्द्रत्वं मन्दोऽपि लभते क्षणात्
तां शारदेन्दुस्वच्छाङ्गीं वन्दे देवीं सरस्वतीम् ॥

- तन्त्रसंग्रहव्याख्यायां

प्रफुल्लकमलानना सकलवेदविद्याधरी
कवीन्द्ररसनाग्रगा परमशुभ्रपद्मासना।
समस्तसुरवन्दिता विमलकुन्दमुक्तावली
करीन्द्रशशिसन्निभा जयति शारदा सारदा॥

- भावप्रकाशे जीवनाथस्य

प्रसन्नानां गभीराणां वचसां देशिकेशितुः।
भावस्त्वत्कृपया चित्ते भासतां मम शारदे॥

- विवेकचूडामणौ शङ्करभगवत्पादस्य

भारति मञ्जुलचञ्चलदेहे भूषितभूरिविभूषणसारे।
तत्त्वसरोरुहवासिनि तत्त्वं दर्शय कुन्दनिभे प्रणतिर्मे॥

- प्रश्नतत्त्वे चक्रपाणेः

सन्मुखे सुखविन्यस्तसविलासपदक्रमा।
हंसीव विहरन्ती स्तात् सरसीव सरस्वती॥

- अवन्तिसुन्दरीकथासारे

मयि वितरतु वाचामीश्वरी प्रेमपूर्णां
दृशमथ गुरुवर्याः सन्तु पूर्णप्रसादाः।
स्मरहरपुरवासास्तातपादास्तथा मे
यदनुपमदयादृग्लेशसर्वस्वता मे॥

-चन्द्रप्रभाचरिते

महामायेति या गीता चिन्मयी मुनिसत्तमैः।
तनोतु वाग्विलासं मे जिह्वायां सा सरस्वती॥

-प्रासादमण्डने सूत्रधारमण्डनस्य

मात! हंसमयूरकीर-रववद्गुञ्जद्विपञ्चीप्रिये
शब्दार्थोभयसंम्पदुच्चलहरीमास्ये ममोत्थापय।
येनेयं जगती चमत्कृतिमियान्मत्काव्यवर्णत्त्विषा
त्वच्छब्दामृतबिन्दुपायिबिबुध-स्वान्ताम्बुजश्रीपुषा॥

-धन्वन्तरिजन्मामृते प्रभुदत्तशास्त्रिणः

मान्दीतमोऽपनयना नयनाभिरामा
रामा रमारमणनाभिसरोजभूतेः।
भूतेर्गिरां वितरणे तरणे सहाया
ऽहायार्णवे च भवताद् भवतापनुत्तौ॥

-वाणीविलसिते रामशरणशास्त्रिणः

मुखेषु वेधसो वाणीं विहरन्तीमुपास्महे।
विडम्बयन्तीमब्जेषु क्रीडन्तीं कमलालयाम् ॥

-जानकीपरिणये चक्रकवेः

मौलिस्रग्गन्धगुञ्जन्मधुकरतरुणीं दत्ततालामिवौच्चै-
र्गायन्तीमात्तवीणाश्रुतिकलितलयां चारुबन्धप्रबन्धाम् ।
स्वान्तोदञ्चत्सुधाख्यामृतजलधिसुधास्वादमास्वादयन्तीं
वन्दे मन्देतरेन्दुप्रकटतररुचां शारदां सर्वदा नः॥

-वैद्यकल्पतरोः वैजनाथस्य

यत्कृपाङ्कुशघातेन निरस्ता वादिवारणाः।
न शक्ताः पुरतः स्थातुं वाग्देवीं तामुपास्महे॥

-व्याकरणदीपिकायां ओरंभट्टस्य

यत्कृपालवमवाप्य मूढधी-
र्जीवति प्रतिपदं सभाजितः।
मन्दतामरसतां निरस्य सा
वाचि सिञ्चतु रसं सरस्वती॥

-विनोदलहर्य्याम् माधवस्य

यत्कृपालवमात्रेण मूको भवति पण्डितः।
वेदशास्त्रशरीरां तां वाणीं वीणाकरां भजे॥

-शारीरकमीमांसायाष्टीकायां रत्नप्रभाख्यायां गोविन्दानन्दस्य

यदीयवदनस्फुरन्नवनिशाकरप्रोज्वला-
मुपास्य सुरभारतीमहमभूवमेतादृशः।
तदीयचरणारुणाम्बुजपरागपुञ्जे कथं
न मत्प्रणतिसन्ततिर्भ्रमरभामिनीवोल्लसेत् ॥

-वेदान्तपरिभाषायाष्टीकायां भगवती इत्याख्यायां आनन्दझा महोदयस्य

ययैवादौ सृष्टा नरजगति सभ्यत्वसरणि-
र्यदीयं साम्राज्यं क्वचनसमये प्राज्यमभवत् ।

यतोऽमूः संभूता जगदुदरसूता नरगिरो
गिराऽसौ गैर्वाणी जयति वरवाणीपरिवृढा ॥

-गीर्वाणगिरागौरवे मथुरानाथशास्त्रिणः

यस्या कृपा वशयते नरराजलक्ष्मी
देवान्प्रसाद्य किल कामदुघान्करोति।
धर्मार्थकाममपवर्गमपि प्रदत्ते
श्रेयांसि सा मम तनोतु सरस्वतीयम् ॥

-श्रीशारदोपायने रघुवीरमिश्रस्य

यस्यानिवासाद्वदनारविन्दे मन्दोपि वाचस्पतितामुपैति।
सहस्त्रसंपूर्णसुधासुभासा सरस्वती सा सृजतान्मतिं मे॥

-सारस्वतप्रसादे वासुदेवस्य

यस्यानुग्रहवशतोऽच्युतादिदेवाः संसिद्धिं विबुधवरोचितां प्रयाताः।
भारत्याः कुवलयपत्रलोचनाया भूत्यै स प्रभवतु मे कृपाकटाक्षः॥

-जटापटलस्य टीकायां दीपिकाख्यायां धरणीधरसुतदयाशङ्करस्य

यस्याः प्रसादपरमाणुरसायनेन
कल्पान्तरे सुकविकीर्तिशरीरमस्ति।
या कामधेनुरिव कामशतानि दुग्धा
देवी प्रयच्छति नमामि सरस्वतीं ताम् ॥

-सदुक्ति. पुरुषोत्तमदेवस्य

यस्याः प्रसादमासाद्य काव्यं लक्षणलक्षितम् ।
कुर्वन्त्यपि जडाः सा मे मुखाब्जेऽस्तु सरस्वती॥

-सिद्धान्तसार्वभौमे मुनीश्वरस्य

यस्याः प्रसादमासाद्य जडो याति बुधार्यताम् ।
ब्राह्मी जयति सा वाणी वीणापुस्तकधारिणी॥

-सिद्धान्तशिरोमणेष्टीकायां वासनाख्यायां नृसिंहदैवज्ञस्य

यस्याः प्रसादविरहे मूकत्वं सर्वदा स्फुटम् ।
तामेकां वागधिष्ठात्रीं महादेवीमुपास्महे।।

-सुभा.सुधा.भा.

यस्याः स्मरणमात्रेण वाग्विभूतिर्विजृम्भते।
सा भारती सुखं नित्यं रमतां मन्मुखाम्बुजे।।

-बालरामभरते बालरामवर्मणः

यस्याः स्वरूपमतुलं ज्ञातुं ब्रह्मादयोपि न स्पष्टाः।
कामगवीसुकवीनां सा जयति सरस्वती देवी।।

-ज्ञानमञ्जरिकायां ऋषिकवेः

या कुन्देन्दु तुषारहारधवला या शुभ्रवस्त्रावृता
या वीणावरदण्डमण्डितकरा या श्वेतपद्मासना।
या ब्रह्माच्युतशङ्करप्रभृतिभिर्देवैः सदा वन्दिता
सा मां पातु सरस्वती भगवती निश्शेषजाड्यापहा।।

-सुभा.सुधा.भा.

या जाया जगदीशितुर्जनिमतामम्बा समस्तस्य या
सत्तास्फूर्तिकरी चितिस्त्वविषयस्तत्वं च यद्गोचरे।
आदिक्षान्तसुवर्णवर्णरचितप्रौढाङ्गयष्टिं मुदा
मज्जिह्वामणिमन्दिरे शुभपदैर्नर्नर्त्तु सा भारती।।

-संक्षेपशारीरकस्य व्याख्यायां सिद्धान्तदीपाख्यायां विश्वदेवस्य

या नित्या कुलकेलिशोभितवपुर्बोधोदिता जृम्भते
पूर्णाभामृतकुण्डलीपरपरा मंत्रात्मिका सिद्धिदा।
मालापुस्तकधारिणी त्रिनयना कुन्देन्दुवर्णाचला
नित्यानन्दकुलप्रकाशजननीं वाग्देवतामाश्रये।।

-नागार्जुनकामरत्ने नागार्जुनस्य

या ब्रह्माद्यैरलक्ष्या त्रिभुवननमिता ब्रह्मपुत्री शिवाद्या
ब्रह्माविष्णुश्च रुद्रः प्रणमति बहुशो यां सदानन्दरूपाम् ।

या वा चैतन्यरूपे च वसति सकलप्राणिनिद्राक्षुधाख्या
सा नित्यं सुप्रसन्ना वितरतु विभवं विश्वरूपा च लोके।।

-वास्तुशास्त्रराजवल्लभे सूत्रधारमण्डनस्य

यां कन्दप्रभवन्मृणालविलसत्तन्त्वात्मना मूर्द्धगां
शक्तिं कुण्डलिनीं समुज्ज्वलसुधाधाराः किरन्तीं बुधाः।
चञ्चच्चन्द्ररुचिं विचिन्त्य कवितैश्वर्येण वाचस्पतिं
धिक्कुर्वन्ति मुदेऽस्तु सा भगवती श्रीशारदा देवता।।

-वादीन्द्रपण्डितप्रणीतस्य महाविद्याविडम्बनस्य
टीकायां आनन्दपूर्णभुवनसुन्दरयोः

या योगिभिर्योगसमाधिगम्या
नागं हरन्ती विदुषां हृदिस्था।
शक्त्यादिरूपत्रयमादधाना
सा भारती मे हृदिगा सदास्तु।।

-वृत्तिचन्द्रिकायां घासीरामस्य

या वाणी चतुराननस्य वदनेष्वङ्केऽपि पर्यङ्किनी
त्वावेधः कृमिकं जगत्रयमिदं यत्कर्तृ वाग्व्यापृति।
सा मां विभ्रमसंभ्रमभ्रमदलिभ्रान्तिप्रदाक्ष्यंशुना
रक्षत्वक्षतचन्द्रकान्तवदना पीयूषसंवर्षिणा।।

-हरिश्चन्द्रचरित्रचम्प्वां गुरुरामस्य

या शुक्लाम्बरसम्वृता सुरनरव्याहाररूपा परा
या शुक्लाब्जकृतासना सुसुषमा शुभ्रांशुदीप्तिप्रभा।
या शुक्लोत्पलभूषिता मखवराराध्या जगद्भाषिणी
सा वाणी रसनालये लसतु मे दोर्वाञ्छनं वाञ्छने।।

-आरव्ययामिन्यां जगद्बन्धोः

राकाशशाङ्कशतकोटिविजित्वरास्या
भासां पतिं नखरुचैव तिरोदधाना।
वीणागुणक्वणनचञ्चलपाणिपद्मा
वाग्देवता सपदि मे हृदि सन्निधत्ताम् ।।

-विद्वच्चरितपञ्चके नारायणशास्त्रिणः

लक्ष्मीमुखमालोकति भगवति सेर्ष्या वचोदेवी।
ननु वदनान्निजवीणाक्वणनमिषाज्जयति हुंकृतिं ददती॥

-शृङ्गारकलिकात्रिशत्यां कामराजदीक्षितस्य

ललितपदक्रमरम्या रञ्जितभावा यथैव शैलूषी।
मम जिह्वारङ्गतले नृत्यतु देवी सरस्वती नित्यम् ॥

-सरस्वतीस्तोत्रे

वचांसि वाचस्पतिमत्सरेण साराणि लब्धुं ग्रहमण्डलीव।
मुक्ताक्षसूत्रत्वमुपैति यस्याः सा सप्रसादाऽस्तु सरस्वती वः॥

-विक्रमाङ्कदेवचरिते बिल्हणस्य

वन्दामहेऽभिवन्द्यां मन्दस्मितनिन्दितेन्दुसौन्दर्याम् ।
वाचां प्रचोदयित्रीं वरदां वागीश्वरीं देवीम् ॥

-बोधायनीयब्रह्मकर्मसमुच्चये

वन्दे कवीन्द्रवक्त्रेन्दुलास्यमन्दिरनर्तकीम् ।
देवीं सूक्तिपरिस्पन्दसुन्दराभिनयोज्वलाम् ॥

-वक्रोक्तिजीविते

वन्दे मानससंफुल्लसरोजाननहंसजाम् ।
सरस्वतीं चतुर्वक्त्रां चन्द्ररेखावतंसकाम् ॥

-तार्किकरक्षाटीकायां लघुदीपिकाख्यायां ज्ञानपूर्णस्य

वन्देऽरविन्दसमधिष्ठितपादपद्मां
कुन्देन्दुसुन्दररुचिञ्जगदेकवन्द्याम् ।
अर्द्धेन्दुमण्डलसमुल्लसदुत्तमाङ्गीं
पूर्णेन्दुबिम्बवदनां वचनाधिदेवीम् ॥

-जलाशयोत्सर्गपद्धतौ ब्रजनाथसुत-हर्षनाथस्य

वन्दे शारदपार्वणेन्दुधवलां वाणीं मरालेन्द्रगां
मालापुस्तवराभयानि सततं हस्ताम्बुजैर्बिभ्रतीम् ।

मूकानामपि या सकृत् प्रणमतां मूकत्वतामिस्त्रतां
हत्वा द्राक् तनुतेऽत्र चित्तकुमुदामन्दप्रमोदश्रियम् ॥

-पृथ्वीन्द्रवर्णोदयकाव्ये ललितावल्लभस्य

वन्दे सरस्वतीं नित्यं वाङ्मनःकायकर्म्मभिः।
वाक्समुद्रो यया नद्धो दुस्तरस्त्रिदशैरपि॥

-पञ्चतन्त्रोपाख्याने

वन्देऽहं वन्दनीयानां वन्द्यां वाचामधीश्वरीम्।
कामिताशेषकल्याणकल्पनाकल्पवल्लिकाम् ॥

-प्रायश्चित्तनिर्णये

वाग्गुम्फान्यत्प्रसादाददतिविमलधियः कुर्वते द्राक्कवीन्द्राः
शश्वद् यन्नीरसं तन्नवरसरुचिरं यद्वशाद् भासयन्ति।
व्याख्यामुद्राक्षमालाऽभयवरविल सद्बाहुवल्लीं त्रिनेत्रां
वन्दे वन्दारुवृन्दारकमुनिनिकरैर्वन्दितां भारतीं ताम् ॥

-लीलावत्याष्टीकायां भास्कराचार्यस्य

वाग्देवता जयति या जननान्तरेऽपि
सङ्गं न मुञ्चति कदाचिदिति प्रसिद्धिः।
तस्मादनेकजननोचितसाहचर्य्यां
भक्तास्यलास्यरसिकां प्रणमन् भजे ताम् ॥

-श्रीशारदोपायने रघुवीरमिश्रस्य

वाग्विभूतिप्रदादेवी या श्वेताम्बुरुहस्थिता।
गोक्षीरधवलाकारा स्वयं तिष्ठतु वाचि मे॥

-सर्वार्थचिन्तामणौ

वाचां देवि निषेविताऽसि सततं तेनाहमभ्यर्थये
भूया एव तथा मदीयरसनारङ्गे नटन्तीं सती।
येनान्यूनगुणा सुवर्णवलितालङ्कारसम्भाविता
नानाश्लेषवती चमत्कृतपदा सम्येन सम्भाव्यसे॥

-जानराजचम्प्वां कृष्णदत्तस्य

वाणीक्रमन्तिकावेणीं एणीदृग्मणिलोचनाम् ।
शोणाधरामहं वन्दे वीणाधरकराम्बुजाम् ।।

-जैमिनिभूषणे रामचन्द्रस्य

वाणीं काणभुजीमजीगणदवाशासीच्च वैयासिकी-
मन्तस्तन्त्रमरंस्त पन्नगगवीगुम्फेषु चाजागरीत् ।
वाचामाकलयद्रहस्यमखिलं यश्चाक्षपादस्फुरां
लोकेऽभूद्यदुपज्ञमेव विदुषां सौजन्यजन्यं यशः।।

-माघकृत-शिशुपालवधस्य टीकायां सर्वंकषाख्यायां मल्लिनाथस्य

वाणीं पूर्णनिशाकरोज्ज्वलमुखीं कर्पूरकुन्दप्रभां
चन्द्रार्द्धांकितमस्तकां निजकरैः संविभ्रतीमादरात् ।
वीणामक्षगुणं सुधाढ्यकलशं विद्यां च तुङ्गस्तनीं
दिव्यैराभरणैर्विभूषिततनुं हंसाधिरूढां भजे।।

-सरस्वतीस्तोत्रे मातृकायां स्फुटश्लोकः

वाणीं वीणाकरां वन्दे वन्दारुजनवत्सलाम् ।
शुम्भन्मन्मथकुम्भीशकुम्भदम्भहरस्तनाम् ।।

-देवाङ्गदचरित्रे

वायुर्वाति न भाति वासरमणिश्चन्द्रो न विद्योतते
यत्रास्ते न मनोगतिस्तदखिलं पश्यन्ति सत्सूरयः।
यस्याः प्राप्य कृपाकणं करधृतं धात्रीफलं स्याद्यथा
सा कण्ठाम्बुजवासिनी भगवती वागीश्वरी पातु नः।।

-वाणीविलसिते त्रिपाठिनो रामशरणस्य

विद्याकैरवकौमुदीं श्रुतिशिरः सीमन्तमुक्तामणिं
दारान् पद्मभुवस्त्रिलोकजननीं वन्दे गिरां देवताम् ।
यत्पादाब्जनमस्क्रिया सुकृतिनां सारस्वतप्रकिया
बीजन्यासभुवो भवन्ति कवितानाट्यैकजीवातवः।।

-प्रतापरुद्रीये विद्यानाथस्य

विद्वज्जनमनःकान्तकैरवानन्दकौमुदीम् ।
नमामि शारदां देवीं नामरूपाधिदेवताम् ॥

-अलङ्कारसंग्रहे अमृतानन्दयोगिनः

विधिमुखाम्बुजकाननचारिणी
विशदहंसवधूर्भवनान्तरे।
विकचमानसवारिरुहे मम
प्रथितवैभववाग् रमतां मुदा॥

-नाडीज्ञानविधौ रघुनाथपण्डितमनोहरस्य

विनायकोदारपदारविन्दयोः समेत्य सेवातरणिं तराम्यहम् ।
असीमवैराग्यमर्षीमलीमसी सरस्वती मे प्रसरीसरीति चेत् ॥

-व्रजकौतुकामृते कुञ्जनविहारकविचन्द्रस्य

विश्वं प्रकाशयन्ती व्यापारैर्लक्षणाभिधाध्वननैः।
नयनैरिव हरमूर्तिर्विविधोपास्या सरस्वती जयति॥

-वृत्तिवार्तिके अप्पयदीक्षितस्य

वीणाक्वाणलयोल्लासिलोलदङ्गुलिपल्लवः।
भारत्याः पातु भूतानि पाणिर्लसितकङ्कणः॥

-सदुक्ति. कङ्कणस्य

वीणापुस्तकहस्तमस्तकविधुः शुक्लाम्बुजन्मासना
चन्द्रोद्भासविलासहासवदना विद्वज्जनैर्वन्दिता।
शास्त्रव्यस्तसमस्तवेदविदिता विध्वस्तविश्वाज्ञता
दत्तोद्दामधिमामकीनवदने वर्वर्त्तु वागीश्वरी॥

-सङ्गीतरघुनन्दने विश्वनाथसिंहजूदेवस्य

वीणाप्रवीणा सततं मदीया करद्वयी कान्तिमयी विभाति।
सा शुद्धवेषा कुमुदप्रकाशा भासा ममाशा परिपूरणेऽस्तु॥

-राघवोल्लासे अद्वैतयतेः

वीणावादनदम्भेन शास्त्रतत्वविकासिका।
हंसासनमुपासीना वाग्देवी श्रेयसेऽस्तु नः॥

-सुभा.सुधा.मा.

वेदानुदारध्वनिवादयन्ती
वीणामनुल्लङ्घितकर्णनादाम् ।
कदम्बमूलस्थितिरस्तु भूत्यै
कादम्बिनी सच्छविरम्बिका नः॥

-प्रद्युम्नोत्तरचरिते मृत्युञ्जयस्य

वैधात्रकण्ठमविकुण्ठमुपाश्रयन्तीं
विद्वज्जनाननसरोजविराजमानाम् ।
वीणागुणक्वणनचञ्चलपाणिपद्मां
वाग्देवतां शशिकलाङ्कितमौलिमीडे॥

-जयदेवकविकृत-चन्द्रालोकस्य टीकायां
पौर्णमासीत्याख्यायां नन्दकिशोरशर्मणः

शब्दाम्भोधिर्यतोऽनन्तः कृतोप्यागमसंभवः।
स्वानुबोधैकमानाय तस्मै वागात्मने नमः॥

-शब्दमौक्तिकव्याख्यायां

शरणं करवाणि शर्मदं ते चरणं वाणि चराचरोपजीव्यम् ।
करुणामसृणैः कटाक्षपातैः कुरु मामम्ब कृतार्थसार्थवाहम् ॥

-ज्योतिषकल्पद्रुमे

शरदिन्दुकान्तिरुचितां सकलपदार्थप्रकाशिकामं ।
सन्देहध्वान्तहन्त्रीं वाचामधिदेवतां वन्दे ॥

-श्रीकृष्णप्रतिष्ठाविधौ

शरदिन्दुविकासिमन्दहासां स्फुरदिन्दीवरलोचनाभिरामाम् ।
अरविन्दसमानसुन्दरास्यामरविन्दासनसुन्दरीमुपासे॥

-देवीमानसपूजायां शङ्कराचार्यस्य

शशिहारगौरवरदेहलता शरदिन्दुबिम्बवदना विमला।
मम शारदा दिशतु बुद्धिमजं पदमच्युतस्य समुपैमि यया।।

-भागवतव्याख्यायां तत्त्वप्रदीपिकायां

शश्वत्पुण्यहिरण्यगर्भरसना-सिंहासनाध्यासिनी
सेयं वागधिदेवता वितरतु श्रेयांसि भूयांसि वः।
यत्पादामलकोमलाङ्गलिनखज्योत्स्नाभिरुद्वेलितः
शब्दब्रह्मसुधाम्बुधिर्बुधमनस्युच्छृङ्खलं खेलति।।

-चतुर्वर्गचिन्तामणौ हेमाद्रिसूरिणः

शारदाब्जधवला सुराबलासेविता सुकविता विशारदा।
शारदा दिशतु शं सदा मुदा नारदादिवरदाकसारदा।।

-दृक्कर्मव्याख्यायां नीलाम्बरस्य

शारदाम्भोजवदनां शारदेन्दीवरेक्षणाम् ।
नमामि शारदान्देवीं शारदेन्दुकरप्रभाम् ।।

- सङ्गीतरघुनन्दने विश्वनाथसिंहजूदेवस्य

शारदा शारदाम्भोजवदना वदनाम्बुजे।
सर्वदा सर्वदास्माकं सन्निधिं सन्निधिं क्रियात् ।।

-माघकृत-शिशुपालवधस्य टीकायां सर्वंकषाख्यायां मल्लिनाथस्य

शारदा शारदाम्भोदविशदा भक्तसारदा।
सा रदांशुहृतध्वान्ता पायात् सर्वविशारदा।।

-पारिजातहरणचम्प्वां श्रीकृष्णस्य

शास्त्रज्ञो न च शाब्दिकोऽस्म्युत महासाहित्यविनाऽस्म्यहं
नो जानाम्यहमद्भुतार्थविलसत्सत्काव्यसंयोजनाम् ।
देवी काचिदिहाऽब्जयोनितनया पाणिस्थवीणाकल-
क्वाणानन्दरता निरीक्ष्य सुजडं ब्रूते तु मत्कण्ठगा।।

-अजितोदये जगजीवनभट्टस्य

शुद्धब्रह्मविचारसारपरमामाद्यां जगद्व्यापिनीं
वीणापुस्तकधारिणीमभयदां जाड्यान्धकारापहाम्।
हस्तैः स्फाटिकमालिकां च दधतीं पद्मासने संस्थितां
वन्दे तां परमेश्वरीं भगवतीं बुद्धिप्रदां शारदाम्॥

-दानसिन्धौ शङ्करस्य

शुद्धे हृदयक्षेत्रे वल्लीमिव रोपयन्ति यां मुनयः।
मोक्षमहाफलजननी ब्राह्मी सूक्ष्मापि सा जयति॥

-अभिलेखे

शृङ्गश्रेणीव वेणीविलसितवदनाम्भोजसौभाग्यसक्ता-
भक्तास्तुष्यन्त्यथैणीक्षणनिपुणकृपापाङ्गसङ्गेन यस्याः।
पाणौ वीणाप्रवीणाचरकरणविधौ श्रेयसे सा ममास्तां
वाणी माणिक्यवर्णाङ्गुलिरिह विहगोत्तंसहंसातिरूढा॥

-भास्कराचार्यकृत-लीलावत्याष्टीकायां सूर्यकवेः

शेषक्षीरसमुद्रकौस्तुभमणीन् विष्णुर्मरालं विधिः
कैलासाद्रिशशाङ्कजह्नुतनयानन्द्यादिकान् शङ्करः।
यच्छुक्लत्वगुणस्य गौरववशीभूता इवाशिश्रियु-
स्तां विश्वव्यवहारकारणमयीं श्रीशारदां संश्रये॥

-हेमचन्द्राचार्यकृत-अभिधानचिन्तामणेष्टीकायां
मणिप्रभाख्यायां हरगोविन्दशास्त्रिणः

श्रीकान्तनाभिप्रभवाननेन्दोः
कुन्दोज्ज्वलाकान्तिरिवातनोतु।
सरस्वती वः कवितावितान-
कुमुद्वतीमन्वहमद्वितीयम्॥

-वसन्तविलासमहाकाव्ये बालचन्द्रसूरिणः

श्रीकान्तनाभिसरसीरुहलब्धजन्म-
वक्त्राम्बुजावलिविहारविदग्धहंसी।

पद्मासना सितदुकूलयुगं वसाना
सा भारती भवतु मे वरदाऽवदाता।।

-सोमेश्वरदेवभट्टकृत-रामशतकस्य टीकायां हृदयरञ्जिनी इत्याख्यायां

श्रीवाणीपरमानन्दनिदानं पदपङ्कजम् ।
अज्ञानान्धनिमग्नानां प्रकाशनमुपास्महे।।

-विश्वनिघण्टौ विश्वकवेः

श्रीशारदां च वन्दे वागीशां शारदारविन्दास्याम् ।
प्रणताघहराम्बुजनिलयापचिता तनोतु मे सुमतिम् ।।

-शंकराचार्यचम्पूकाव्ये बालगोदावर्याः

श्री शारदे! शत्रुदलप्रचण्डं
गच्छाद्रिदुर्गं द्रुतमेव हन्तुम् ।
पद्मासनं त्वञ्च विहाय शीघ्रं
वीणां परित्यज्य गृहाण शस्त्रम् ।।

-वीरोत्साहवर्द्धने सुरेशचन्द्रत्रिपाठिनः

श्रीहरिचरितमुदारं रचयितुमनसो ममाखिलाधारम्।
अनवधिकरुणाजलनिधिरधिरसनं शारदा सदा नयतु।।

-श्रीहरिचरितमहाकाव्ये हरिपद्मनाभशास्त्रिणः

श्रुतिगम्यां भावहृद्यां निरवद्यां रसात्मिकाम्।
शुद्धानन्दां चित्स्वरूपां ब्राह्मीं देवीं स्तुमः सदा।।

-दण्डीकृत-काव्यादर्शस्य टीकायां रङ्गाचार्यशास्त्रिणः

श्रुत्वाऽपि माधवः स्वामी सपत्नीति हरिप्रिया।
तस्मिन्नेव स्थिरा या स्यात् तां नमामि सरस्वतीम् ।।

-उद्भटसागरे उद्भटसागरस्य

श्रेयो मे विदधातु शारदशशिश्रीभासुराभा सुरा-
हारासारनिरासकारिमधुरव्याहारिणी हारिणी।

मुक्ताभूषणपोषणस्मितलवश्रीसाधुनासाऽधुना
लावण्येन निजेन निर्जितवती रम्भारती भारती।।

-साहित्यरत्नाकरे धर्मसूरिणः

श्वेतपद्मासना देवी श्वेतपद्मोपशोभिता
श्वेताम्बरधरा देवी श्वेतगन्धानुलेपना।
अर्चिता मुनिभिस्सर्वैः ऋषिभिः स्तूयते सदा
एवं ज्ञात्वा सदा देवीं वाञ्छितं लभते नरः।।

-सरस्वतीस्तोत्रे

सकलकविजनम्बा सर्वलोकावलम्बा
परिमलनिकुरुश्वा भारभास्वन्नितम्बा।
विमलवदनबिम्बा विश्वसद्वक्त्रलम्बा
रमणगुणकदम्बा राजते शारदाम्बा।।

-तालदीपिकायां गोपतिप्पभूमिपालस्य

सन्मानसावासविलासहंसी कर्णावतंसी कृतपद्मकोशा।
तोषादशेषाभिमतम्बिशेषादेषापि भाषा भवतान्ददातु।।

-चक्रफलादेशे शिवरामपण्डितस्य

सरस्वति महादेवि कुमारि ब्रह्मचारिणि।
ज्ञानतो ज्ञानरूपा मे देहि विद्यासरस्वतीम् ।।

-सुभाषितग्रन्थे

सरस्वतीकराम्भोजनखकोणनिनादिता।
वीणावाणीपटुत्वं मे दिशत्वस्मिन्समुद्यमे।।

-कुण्डकल्पलतायां ढुण्ढिराजस्य

सरस्वती भूतिविजृम्भणाय सरस्वतीं तां शरणं भजामः।
यस्याः कटाक्षक्षणवीक्षणेन भवन्ति मूका अपि वावदूकाः।।

-कविराक्षसीयव्याख्याने नागड़स्य

सान्द्रानन्दवचः प्रपञ्चनरणन्मञ्जीरमञ्जुध्वनि-
र्वाणी नृत्यमहो करोति रसनारङ्गस्थले सत्कवेः।
यस्या एव नियोगपालनपरा संसारसारयिता
सेयं कापि नवीननीरदघटाकारा चिरं पातु वः ॥180॥

-सकलरसासारसंग्रहे अभिनवकालिदासस्य

सा भारती वो विभवाय भूयाद्
यद्वल्लकीगीतरसेन लक्ष्मीः।
कराग्रजाग्रत्कमले वसन्ती
सहानवस्थाव्रतभङ्गमाप॥

-सङ्गमनीपत्रिकायां

सितवस्त्रपरीधानां मुक्तामणिविभूषिताम् ।
एवं ध्यायेत्सुसौम्यां च चंद्रायुतसमप्रभाम् ॥

-दशहरास्तोत्रे

सिद्धान्तमौपनिषदं शुद्धान्तं परमेष्ठिनः।
शोणाधरं महः किञ्चिद्वीणाधरमुपास्महे॥

-पाराशरीहोरायां

सिद्धिं विभर्ति सहजप्रतिभाप्रगल्भां
यस्याः कृपापरिणतिः प्रणतस्य पुंसः।
दिव्य-प्रभापरिगता शरदिन्दुकान्ता
रङ्गं प्रसादयतु साद्य सरस्वती नः॥

-सेतुवन्धे वलभद्रप्रसादशास्त्रिणः

सिद्धिं साध्यमुपैति यत् स्मरणतः क्षिप्रं प्रसादात्तथा
यस्याश्चित्रपदास्वलङ्कृतिरलं लालित्यलीलावती।
नृत्यन्तीमुखरङ्गमेव कृतिनामाभाति या भारती
तां तं च प्रणिपत्य गोलममलं बालावबोधं ब्रुवे॥

-सिद्धान्तशिरोमणौ भास्कराचार्यस्य

सुतन्त्रविद्धीबिसिनीं विकाशिनीं
मुनेर्मनोमञ्जुनभोनिवासिनीम् ।
अशेषबालिश्यतमिस्त्रनाशिनीं
नमामि वाणीं द्युमणिस्वरूपणीम् ।।

-आरव्ययामिन्यां जगद्बन्धोः

सुधाकरसुधाकराच्छरदभास्वराभास्वरा-
ञ्चितक्रमविपञ्चिकाक्वणनसादरा सादरा।
विरिञ्चिनवमोहनागमविशारदा शारदा
मदीयरसनाङ्गणे नटतु सर्वदा सर्वदा।।

-भोजराजकृत-चम्पूरामायणस्य टीकायां
साहित्यमञ्जूषाख्यायां रामचन्द्रबुधेन्द्रस्य

सुरासुरैः सेवितपादपङ्कजा
करे विराजत्कमनीयपुस्तका।
विरिञ्चिपत्नी विमलाम्बुजेस्थिता
सरस्वती नृत्यतु वाचि मे सदा।।

-धारणासरस्वतीमंत्रस्तोत्रे

सूक्ष्माय शुचये तस्मै नमो वाक्तत्त्वतन्तवे।
विचित्रो यस्य विन्यासो विदधाति जगत्पटम् ।।

-सुभा.सुधा.भा.

सौवर्णाङ्गी सुघनचिकुरा प्रोल्लसल्लोचनाब्जा
मुक्तोद्भासिश्रुतिरनुपमभ्राजदङ्गाऽन्वनङ्गा।
दोषास्पृष्टा सगुणसुरसाऽलङ्कृतिश्चारुवृत्तिः
सौभाग्याढ्या विशदवसना भारती मां पुनातु।।

-बोधैक्यसिद्धौ

संसारमरूसञ्चारतृषितानां शरीरिणाम् ।
सुधाकादम्बिनीं वाणीं वीणापाणिमुपास्महे।।

-साहित्यकण्टकोद्धारे

संस्कुरुतां मम वाचं सरस्वती रसवतीं रसवतीवत् ।
यत्पदपङ्कजसेवां सृजति मरालीवदमराली॥

-रत्नाकरावतारिकाद्यश्लोकशतार्थ्यां जिनमाणिक्यगणिनः

स्फटिकमणिमयाक्षस्त्रक्सुधापूर्ण -
चञ्चत्कनककलशवीणापुस्तकान्यादधाना।
सकलविबुधवन्द्या वाङ्मयब्रह्ममूर्ति -
र्ममकमलदलाक्षी देवता संनिधत्ताम्॥

-विष्णुभक्तिकल्पलतायां पुरुषोत्तमाचार्यस्य

हृदयभुवि मुनीन्द्रैः सेविता नारदाद्यै-
स्तनुरुचिभिरजस्त्रं पारदाभां पिबन्ती।
अतिविततगभीरग्रन्थसिन्धाविदानीं
प्रभवतु करुणातः शारदा पारदा नः॥

-वीरमित्रोदये तीर्थप्रकाशे मित्रमिश्रस्य

हंसासनां कनकपङ्कजकेसराभां
रत्नोत्तमोज्ज्वलितमण्डनमण्डिताङ्गीम् ।
ब्राह्मीं समुज्ज्वलकमण्डलुमक्षसूत्रं
संबिभ्रतीं सुरनुतां प्रणमामि नित्यम् ॥

-श्वेतकालीमातृकास्तोत्रे

हंसासीना हसन्ती मृदुमधुरकलां वादयन्ती स्ववीणां
तत्त्वग्रामं समस्तं प्रकटमविकलं सन्नयन्ती विकासम् ।
मुक्तामालां दधाना गुणिगणमहिता स्तूयमाना सुरेन्द्रै-
र्वागीशा सुप्रसन्ना निवसतु वदनाम्भोरुहान्तः सदा मे॥

-सुभा.सुधा.भा.

ब्राह्मी

अथानन्दमयीं ब्राह्मीं त्रिगुणां निर्गुणात्मिकाम्।
वन्देऽहं नीलकुहरत्विषां स्मितविलासिनीम्।।

-आनन्ददीपिनीटीकायां ब्रह्मानन्दसरस्वत्याः

महाविद्याः

कामाख्या

ॐकारोत्तमरम्यहर्म्यनिलयां प्रासादमध्यस्थितां
कामाख्यां भुवनेश्वरीं निरुपमां ब्रह्मादिभिर्वन्दिताम्।
योगीन्द्रैकनिषेवितां त्रिजगतां सूत्पत्तिनाशस्थलीं
ज्ञानानन्दमयीं महोदयकरीं काञ्चिद्भजे देवताम्।।

-शङ्कराचार्यकृत-सौन्दर्यलहर्य्याष्टीकायां तरीत्याख्यायां
गौरीकान्तसार्वभौमभट्टाचार्यस्य

काली

अर्द्धेन्दुमौलिममलाममराभिवन्द्या-
मम्भोजपाशसृणिपूर्णकपालहस्ताम्।
रक्तां जगत्कृत्वसनां भरणां त्रिनेत्रां
ध्याये शिवस्य वनितां मदविह्वलाङ्गीम् ।।

-ऋक्तन्त्रे

उत्पत्तिस्थितिसंहारकारिकां जगतां पतिम् ।
देवतां कालिकादेवीं चिदानन्दस्वरूपिणीम् ।।

-कालिकापूजनविधौ

कलानिधिकलोल्लासिमौलिस्मेरमुखाम्बुजाम्।
कालिन्दीलोलकल्लोलकोमलां श्यामलां भजे।।

-श्यामार्चनपद्धत्यां

कलौ कालीं देवीं सकलसुखदात्रीं सुखमयीं
विमर्शे चिद्रूपां विकृतिजननीं चेतनयुताम् ।

प्रधानाख्यामाख्यां पुरुषसुरतासक्तहृदयां
भजे कूर्चाकारां कमलवदनां मत्तगमनाम् ॥

-राजारामकृत-भद्रकालीस्तवे मातृकायां स्फुटश्लोकः

कल्पान्तार्कप्रकाशां प्रतिभटभयदां सोमसूर्याग्निनेत्रां
कोपादालोलजिह्वां सुविवृतवदनां रक्तलिप्तावतसाम् ।
रक्ताक्षीं भीषणाङ्गीं त्रिभुवनमखिलं तेजसा पूरयन्तीं
नत्वा टीकां मनोज्ञां रचयति विमलामच्युतानन्दनामा॥

-जातकाभरणस्य टीकायां विमलाख्यायां झोपाख्याच्युतानन्दस्य

कामेशस्य ध्रुवामभागनिलयां भक्ताखिलेष्टार्थदां
शङ्खं चक्रमथाभयं च वरदं हस्तैर्दधानां शिवाम् ।
सिंहस्थां शशिखण्डमौलिलसितां देवीं त्रिनेत्रोज्वलां
श्रीमद्विक्रमसूर्यपालनपरां वन्दे महाकालिकाम् ॥

-उत्तरकालामृते कविकालिदासस्य

जीमूतालीसुनीला स्त्रवदतिरुधिरोत्तुङ्गमुण्डावलीना
तारा तारोपवक्त्रा पुरहरहृदयाबद्धपादारविन्दा।
खड्गं कर्त्री कपालं प्रहसितकुमुदं दोश्चतुष्कैर्दधाना।
पायान्मां नीलवाणी भवभयशमना शाम्भवी शक्तिराद्या॥

-अभिज्ञानरत्नावल्यां रामानन्दस्य

तारान्तर्ज्वलदग्निलक्षनयनश्वभ्रान्तकूपान्तरां
क्रुद्धागस्त्यनिरस्तवारिधिपयःपातालनिम्नोदरीम् ।
वन्दे त्वामजिनावृतोत्कटसिरापृष्ठास्थिसाराकृतिं
दंष्ट्राकोटितटोत्पतिष्णुदितिजासृक्चर्चितां चर्चिकाम् ॥

-सदुक्ति. उमापतिधरस्य

दीप्तक्षुद्वेगयोगाद्वदनलहलहल्लब्जजिह्वाग्रलीढ-
ब्रह्माण्डक्षौद्रबिन्दुप्रबलतरभवज्जाठराग्निस्फुलिङ्गाम् ।
कालीं कङ्कालशेषामतुलगलचलन्मुण्डमालाकरालां
गुञ्जासंवादिनेत्रामजिननिवसनां नौमि पाशासिहस्ताम् ॥

-सुभा.सुधा.भा.

देवीं देवेशवन्द्यां त्रिभुवनजननीं जापमालां जपन्तीं
सच्छुभ्रां दुःखनिष्कृतिनीं च वरदां ब्रह्मेशयोर्वन्दनीयाम्।
श्रीकालीं चाद्यस्वरूपिणीमभयदामिन्द्रादिभिस्सेवनीयां
वन्दे तां चारुनेत्रां विकसितवदनाम्भोजतुल्यां वरेण्याम् ॥

-कुमारसंभवमातृकायां स्फुटश्लोकः

नानारूपधरा मदैकशुभदा रक्ता विशुद्धात्मना
मान्या मानपरापरा त्रिजगतो धात्री स्वकीयैर्गुणैः।
दृप्यद्वैरिशिरोहराभयकरा स्मेराचितोरस्थितिः
श्यामा भीमगतिर्व्वरायुधवती देवी शिवायास्तु वः॥

-अमरमङ्गले पञ्चाननतर्करत्नभट्टाचार्यस्य

निर्मांसप्रकटास्थिजालविकटां पातालनिम्नोदरीं
कूपक्रोडगभीरनेत्रकुहरामुन्नद्धजूटाटवीम् ।
दन्तान्तर्गतदैत्यकीकसकणव्याकर्षणव्यापृत-
क्रूरैकाग्रनखामखण्डितरुचं त्वां चण्डि वन्दामहे॥

-सदुक्ति.

प्रचण्डचण्डमुण्डयोर्महाबलैकखण्डिनी
ह्यनेकरुण्डमुण्डयुग्रणे बलैकदायिनी।
क्वचित्वशक्तिकारिणी रमाविलासदायिनी
मुदेऽस्तु कालिका सदा समस्तपापहारिणी॥

-सुभा.सुधा.भा.

यद्वक्त्राकाशशेषो नभसि न सुलभो यद्भुजानां सहस्रैः
प्रेङ्खद्भिः कीर्यमाणास्वनुरपि विदितो नावकाशो दिशासु।
पञ्च ग्रासा न यस्यास्त्रिभुवनमभवत्पूरणार्थं समस्तं
क्षुत्क्षामाऽकाण्डचण्डी चिरमवतुतरां भैरवी कालरात्रिः॥

-सदुक्ति. भासोकस्य

यस्या दुर्धरघोरवक्त्रकुहरे विश्वक्षये लक्ष्यते
क्षुब्धाब्धाविव लोलबालशफरी कुत्रापि लोकत्रयी।

तामज्ञातविशालकालकलनां तैस्तैः पुराणैरपि
प्रौढां तेहिसमूहमोहनमयीं कालीं करालां नुमः।।

-समयमातृकायां क्षेमेन्द्रस्य

या कालं कलयन्तिका वपुरदः संकर्षयन्ती स्थिता
या सृष्टिस्थितिसंहृतीतिपदकैः पूर्णस्थितैः संस्तुता।
याद्यस्पन्दवशात् सृजत्यविरतं ज्ञानक्रियासंयुता
सा काली कलनामतीतचरिता शक्तिः परा दीव्यतु।।

-कालिदासकृत-चिद्गगनचन्द्रिकायाष्टीकायां
क्रमप्रकाशिकाख्यायां रघुनाथमिश्रस्य

या शक्तिः ऽकृतित्वमेत्य गुणितां तादात्म्यदृष्ट्यात्मनां
चिन्मात्रत्वमुपेयुषां प्रथमतो मान्या तनोत्यादृता।
या जीवेश्वरताऽप्ति कल्पलतिका माया परब्रह्मगा
साऽदृष्टैक्यमुपागता भगवती काली हृदिस्थाऽस्तु मे।।

-त्रितलावच्छेदकतावादे शशिनाथझामहोदयस्य

वराभीत्योर्दात्रीं पृथुतमकुचां कामवशगां
महाकालोरःस्थां समुखमजचक्रीन्द्रविनुताम् ।
प्रसन्नाक्षीं श्यामां स्मितमयमुखीं दक्षिणतमां
स्तुवन् कालीं विद्याक्षितिसुतधनानीह लभते।।

-अभिलेखे

वालीयुतश्रवणपालीयुगा ललितचूलीविराजिबकुला
केलीगतानुगमरालीकुला मधुरमालीभिरादृतकथा।
नालीकदृक्कुसुमनालीकपाणिरिह कालीयशासिसहजा
तालीदलाभतनुमाली सदा भवतु काली शुभाय मम सा।।

-सुभा. सुधा. भा.

शिखण्डे खण्डेन्दुः शशिदिनकरौ कर्णयुगले
गले ताराहारस्तरलमुडुचक्रं च कुचयोः।
तडित्काञ्ची सन्ध्यासिचयरचिता कालि तदयं
तवाकल्पः कल्पव्युपरमविधेयो विजयते।।

-सदुक्ति.

श्यामां श्यामाम्बुजदलदृशं मुक्तकेशीमवस्त्रां
प्राणायुक्तस्तनपरुचिरश्रोत्रभूषे दधानाम् ।
शीर्षासी चाऽभयमथ वरं भावये भावसिद्ध्यै
शावाकारत्रिपुररिपुहृत्संस्थितामुग्रदन्ताम् ॥

-श्रीरामविजये रूपनाथोपाध्यायस्य

सञ्चिन्तयामि घननीरदमङ्गयष्टिं
मुण्डालिदामपरिलम्बितकण्ठदेशाम् ।
सृक्वद्वयस्तवदसृग्विकटाननां तां
कर्णावतंसशवयुग्मवृतां त्रिनेत्राम् ॥

-कालिकार्चनप्रकाशिन्यां गोपीनाथत्रिपाठिनः

सद्यश्छिन्नशिरः कृपाणमभयं हस्तैर्वरं बिभ्रतीं
घोरास्यां शिरसास्त्रजासुरुचिरामुन्मुक्तकेशावलिम् ।
सृक्वासृक्प्रवहां श्मशाननिलयां श्रुत्योःशवालङ्कृतिं
श्यामाङ्गीं कृतमेखलां शवकरे देवीं भजे कालिकाम् ॥

-शङ्कराचार्यकृत-सौन्दर्यसलहरीमातृकायां स्फुटश्लोकः

सुधासिन्धौ श्वेते सरसिरुहिसौभाग्यसदने
पदौ प्रत्यालीढौ दृढतरनिरूढौ विदधती।
करैः कर्त्रीखड्गाम्बुजनरकपालानि दधती
विधत्तां कल्याणं सजलजलदाभा त्रिनयना॥

-महानन्दचषके

सृष्टिस्थित्यन्तकर्त्री हरिहरविधिभिः सेवितानन्ददात्री
नानातन्त्रोक्तमार्गैर्मुनिभिरपिधिया भालचन्द्रोज्वलाङ्गी।
आरक्ताभा त्रिनेत्रा शिवशवनिलया राजराजेश्वरी सा
वाचं नो सा तनोतु प्रतिपदकठिने जैमिनेः सूत्रसंघे

-जैमिनीसूत्रस्य नीलकण्ठीति
नाम्नि टीकायां नीलकण्ठस्य

हिमाचलकुमारिका हरमनःसमुल्लासिका
सुवीरकुलपालिका कविविनोदसञ्चारिका।
अशेषसुखदायिका प्रबलदैत्यसंहारिका
महाभयनिवारिका दिशतु नः शुभं कालिका।।

-वनमालायां क्षोपाख्य जीवनाथस्य

छिन्नमस्ता

भास्वन्मण्डलमध्यगां निजशिरश्छिन्नां विकीर्णालकां
स्फारास्यां प्रपिबद्गलस्वरुधिरं वामे करे बिभ्रतीम्।
या मासक्तरतिस्मरोपरिगतां सख्यौ निजे डाकिनी-
वर्णिन्यौ परिदृश्यमोदकलितां श्रीछिन्नमस्तां भजे।।

-शङ्कराचार्यकृत-सौन्दर्यलहरीमातृकायां स्फुटश्लोकः

या स्मृतापि सतां हन्ति मनोवाक्कायसंभवम्।
अघं सा त्रिदशैर्वन्द्या महारुण्डा पुनातु वः।।

-अभिलेखे

तारा

प्रकटविकटदंष्ट्रा घोररूपाट्टहासा
नरशिरकृतमाला मेघवर्णातिखर्व्वा।
त्रिभुवनजयदात्री हस्तविन्यस्तकर्त्री
करविहितकपाला पातु मामुग्रतारा।।

-शिवशासनरहस्ये

या ज्ञानार्णवमन्थनात्समुदिता प्रज्ञेति या कथ्यते
या बुद्धस्य विभूतिदा त्रिभुवने बोधिस्वरूपा परा।
या हृद्व्योम्नि तथागतस्य वसति स्फीतेव चान्द्री कला
सा तारा भवतापदुःखशमनी प्राशास्तु वः सर्वदा।।

-अभिलेखे

हरि-करि-शिखिफणितस्करनिगलजलार्णव-पिशाचभयशमनी।
शशिकिरणकान्तिधारिणि भगवति तारे नमस्तुभ्यम्।।

-अभिलेख

बगलामुखी

कपोलप्रोल्लोलत्कनकविलसत्कुण्डलयुगं
मुखेन्दुं बिभ्राणां कनकविकसच्चम्पकरुचिम्।
गदादीर्णारातिं करगरिपुजिह्वां च बगला-
मुखीं ध्यायेद्यस्तद् विमुखमुखसंस्तंभनिविधिः।।

-अभिलेखे

जिह्वाग्रमादाय करेण देवीं वामेन शत्रून् परिपीडयन्तीम्।
गदाभिघातेनवदाक्षणेन पीताम्बरां तां द्विभुजां नमामि।।

-मन्त्रमञ्जर्यां महेशभट्टसुतसोमनाथस्य

मध्ये सुधाब्धिमणिमण्डपरत्नवेद्यां
सिंहासनोपरिगतां परिपीतवर्णाम्।
पीताम्बराभरणमाल्यविभूषिताङ्गीं
देवीं भजामि धृतमुद्गरवैरिजिह्वाम्।।

-सांख्यायनतन्त्रे सांख्यायनमुनेः

मातङ्गी

कस्तूरिकाश्यामलकोमलाङ्गीं
कादम्बरीपानमदालसाङ्गीम् ।
वामस्तनालिङ्गितरत्नवीणां
मातङ्गकन्यां मनसा स्मरामि।।

-मन्त्रमालायां कालरुद्रस्य

कुवलयदलनीलाङ्गीं कुवलयरक्षैकदीक्षितापाङ्गीम् ।
लोचनहसितकुरङ्गीं मातङ्गीं नौमि शङ्कराद्धाङ्गीम् ।।

-नवमणिमालायां

ध्यायेयं रत्नपीठे शुककलपठितं शृण्वतीं श्यामलाङ्गीं
न्यस्तैकाङ्घ्रिं सरोजे शशिशकलधरां वल्लकीं वादयन्तीम् ।

कह्लाराबद्धमालां नियमितविलसच्चोलिकां रक्तवस्त्रां
मातङ्गीं शङ्खपात्रां मधुरमधुमदां चित्रकोद्भासिभालाम् ।।

-दुर्गासप्तशत्यां

मातङ्गीं नवयावकार्द्रचरणामुल्लासिनीतांशुकां
वीणोल्लसितकरां समुन्नतकुचां मुक्ताप्रवालाधराम् ।
कृष्णाङ्गीं सितशङ्खकुण्डलधरां बिम्बाधरासुस्मिता-
माकीर्णालकवेणिमब्जनयनां ध्यायेच्छुकश्यामलाम् ।।

-मन्त्रमञ्जर्यां महेशभट्टसुतसोमनाथस्य

देवाः

अग्निः

इष्टापूर्त्तक्रियासिद्धिहेतुं यज्ञभुजां मुखम्।
अग्निं त्रयीवचःसारं वन्दे वागधिदैवतम्।।

-पारस्करगृह्यसूत्रव्याख्याने

अश्विनौ

रणप्रवणदानवव्रजविमुक्तशस्त्रास्त्रज-
व्रणप्रजनितव्यथाविधुरवासवाराधितौ।
स्फुरद्गुरुतरज्वरप्रचुरतिग्मतापार्द्दित-
प्रजाश्रितपदाम्बुजौ सततमश्विनौ संस्तुमः।।

-वैद्यवल्लभे

कार्त्तवीर्यः

सहस्त्रबाहुं सशरं सचापं रत्नाम्बरं रत्नकिरीटकुण्डलम्।
चोरारिदुष्टभयनाशनमिष्टदं तं ध्याये महाबलविजृम्भितकार्त्तवीर्यम्।।

-ऋक्सर्वानुक्रमभाष्ये षड्गुरुशिष्यस्य

गरुडः

यस्याण्डस्फोटशब्दाद् दशदिशि भुवने कम्पिताः सप्तलोकाः
पाताले पन्नगालिं वनगजसहितं कच्छपं भक्षयित्वा।
स क्रुद्धो वज्रतुण्डो ह्यसुरसुरविनिर्जेतृनैकप्रतापः
तं वन्दे काश्यपेयं ह्यतुलतनुबलं पातु वो वैनतेयः।।

-अमृताहरणे

यो विश्वप्राणभूतस्तनुरपि च हरेर्यानकेतुस्वरूपो
यं सञ्चिन्त्यैव सद्यः स्वयमुरगवधूवर्गगर्भाः पतन्ति।
चञ्चच्चण्डोरुतुण्डक्षपितरिपुबलरक्तपङ्काङ्कितास्यं
वन्दे छन्दोमयं तं खगपतिममलं स्वर्णवर्णं सुपर्णम्।।

-अमृताहरणे

दत्तात्रेयः

दिगम्बरं भक्तसुगन्धलेपनं
चक्रं त्रिशूलं डमरुं गदां च।
पद्मासनस्थं शशिसूर्यनेत्रं
दत्तात्रेयं ज्ञानमभीष्टसिद्धिदम्।।

-दानसिन्धौ शङ्करस्य

पृथिवी

आधारशक्तिमम्भोधिमेखलां रत्नगर्भिणीम्।
हरमूर्त्तिं हरेः कान्तां भूतधात्रीमुपास्महे।।

-अभिलेखे

भागीरथीहारलता कालिन्दीकबरीभरा।
सुमेरुशेखरा पृथ्वी पातु वः सागराम्बरा।।

-सूक्तिमु. राजशेखरस्य

स्वर्गौ कोभिरदोनिवासिपुरुषारब्धातिशुद्धाध्वर-
स्वाहाकारवषट्क्रियोत्थममृतं स्वादीय आदीयते।

आम्नायप्रवणैरलंकृतिजुषेऽमुष्मै मनुष्यैः शुभै-
र्दिव्यक्षेत्रसरित्पवित्रवपुषे देव्यै पृथिव्यै नमः।।

-सुभा. सुधा. भा

मकरध्वजः

नवकुचकाञ्चनकलशाः श्रोणीसिंहासनाः सितच्छत्राः।
अभिषेकाय तरुण्यो यस्य स मकरध्वजो जयति।।

-बृहत्कथामञ्जर्यां क्षेमेन्द्रस्य

वायुः

क्षितिगतबहुपुण्यस्थानसंश्लेषशीलः
प्रयतविविधवल्लीवृक्षसल्लीनदेहः।
अमरनगरनद्याः शीकरैस्सिच्यमानः
पुरि पुरि पवमानः सर्वलोकम्पुनातु।।

-वाताह्वाने दुर्गादत्तस्य

वासुकिः

अनुभूतमन्दराचलपरिणाहो यज्ञसूत्रमीशस्य।
वासुकिरुमाकुचद्वयपरिमण्डलविस्मितः पातु।।

-आर्यासप्तशत्यां विश्वेश्वरपण्डितस्य

देवासुरकृतमन्दरकर्षणशिथिलीकृताखिलावयवः।
वासुकिरचलेन्द्रसुतानिःश्वासास्वादतुन्दिलो जयति।।

-आर्यासप्तशत्यां विश्वेश्वरपण्डितस्य

धूर्जटिकलेवररुचिज्योत्स्नाविशदप्रदेशगतं।
मन्दरमालोक्य पयोनिधिमथनस्मरणमहिपतेः पातु।।

-आर्यासप्तशत्यां विश्वेश्वरपण्डितस्य

विश्वकर्मा

कम्बासूत्राम्बुपात्रं वहति करतले पुस्तकं ज्ञानसूत्रं
हंसारुढः त्रिनेत्रः शुभमुकुटशिराः सर्वतो वृद्धिकायः।
त्रैलोक्यं येन सृष्टिं सकलसुरगृहं राजहर्म्यादिहर्म्यं
देवोऽसौ सूत्रधारो जगदखिलहितः पातु वो विश्वकर्मा॥

-वास्तुशास्त्रराजवल्लभे सूत्रधारमण्डनस्य

गन्धर्वः

विश्वावसुः

अर्करूपदयितां कुचयुग्माकरनिहितकुसुमकोदण्डां
करकलितमोहनां कल्पयोगां गान्धर्वनायकं मनसा।
रक्ताङ्गरागारुणभूषणाढ्यं वीणाधरं कल्पशतेन युक्तं
गन्धर्वकन्यायुतगीयमानं विश्वावसुं सिद्धिपतिं नमामि॥

-मन्त्रमञ्जर्यां महेशभट्टसुत-सोमनाथस्य

आचार्याः

कर्णाटयतीश्वरः

यत्पादपङ्केरुहरेणुपुञ्जसंरञ्जिताङ्गा अपि पामराद्याः।
त्रिलोकवन्द्या भुवि भान्ति सद्यो जयन्ति कर्णाटयतीश्वरास्ते॥

-सर्वदर्शनकौमुद्यां माधवसरस्वतेः

गुरुः

आत्मरूपगुणकृत्यकारिणे लोचनाकलिततत्त्वसाक्षिणे।
नूतनोद्भवसमाधिहेतवे नीलकण्ठगुरवे नमो नमः॥

-तर्कामृतव्याख्याने सुवर्णचषके

कारुण्यपूर्णौ चरणौ शरण्यौ वन्दे गुरूणां तरुणाम्बुजाभौ।
ययोः स्मृतिज्ञानसुखप्रदायाः प्रत्यूहपुञ्जाः प्रलयं प्रयान्ति॥

-मुहूर्तमञ्जर्यां यदुनन्दस्य

क्षुभ्यत्-क्षीराब्धिकल्लोलमालोल्लासियशः श्रियम्।
गुरुं वन्दे जगद्वन्द्यं गुणरत्नैकरोहणम्।।

-विश्वप्रकाशकोशे महेश्वरस्य

चिन्तामणिर्जयति सोमगिरिर्गुरुर्मे
शिक्षागुरुश्च भगवान्शिखिपिच्छमौलिः।
यत्पादकल्पतरुपल्लवशेखरेषु
लीलास्वयंवररसं लभते जयश्रीः।।

-कृष्णकर्णामृते लीलाशुकस्य

दाक्षिण्यं निजसेवकेषु परमं कुर्वन्तमन्तर्मुखं
कुन्दाच्छस्फुरदूर्जितस्तुतिकथासंछादिताशामुखम्।
श्रीरामं रघुराजपुङ्गवकुलालङ्काररहीराङ्कुरं
सीतारामगुरुं च नौमि मनसा विद्वत्सभाधूर्धरम्।।

-नानार्थरत्नमालाकोशे

नमामि गुरुमक्षोभ्यं मन्त्रशक्तिसमन्वितम्।
प्रसन्नज्ञानविज्ञानं हेतुबुद्धिप्रकाशकम्।।

-कालिकाकवचे

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम्।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तन्नमामि।।

-तत्त्वबोधिन्यां

भास्वद्वंशसमुन्नतिप्रदभवः सद्भिर्गुणैर्भूषितो
जानक्या रमया वृतः कुलजया धर्मस्थितिस्थापकः।
विश्वामित्रपरिष्टुतामितगुणः प्रेयः सुमित्रात्मजः
श्रीरामेण समो गुणैर्विजयते दैवज्ञरामो गुरुः।।

-सज्जन्मचिन्तामणौ रामसुतशिवस्य

मन्दोऽप्यहं यच्चरणाब्जसेवा-
संप्राप्तबोधांशवशात् सुधीभिः।
सिद्धान्ततत्त्वाधिगमैः स्वपक्ष-
कुक्षौ कृतस्ते गुरवो जयन्ति।।

-सिद्धान्तसार्वभौमे मुनीश्वरस्य

मूर्ध्ना श्रये श्रीगुरुपादपद्मरजः कणान् भूमिलितोत्तमाङ्गः।
येषां प्रसादादमराधिपत्यं तिष्ठन् क्षितावेव समस्तमीहे।।

-वर्णकोशे गौडदेशीयगोविन्दभट्टस्य

यच्छिष्यै रचिता जयन्ति जगति ग्रंथाहिते यान्क्षणं
दृष्ट्वा मस्तकघूर्णनं वितनुते वागीश्वरोपि स्वयम्।
तस्मै वैदिकतांत्रिकाध्वरविदे श्रीढुण्डिराजाय मे
विश्वस्मिन् स्थिरकीर्त्तयेस्ति गुरवे सद्बुद्धिदात्रे नमः।।

-रामविलासकाव्ये विश्वनाथकवेः

यत्पादाम्बुजदर्शनात्परमनिर्दोषस्फुरद्रूपिणी
स्वस्याज्ञानमहान्धकारमनया चेतोगृहं शुध्यति।
शुद्धे चेतसि चात्मचिन्तनमतोमुक्तिः किमस्याः परं
तस्मात्तं गुरुमात्मरूपमपरं नित्यं नमस्कुर्महे।।

-गणेशदैवज्ञकृत-तिथिचिन्तामणेष्टीकायां सुबोधिनीत्याख्यायां गणेशदैवज्ञस्य

यत्स्मृत्यैवसमस्तदुःखशमनं सम्पद्यते देहिनां
यत्पादाब्जरजोजुषो न पुनरावृत्तिं लभन्ते जनाः।
यत्कीर्त्तिर्विमलीकरोतिविमला गङ्गेवलोकत्रयं
तं श्रीवल्लभमम्बुजाक्षमनघं वन्देऽनवद्यं गुरुम्।।

-श्रुतबोधे

यन्मूलप्रवहत्पवित्रपयसः संसेवनादेव मे
रागद्वेषमदाभिधाग्रहगणानेशुः स्म संतापिनः।
यत्संसारपरिश्रमापहृदया संशीतलामोदभाक्
वन्दे तत्पुरुषोत्तमाश्रमगुरोः पादारविन्दद्वयम्।।

-बृहदारण्यकटीकायां मिताक्षराख्यायां

यस्मादनुत्तरमहाह्रदमज्जनं मे
सौभाग्यशाम्भवसुखानुभवश्च यस्मात्।
तत्स्वात्मचित्क्रमविमर्शमयं गुरूणा-
मौवल्लियुग्ममुदितोदितवीर्यमोडे॥

-महार्थमञ्जर्याः सोपज्ञटीकायां महेश्वरानन्दस्य

येनाज्ञानमहान्धकारपटलीप्रोत्सारितासूक्तिभि-
र्यद्ध्यानात्स्फुरदद्भुतैकरचना पाण्डित्यपीठेऽनिशम्।
जिह्वा नृत्यति नर्तकीवशतधानानारसैः सादरं
वन्दे तच्चरणारविन्दयुगलं श्रीमद्गुरूणामहम्॥

-काव्यप्रकाशटीकायां सुधासागरी इत्याख्यायां भीमसेनदीक्षितस्य

यो नारायणरूपतः श्रुतिसतीसीमन्तरत्नप्रभा
विध्वस्ताखिलहृत्तमस्कमकरोन्मामात्मरत्यादिषु।
श्रीमच्छङ्करदेशिकेश्वरपुनर्नूत्नावतारं परं
वन्दे श्रीरघुवीरसद्गुरुवरं तं द्वैतशून्यं शिवम्॥

-वोधैक्यसिद्धौ

यो ब्रह्मेशसुरर्षिवन्दितपदो वेदान्तवेद्यो हरि-
स्तं वन्दे मनसा गिरा च शिरसा श्रीश्रीनिवासं गुरुम्॥

-वेदान्तरत्नमञ्जूषायां पुरुषोत्तमाचार्यस्य

यो ब्रह्मेशसुरादिपूज्यचरणः श्रीश्रीनिवासाभिधः
कारुण्यादिवशोवत्तीर्य ह्यवनावालोडयत्तोयधिम्।
वेदाख्यं च निरूप्यभाष्यममृतं चापाययत् स्वाश्रितान्
सत्कीर्तिंश्रियमेव वक्षसि दधौ तं चाश्रये सद्गुरुम्॥

-कृष्णस्तवव्याख्यायां पुरुषोत्तमप्रसादस्य

लक्ष्मीं संधृतिदायिनीमलिकरां तापत्रयोन्मूलिनीं
नित्यां तां समुपास्महेऽखिलजगत्सर्गादिहेत्वग्रणीम्।
श्रीदेवेन्द्रवरान् गुरून्यतिवरान् जाड्यार्त्तिसूर्यप्रभान्
वन्दे सत्कवितालताङ्कुरजलानानन्दबुद्धिश्रिये॥

-रसराजशङ्करे

वन्देऽजं प्रणवादिवाच्यपुरुषं ज्ञेयं सुबुद्धं रविं
विष्णुं वेदशिखैकमेयफलदं जन्मादिजन्तोर्यतः।
पापारिं परमं शिवं सुखकरं धर्म्मैकमूर्त्तिं विभुं
सत्यं ज्ञानमनन्तमादिवपुषं शुद्धं चिदेकं गुरुम्॥

-सुकृत्यप्रकाशे ज्वालानाथमिश्रस्य

विमलमतिकिरणनिकरप्रभिन्नसच्छिष्यकमलसंघाताः।
सकलभुवनैकदीपाः जयन्ति गुरुभास्करः भुवने॥

-योगरत्नावल्याष्टीकायां गुणाकरस्य

शोकमोहभयाटव्यां दूंष्टकालाहिना पुनः।
मामुज्जहार तं वन्दे श्रीबिन्दाश्रमसद्गुरुम्॥

-भागवतः भावार्थदीपिकाख्यायां टीकायां श्रीधरस्य

श्रीगुरुचरणद्वन्द्वं वन्देऽहं मथितदुःसहद्वन्द्वम्।
भ्रान्तिग्रहोपशान्तिं पांसुमयं यस्य भसितमातनुते॥

-आर्यायां

श्रीगुरून्करुणासिन्धून्सर्वशक्तिसमन्वितान्।
सत्याऽसत्यविदो वन्दे वाञ्छितार्थस्य सिद्धये॥

-श्रुतवोधस्य टीकायां मनोरमाख्यायां लक्ष्मीनारायणशर्मणः

श्रीश्रीनिवासमाचार्यं गुरुं श्रीगङ्गलाभिधम्।
प्रणम्य क्रियते गीताव्याख्या तत्त्वप्रकाशिका॥

-भगवद्गीतायाष्टीकायां तत्त्वप्रकाशिकायां केशवकाश्मीरभट्टस्य

श्रुतीनां सूत्राणां स्मृतिनिखिलवेदानुवचसां
परं हार्दं युक्तं ह्यखिलचिदचिद्भिन्नमपि च।
अभिन्नं स्वाभाव्याद्गुणि च परमं ब्रह्मकमिदं
समादिष्टं यैस्तानपि सततमीडे गुरुवरान्॥

-भगवद्गीतायाष्टीकायां तत्त्वप्रकाशिकायां केशवकाश्मीरभट्टस्य

श्वेतं श्वेतविलेपमाल्यवसनं वामेन रक्तोत्पलं
बिभ्रत्यां प्रिययेतरेण तरसा श्लिष्टं प्रसन्नाननम्।
हस्ताभ्यामभयं वरञ्च दधतं शम्भुस्वरूपं परं
हालालोहितलोचनोत्पलयुगं ध्यायेच्छिरस्थं गुरुम्।।

-पूजनप्रयोगसंग्रहे

संसारसिन्धोस्तरणैकहेतून्दधे गुरून्मूर्द्धिन शिवस्वभावान्।
रजांसि येषां पदपङ्कजानां तीर्थाभिषेकश्रियमावहन्ति।।

-शारदातिलके

स्मारं स्मारं जनिमृतिभयं जातनिर्वेदवृत्तिः
ध्यायं ध्यायं पशुपतिमुमाकान्तमन्तर्निषण्णम्।
पायं पायं सपदि परमानन्दपीयूषधारां
भूयो भूयो निजगुरुपदाम्भोजयुग्मं नमामि।।

-कैवल्यकल्पद्रुमे गङ्गाधरसरस्वत्याः

जिनाधिपाः

अलङ्घ्यं त्रिजगत्सारं यस्यानन्तचतुष्टयम्।
नमस्तस्मै जिनेन्द्राय महावीराय तायिने।।

-गणितसारसङ्ग्रहे महावीराचार्यस्य

आदौ यस्य पुरश्चराचरगुरोरारब्धसंगीतक-
श्चक्रे नाट्यरसान् क्रमादभिनयन्नाखण्डलस्ताण्डवम्।
यस्मादाविरभूदचिन्त्यमहिमा वागीश्वराद् भारती
स श्रीमान् मुनिसुव्रतो दिशतु वः श्रेयः पुराणः कविः।।

-अञ्जनापवनञ्जये हस्तिमल्लस्य

आर्हन्तीमतुलामवाप्य तपसामेकं फलं भूयसां
यो नैराश्यधनस्त्रयस्य जगतामभ्यर्हणायाः पदम्।

स्वीचक्रे स्तवनातिवर्तिविभवां सिद्धिश्रियं शाश्वती-
माद्यस्तीर्थकृतां कृती स ऋषभः श्रेयांसि पुष्णातु नः।।

-सुभद्रानाटिकायां हस्तिमल्लस्य

कल्याणामृतशेवधेर्भगवतो यस्येक्षणालोकन-
प्राप्तप्रौढतरप्रसादगुणतो व्यालोपि देवेन्द्रताम्।
लेभे विघ्नतमोवितानतरणिः संपल्लता वारिदः
श्रीवामेयजिनाधिपोस्तु भविनां श्रेयस्करस्तीर्थकृत्।।

-हेमचन्द्रकृत-अभिधानचिन्तामणेष्टीकायां
व्युत्पत्तिरत्नाकराख्यां देवसागरगणेः

जित्वा यो जगतीं जिनश्चतसृभिः सेनाभिरुद्यद्यशा
भुक्त्वा भारतचक्रवर्त्तिकमलां दुष्टाष्टकर्म्मद्विषः।
भित्त्वाष्ट प्रवचः प्रस्तबलगुणैर्ल्लेभेऽथ सर्वश्रियं
स श्रीशान्तिजिनाधिपोस्तु भविनां प्रत्यूहशान्त्यै सताम्।।

-हेमचन्द्रकृत-अभिधानचिन्तामणेष्टीकायां
व्युत्पत्तिरत्नाकराख्यां देवसागरगणेः

त्यक्त्वा राजीमतीं यः स्वनिहितहृदयामेकपत्रीं सुरूपां
सिद्धिस्त्रीभूरिरक्तामपि बहुवकमेऽनेकपत्नीमपीशः।
लोके ख्यातस्तथापि स्फुरदतिशयवान् ब्रह्मचारीतिनाम्ना
स श्रीनेमी जिनेन्द्रो दिशतु शिवसुखं सात्वतां योगिनाथः।।

-हेमचन्द्रकृत-अभिधानचिन्तामणेष्टीकायां
व्युत्पत्तिरत्नाकराख्यां देवसागरगणेः

श्रियं विदध्याद्विमलां सतां स श्रीपार्श्वनाथो नतसेन्द्रनाथः।
यद्देहमावेष्ट्य रराज भोगी क्षणप्रभेवासितनीरवाहे।।

-जिनसेनाचार्यकृत-पार्श्वाभ्युदयस्य टीकायाम्

श्रीमान् पार्श्वजिनोतिशेषकगणं प्राप्तः प्रभुः पूर्णगी-
र्द्राक् क्षिप्रप्रचलत्कुयोगकमप्रौढिः प्रजानाम्पुरः।

सत्कीर्त्यानकनादपूरितजगत्साकल्यइष्टार्थदो
गीर्वाणेश्वरसेवितो विजयते विश्वैकचिन्तामणिः।।

-कालिदासकृत-ज्योतिर्विदाभरणस्य टीकायां सुखबोधिकाख्यायां भावमुनेः

श्रेयः सन्तति सिन्धुवृद्धिविलसज्जैवातृकाभोविभु-
र्भास्वद्ज्ञानगभस्ति दीप्तिविधुतव्यामोहपूरः प्रभुः।
सात्वच्छश्वदभीष्टदैवतमणिः संसारसिन्धौ तरिः
श्रीमन्नाभिनरेन्द्रनन्दनजिनः श्रेयस्करः स्ताद् सदा।।

-हेमचन्द्रकृत-अभिधानचिन्तामणेष्टीकायां व्युत्पत्तिरत्नाकराख्यां देवसागरगणेः

सकलसुरनरेन्द्रश्रेणिसंसेव्यमाना-
त्समजनि किल यस्माद्विश्वलोकव्यवस्था।
हिमवत इव रम्या स्वर्गसिन्धुर्युगादौ
स जयतु जगदार्य्यो नाभिसूनुर्जिनेशः।।

-हितोपदेशे श्रीकण्ठसूरिणः

सान्द्रानन्दनमन्नरेन्द्रविबुधा धीशालिमौलीप्रभा
भास्वद्यत्प्रतिबिम्बदंभत इवानेकस्वरूपो विभुः।
उद्धर्तुं जगदेव किं भवमहापंकान् कृपावारिधिः
श्रीमच्छासननायकः स तनुतां श्रीवर्द्धमानः श्रियम्।।

-हेमचन्द्रकृत-अभिधानचिन्तामणेष्टीकायां
व्युत्पत्तिरत्नाकराख्यां देवसागरगणेः

धन्वन्तरिः

आविर्बभूव कलशं दधदर्णवाद्यः
पीयूषपूर्णममरत्वकृते सुराणाम्।
रुग्जालजीर्णजनता जनितप्रशंसो
धन्वन्तरिः स भगवान् भविकाय भूयात्।।

-सिद्धभेषजमणिमालायां कृष्णरामभट्टस्य

करकिसलयसङ्गी यस्य पीयूषकुम्भः
परममरवधूनां भूयसे मङ्गलाय।

स खलु निखिलदुग्धाम्भोधिरत्नेषु रत्नं
हरतु दुरितराशीनाशु धन्वन्तरिर्वः॥

-गदनिग्रहे सोढलस्य

जयति स दैन्यगदाकुलमखिलमिदं पश्यतो जगद्यस्य।
हृदयस्थैव गलित्वा जाता रसरूपिणी करुणा॥

-रसहृदयतन्त्रे गोविन्दभगवत्पादस्य

दिव्यस्त्रीकुचपत्रवल्यविरतोल्लासैकहेतुं सुधा-
पूर्णं यः कलशं दधज्जलनिधेराविर्बभूवेच्छया।
नानाव्याधिभरातुराखिलजगज्जीवातुरायुस्थिरं
दिश्याद्वो दुरितौघकुञ्जरहरिर्देवः स धन्वन्तरिः॥

-वैद्यवल्लभे राहुलशर्द्धधरेणस्य

लक्ष्मीकैरवबन्धुकल्पकतरुं लब्ध्वाथलब्धेप्सिते
भूयो मथ्नति देवदानवगणे दुग्धाब्धिमृद्धश्रिये।
तस्यानन्दधुनासमं समुदयन्कुम्भं सुधापूरितं
बिभ्राणः स्वकरे करोतु भवतां भद्राणि धन्वन्तरिः॥

-जीवानन्दे आनन्दरायमखेः

पतञ्जलिः

योगेन चित्तं च पदेन वाचं मलं शरीरस्य च वैद्यकेन।
योऽपाकरोत्तं प्रवरं मुनीनां पतञ्जलिं प्राञ्जलिरानतोस्मि॥

-पतञ्जलियोगसूत्रे मातृकायां स्फुटश्लोकः

पाणिनिः

येन धौतागिरः पुंसां विमलैः शब्दवारिभिः।
तमश्चाज्ञानजं भिन्नं तस्मै पाणिनये नमः ॥

-पाणिनीय अष्टाध्यायी ग्रन्थे

येन शब्दमहाम्भोब्धौ कृतो व्याकरणप्लवः।
शब्दरत्नार्थिनालोके तस्मै पाणिनये नमः।।

-पाणिनीय अष्टाध्यायी ग्रन्थे

येनाक्षरसमाम्नायमधिगम्य महेश्वरात् ।
कृत्स्नं व्याकरणं प्रोक्तं तस्मै पाणिनये नमः ।।

-पाणिनीय अष्टाध्यायी ग्रन्थे

पिङ्गलनागः

मयरसतजभलगसम्मितं
भ्रमति वाङ्मयं जगति यस्य।
स जयति पिङ्गलनागः
शिवप्रसादाद्विशुद्धमतिः।।

-पिङ्गलसूत्रे

बौधायनः

आकल्पं कल्पयामास वन्दे बौधायनं मुनिं
पक्षादौ पक्षयोः संधिसन्निकृष्टतरे दिवा।
पौर्णमास्यां प्रधानानि कर्तव्यान्यत्र नो गुरुः
यागान्बाधानयोर्मध्ये पर्वसांध्ये च पक्षयोः।।

-गोपालकारिकायां

कल्पामृतं क्षितिसुरप्रकराय योदाद्वेदाम्बुराशिमधिगम्यनिज प्रभावात्।
बौधायनाय मुनिवंदितपादपद्मद्वयाय कण्वतनयाय नमोस्तु तस्मै।।

-गोपालकारिकायां

मुनिं बौधायनं वन्दे वेदतत्त्वार्थदर्शिनम् ।
कामदं व्योमदं कान्तं काल्यं कल्पद्रुमं यथा।।

-गोपालकारिकायां

श्रियं नः श्रौतकल्पानां प्रादुर्भूताय विष्णवे।
तत्तत्कालं पुनर्दातुं नमो बौधायनात्मने।।

-गोपालकारिकायां

मातापितरौ

मातापितृपदाम्भोजं सत्वरं वाञ्छितार्थदम्।
निपत्य दण्डवद्भूमौ प्रणमामि मुहुर्मुहः।।

-श्रुतबोधस्य टीकायां मनोरमाख्यायां लक्ष्मीनारायणशर्मणः

मुनित्रयम्

वाक्यकारं वररुचिम्भाष्यकारं पतञ्जलिम् ।
पाणिनिं सूत्रकारं च प्रणतोस्मि मुनित्रयम् ।।

-पाणिनीय अष्टाध्यायी ग्रन्थे

वाल्मीकिः

कूजन्तं रामरामेति मधुरम्मधुराक्षरम्।
आरुह्य कविताशाखां वन्दे वाल्मीकिकोकिलम्।।

-वाल्मीकिरामायणस्य टीकायां विषमपदाख्यायां रामभट्टस्य

यः पिबन् सततं रामचरितामृतसागरम्।
अतृप्तस्तम्मुनिं वन्दे प्राचेतसमकल्मषम्।।

-वाल्मीकिरामायणस्य टीकायां विषमपदव्याख्यायां रामभट्टस्य

व्यासः

उपनयतु मङ्गलं नः सकलजगन्मङ्गलालयः।
श्रीमान्दिनकरकिरणनवनलिननिभेक्षणो व्यासः।।

-जैमिनिभारतमातृकायां स्फुटश्लोकः

नमोस्तु ते व्यासविशालबुद्धे फुल्लारविंदाय तपत्त्रिनेत्र।
येन त्वया भारततैलपूर्णः प्रज्वालितो ज्ञानमयः प्रदीपः॥

-भगवद्गीताटीकायां सुबोधिन्यां श्रीधरस्य

लक्ष्मीमातनुतात् स वो मुनिवरो व्यासाभिधानोऽनिशं
यः प्रालेयगिरावपान्तरतमोरूपेण नित्यं तपः।
तन्वानस्य कला हरेरविकल्पलोकोपकारोद्यता
द्रागस्यन्दत भारतामृतझरी यस्येयमास्येन्दुतः॥

-पूर्वभारतचम्प्वां मानवेदस्य

व्यासप्रचेतसौ

निगमागमवेदान्तसर्वशास्त्रपारगौ।
व्यासप्रचेतसौ वीरौ कलयं हृदि सर्वदा॥

-जैमिनिभूषणे रामचन्द्रस्य

शङ्कराचार्यः

अधिगतभिदा पूर्वाचार्यानुपेत्य सहस्रधा
सरिदिव महीभेदान्संप्राप्य शौरिपदोद्गता।
जयति भगवत्पादश्रीमन्मुखाम्बुजनिर्गता
जननहरणी सूक्तिर्ब्रह्माद्वयैकपरायणा॥

-शास्त्रसिद्धान्तलेशसङ्ग्रहे अप्पयदीक्षितस्य

पयोब्धिविवरीसुनिःसृतसुधाझरीमाधुरी
धुरीणभणिताधरीकृतफणाधराधीशितुः।
शिवङ्करसुशङ्कराभिधजगद्गुरोः प्रायशो
यशोहृदयशोधकं कलयितुं समीहामहे॥

-संक्षेपशङ्करजये

प्रचण्डपाखण्डविखण्डनोद्यतं त्रयीशिरोर्थप्रतिपादने रतम्।
बुधैर्नुतं योगकलाभिरावृतं नमामि तं शङ्करदैशिकं ततम्॥

-स्वात्मनिरूपणस्य टीकायां आर्याख्यायां सच्चिदानन्दस्य

सप्तर्षि:

किं गोत्रं किमु जीवनं किमु धनं का जन्मभू: किं वय:
किं चारित्र्यममुष्य के सहचरा: के वंशजा: प्राक्तना:।
का माता जनक: शिवस्य क इति प्रह्वेण पृथ्वीभृता
पृष्टा: सस्मितनम्रमूकवदना: सप्तर्षय: पान्तु व:॥

-सुभा.सुधा.भा.

पुण्यश्लोका:

कौस्तुभम्

सामुद्रेषु सुजन्मानमेकं श्रीकौस्तुभं स्तुम:।
नारायणोर:स्थेनापि येनालङ्क्रियतेऽम्बुधि:॥

-सूक्तिमु. हरिहरस्य

तुलसी

या दृष्टाखिललोकपालशमनी स्पृष्टा वपु:पावनी
रोगानामभिवन्दिता निरसनी हृद्रोगसन्नाशिनी।
प्रत्यासत्तिविधायिनी भगवती वामार्थसन्दीपनी
सच्छास्त्रार्थविचारणैकफलदा तस्यै तुलस्यै नम:॥

-विजयाकल्पे

नल:

निपीय यस्य क्षितिरक्षिण: कथास्
तथाद्रियन्ते न बुधा: सुधामपि।
नल: सितच्छत्रितकीर्त्तिमण्डल:
स राशिरासीन्महसां महोज्वल:॥

-नैषधीयचरिते

महाभारतम्

पाराशर्यवचस्सरोजममलं गीतार्थगन्धोत्कटं
नानाख्यातककेसरं हरिकथासंबोधनाबोधितम्।

लोके सज्जनषट्पदैरहरहः पेपीयमानं मुदा
भूयाद्भारतपङ्कजं कलिमलप्रध्वंसि वः श्रेयसे।।

-सुभा.सुधा.भा.

रामायणम्

निश्शेषश्रुतिसारभूतममलं संतापसन्नाशकं
सीतारामपदारविन्दरसिकैः संसेव्यमानं सदा।
वाल्मीकेर्मुखनिस्सृतं सुरनुतं रामायणं श्रीकरं
ब्रह्माद्यैर्विबुधर्नितान्तरणितं दद्यात्स्वमर्थं हि नः।।

-वा. रामायणस्य रामायणशिरोमणि
इत्याख्यायां टीकायां शिवसहायस्य

यः कर्णाञ्जलिसम्पुटैरहरहस्सम्यक्पिबत्यादरात्।
वाल्मीकेर्वदनारविन्दगलितं रामायणाख्यं मधुम्।
जन्मव्याधिजगविपत्तिमरणैरत्यन्तसोपद्रवं।
संसारं स विहाय गच्छति पुमान्विष्णोः पदं शाश्वतम्।।

-वाल्मीकिरामायणस्य विषमपदव्याख्यायां रामभट्टस्य

वाल्मीकिगिरिसम्भूता रामसागरगामिनी।
पुनाति भुवनम्पुण्या रामायणमहानदी।।

-वाल्मीकिरामायणस्य विषमपदव्याख्यां रामभट्टस्य

वाल्मीकिस्मृतिमन्थरेण मथितः सीतारमासम्भवः
सुग्रीवामरभूरुहोऽङ्गदगजः सौमित्रिचन्द्रोदयः।
सीतारत्नमणिर्विभीषणसखः पौलस्त्यहालाहलः
श्रीरामायणदुग्धसिन्धुरमलो भूयात्स वः श्रेयसे।।

-सुभा.सुधा.

वाल्मीकेर्मुनिसिंहस्य कवितावनचारिणः।
शृण्वन् रामकथानादं को न याति पराङ्गतिम्।।

-वाल्मीकिरामायणस्य विषमपदव्याख्यां रामभट्टस्य

वेदवेद्ये परे पुंसि जाते दशरथात्मजे।
वेदः प्राचेतसादासीत्साक्षाद्रामायणात्मना।।

-वाल्मीकिरामायणस्य विषमपदव्याख्यां रामभट्टस्य

श्रृण्वन् रामायणंभक्त्या यः पादंपदमेव वा।
स याति ब्रह्मणस्स्थानं ब्रह्मणा पूजितस्सदा।।

-वाल्मीकिरामायणस्य विषमपदव्याख्यां रामभट्टस्य

श्रीमद्ब्रह्म तदेव बीजममलं यस्याङ्कुरश्चिन्मयः
काण्डैः सप्तभिरन्वितोऽतिविततो ऋष्यालवालोदितः।
पत्रैस्तत्त्वसहस्त्रकैः सुविलसच्छाखाशतैः पञ्चभि-
श्चात्मप्राप्तिफलप्रदो विजयते रामायणःवःतरुः।।

-वा.रामायणस्य तिलकाख्यायां टीकायां रामस्य

श्लोकसारसमाकीर्णं सर्गकल्लोलसङ्कुलं।
काण्डग्राहमहामीनंवन्दे रामायणार्णवम्।।

-वाल्मीकिरामायणस्य विषमपदव्याख्यां रामभट्टस्य

सती अनसूया

पातिव्रत्यमयेन यात्ममहसा ब्रह्माब्जनाभेश्वरान्
चक्रे प्राकृतबालकानिव ददौ भूकन्यकायै मुदा।
रक्षोऽन्धकरणाङ्गरागमपि या सद्धर्मसंपादिनी
सा नोऽत्रेर्गृहिणी तनोतु कुशलं नाम्नाऽनसूया सती।।

-विधवोद्वाहशंकासमाधौ राजारामशास्त्रिणः

सती अरुन्धती

या यायावरमुख्यतापसगणैस्तोष्टूष्यमानाऽनिशं
सद्धर्मं गृणती पुनाति भुवनं साध्वी न यस्याः समा।
सच्चारित्रविभूषणागुणनिधिः शच्यादि सीमन्तिनी
नित्याराधितपादपङ्कजयुगा सारुन्धती पातु नः।।

-विधवोद्वाहशंकासमाधौ राजारामशास्त्रिणः

ग्रहाः

कल्याणानि दिवामणिस्सुललिताङ्कान्तिङ्कूकलानान्निधि-
र्लक्ष्मीं क्ष्मातनयो बुधश्चबुधताञ्जीवश्चिरञ्जीविताम्।
साम्राज्यं भृगुजोऽर्कजो विजयतां राहुर्वतूत्कर्षतां
केतुर्यच्छतु तस्य वाञ्छितफलं पत्री यदीयोत्तमा।।

-चक्रफलादेशे शिवरामस्य

मित्रं लोकहितोदयं हरशिरोरत्नं कलानां निधिं
पृथ्वीसूनुमुदारविक्रमकरं सौम्यं समस्तार्थदम्।
वागीशं सुरराजपूजितपदं काव्यं कलाकोविदं
छायासूनुमशेषवन्द्यमतुलं स्वर्भानुमन्तर्भजे।।

-इनकुलराजतेजोनिधौ शाहजासुतैकराजसुततुलाजाराजस्य

मेषादिराशयःसर्वे दिनेशप्रमुखग्रहाः।
ये च लोकोपकर्त्तारः पान्तु मामिह ते सदा।।

-सर्वार्थचिन्तामणौ

श्रीमान्पङ्कजिनीपतिः कुमुदिनीप्राणेश्वरो भूमिभूः
शाशाङ्किः सुरराजवन्दितपदो दैत्येन्द्रमंत्री शनिः।
स्वर्भानुः शिखिनां गणोगणपतिर्ब्रह्मेशलक्ष्मीधरा-
स्तं रक्षन्तु सदैव यस्य विमला पत्री मया लिख्यते।।

-जन्मपत्रलेखक्रमे दिवाकरसुतविश्वनाथस्य

सूर्यो यच्छतु भूपतां द्विजपतिःप्रीतिं परां तन्वतां
माङ्गल्यं विदधातु भूमितनयो बुद्धिं विधत्तां बुधः।
गौरं गौरवमातनोतु च गुरुः शुक्रः सशुक्रार्थदः
सौरिर्वैरिविनाशनं वितनुतां रोगक्षयं सैंहिकः।।

-जातकचन्द्रिकायां

चन्द्रः

अमुद्रकुमुदत्विषः स्फुरितफेनलक्ष्मीस्पृशो
मरालकुलविभ्रमाः शफरफाललीलाभृतः।
जयन्ति गिरिजापतेस्तरलमौलिमन्दाकिनी-
तरङ्गचयचुम्बिनस्तुहिनदीधितेरंशवः॥

-सदुक्ति. उमापतिधरस्य

अमृतमयमनङ्गक्ष्मारुहस्यालवालं
मृतदिवसकपालं कालकापालिकस्य।
जयति मकरकेतोः शाणचक्रं शराणा-
ममरपुरपुरन्ध्रीदर्पणः श्वेतभानुः॥

-सदुक्ति. त्रिपुरारेः

अस्त्यत्रिनेत्रप्रभवः कलात्मा
शशीति नक्षत्रगणस्य नाथः।
यं वारिजश्रीहरमाप्तवाचो
वामं हरेर्लोचनमानमन्ति॥

-बालभारते अगस्त्यपण्डितस्य

कन्दर्पस्य जगत्त्रयी विजयिनःसाम्राज्यदीक्षागुरुः
कान्तामानशिलोञ्छवृत्तिरखिलध्वान्ताभिचारे कृती।
देवस्त्र्यम्बकमौलिमण्डनसरित्तीरस्थली तापसः।
श्रृङ्गाराध्वरदीक्षितो विजयते राजा द्विजानामयम् ॥

-सदुक्ति.विश्वेश्वरस्य

कला चान्द्री शम्भोः प्रणयकलहप्रापितरुषः
प्रणामे पार्वत्याः पदकमललाक्षापरिचिता।
श्रियै भूयादस्या वदनशशिनः कोपकलुषा-
त्प्रसादेनारुण्यं विनिमयवशेनेव दधती॥

-उन्मत्तराघवे भास्करकवेः

कलां तामैन्दवीं वन्दे यया यादस्पतिः पिता।
आरुह्य हरमूर्द्धानं कृतस्त्रैलोक्यमूर्द्धनि॥

-सूक्तिमु. हरिहरस्य

गौर्या द्यूतजिता नीता कर्णे केतकिपत्रताम्।
शाम्भवी वः शशिकला भूयादानन्दसम्पदे॥

-बृहत्कथामञ्जर्यां क्षेमेन्द्रस्य

जटाहिरत्नद्युतिपाटलोऽव्यात्
स वःशशी शङ्करमौलिरत्नम् ।
श्रुतावशोकाङ्कुरकौतुकेन
यं कर्तुमिच्छत्यचलेन्द्रकन्या॥

-नवसाहसाङ्कचरिते परिमलपद्मगुप्तस्य

जयति परिमुषितलक्ष्मा भयादनुपसर्पतेव हरिणेन।
इह केसरिकरजाङ्कुरकुटिला हरमौलिविधुलेखा॥

-सुभा.सुधा.भा.

दिव्यापगाप्लवनपावकसेवनाभ्यां
बिभ्रत्तनुं शुचिमपेतकलङ्कशङ्काम् ।
दोषानुषङ्गरहितस्तिमिरोष्मशान्त्यै
भूयाद् द्विजाधिपतिरीश्वरवन्दितो वः॥

-स्तुतिकु. जगद्धरस्य

दिश्याद् धूर्जटिजूटकोटिसरिति ज्योत्स्नालवोद्भासिनी
चान्द्री वः कलिका जलभ्रमिवशादाकृष्टनष्टा मुदम् ।
यां चञ्चच्छफरीभ्रमेण मुकुलीकुर्वन् फणालीं मुहु-
र्मुह्यल्लक्षमहिर्जिघृक्षतितमामाकुञ्चनप्रोञ्चनैः॥

-सूक्तिमु.

देहप्रविष्टाद्रिसुतामुखेन्दुद्वितीयखण्डार्द्धमिवागतो यः।
अवाप्तुकामः परिपूर्णभावं स पातु वः शम्भुजटार्द्धचन्द्रः॥

-सूक्तिमु. बिल्हणस्य

नित्यं कुवलयोल्लासवर्द्धनैकपरायणः।
आदधत्सर्वतः शान्तिमेष भाति द्विजेश्वरः।।

-सुभा.सुधा.भा.

नेपथ्यं भूतभर्तुस्त्रिदशपरिषदां जीवनं यामिनीना-
मुत्तंसः पांसुलानां कुलरिपुरमृतस्त्रोतसामादिशैलः।
आतङ्कः पङ्कजानां जयति रतिकलाकेतनं मीनकेतोः
सिन्धूनामेकबन्धुः कुमुदसमुदयानन्दकन्दोऽयमन्दुिः।।

-सदुक्ति. शरणस्य

पान्तु वो व्योमकेशस्य जटाबन्धेन्दुरश्मयः।
भान्ति ये शैलजाकण्ठे मालतीमालिका इव।।

-अभिलेखे

पूर्णनखेन्दुर्द्विगुणितमञ्जीरा प्रेमशृङ्खला जयति।
हरशशिलेखा गौरीचरणाङ्गुलिमध्यगुल्फेषु।।

-आर्यासप्तशत्यां गोवर्द्धनाचार्यस्य

बद्धस्पर्धः क्षितिधरसुताभ्रूलतावक्रतायां
भूयाद् भूत्यै तव हरशिरः शेखरो रोहिणीशः।
यं निष्पीड्य स्तनमुखनखोल्लेखरेखासु देव्याः
संभोगान्ते वितरति सुधास्यन्दमर्धेन्दुमौलिः।।

-राजेन्द्रकर्णपूरे महाकविशम्भोः

भालप्रज्वलनाक्षिकैतवसतीविश्लेषवैश्वानर-
ज्वालावर्तितसौरसैन्धवपयः फेनैकलेखेव या।
सा गौरीमिलने पुनः पुरिपोः प्रेमप्रदीपे रस-
दातुं शक्तिरुपाहितेव कलिता चान्द्रीकला पातु वः।।

-कुवलयाश्वीये कृष्णदत्तस्य

मङ्गल्य वः करोतु ज्वलनदयितया सङ्गमे भर्त्तृभीत्या
ग्रस्ताङ्गो हन्त तस्यामपि च हुतभुजा ग्रस्ततां प्रापितायाम् ।

निश्चन्द्रे व्योममार्गे सदसि च हरिणा कौशलाद्दर्शितात्मा
वासोभिः सोपहासं सकलसुरगणैरर्चितोऽयं मृगाङ्कः॥

-स्वाहासुधाकरे नारायणभट्टपादस्य

मिलन्मन्दाकिनी मल्लीदामां मूर्द्धिन पुरद्विषः।
विश्वबीजाङ्कुरप्रख्यां वैधवीं तां कलां नुमः॥

-किरणावलीप्रकाशे गङ्गेश्वरसुतवर्द्धमानस्य

यमालोक्य स्वस्मिन्मणिमुकुरहासिस्तनतटे
स्फुरद्वक्त्राकारं कररुहपदाशङ्किहृदया।
सलज्जा हस्ताभ्यां स्थगयति नवोढा मुहुरुमा
स बालेन्दुः क्लान्तिं हरमकुटवासी हरतु वः॥

-शृङ्गारकोशभाणे अभिनवकालिदासस्य

यस्यानुग्रहणादवापि विशदा ज्योत्स्नाऽभिरामाऽयमा
स्वामित्वं सुरुचामगण्यगणनां यातां च भानां मतम्।
पीयूषांशुकता द्विजाधिपतिता चाह्लादिता तापिनां।
येनासौ भवतान्मुदे स्मररिपोर्वश्चन्द्रमौलेः शशी॥

-त्रिपुरदाहकथायां रामस्वरूपशास्त्रिणः

याः क्षीरसिन्धुलहरीवृतमन्दराद्रि-
मुद्रामनङ्गदमनस्य नयन्ति जूटम्।
द्विर्भाविताविरलसिद्धसरित्तरङ्गा-
स्ता लङ्घयन्त्वघमघर्मरुचो रुचो वः॥

-स्तुतिकु. जगद्धरस्य

रविमावसते सतां क्रियायै सुधया तर्पयते सुरान्पितृंश्च।
तमसां निशि मूर्छतां विहन्त्रे हरचूडानिहितात्मने नमस्ते॥

-सुभा.सुधा.भा.

लीलासद्मप्रदीपस्त्रिपुरविजयिनः स्वर्णदीकेलिहंसः
कन्दर्पोल्लासबीजं रतिरसकलहक्लेशविच्छेदचक्रम्।

कह्लाराद्वैतबन्धुस्तिमिरजलनिधेरुच्छिखो वाडवाग्नि-
र्लक्ष्म्या क्रीडारविन्दं जयति भुजभुवां वंशकन्दः सुधांशुः।।

-सदुक्तिः केशवसेनस्य

विद्युत्पिङ्गलभाललोचनशिखिज्वालागलत् स्वामृत-
स्रोतः स्पर्शनजीवितः शवशिरःश्रेणीः शिवे नृत्यति
एको राहुरनेकताङ्गत इति त्रासादिव प्रेक्ष्यता-
श्चन्द्रः सान्द्रजटाटवीसुरसरिद्दुर्गाश्रितः पातु वः।।

-अभिलेखे

विश्वेश्वरस्य जगतीममृतं क्षरन्ती
मौलौ कलावतुमहौषधिनायकस्य।
कण्ठस्थलीनिहितदुःसहकालकूट
ज्वालाकलापशमनार्थमिव स्थित्ता या।।

-रसरत्नवल्यां

व्यलीके पार्वत्याःपरिलघुलवैरञ्जनजुषः
पतद्भिर्वाष्पस्य क्रमलिखितलक्ष्मा विजयते।
लसल्लीलाचन्द्रश्चरणगतमौलेः स्मरजितः
किरद्भिःस्वज्योत्स्नानखमणिभिरापूरितकणः।।

-सदुक्ति. वामनस्य

व्योमाम्भोनिधिपुण्डरीकममृतप्राधारधारागृहं
श्रृङ्गारद्रुमपुष्पमीश्वरशिखालङ्कारमुक्तामणिः।
कालाकारतमोभिभूतकुमुदग्रामाय मृत्युञ्जयो
जीयान्मन्मथराष्ट्रपोष्ठिकमहाशान्तिद्विजश्चन्द्रमाः।।

-सदुक्ति. उमापतिधरस्य

शम्भोरिन्दुकला शिवं दिशतु वो यस्याः प्रतिच्छायिकां
त्रिस्रोतः पतितामनेककुटिलीभावं गतां वीचिभिः।
सेनानीरवलोकते ध्वजपटाकूतेन कात्यायनी
मल्लीदामसमीहया निजवधूबोधेन नागाधिपः।।

-सदुक्ति. उमापतेः

श्रृङ्गारे सूत्रधारः कुसुमशरमुनेराश्रमब्रह्मचारी
नारीणामादिदेवस्त्रिभुवनमहितोरागयज्ञे पुरोधाः।
ज्योत्स्नासत्रं दधानःपुरमथनजटाजूटकोटीशयालु-
र्देवः क्षीरोदजन्मा जयति कुमुदिनीकामुकः श्वेतभानुः।।

-सदुक्ति. वसुकल्पस्य

शैवी शिवं दिशतु शीतमरीचिलेखा
जूटाहिरत्नकिरणच्छुरणारुणा वः।
देवी नवीननखलक्ष्मधिया पिधत्ते
यत्संक्रमं कुचतटे पटपल्लवेन।।

-स्तुतिकु. जगद्धरस्य

श्रियं दिशतु वः शम्भोर्मूर्द्धिन शैतांशवी कला।
कालव्यालकृतानेकजगद्व्यापत्तिहारिणी।।

-अभिलेखे

श्रीकण्ठस्य कपर्दबन्धनपरिक्लान्तोरगग्रामणी-
सन्दष्टां मकुटावतंसकलिकां वन्दे कलामैन्दवीम् ।
या बिम्बप्रतिपूरणाय परितो निष्पीड्य संदंशिका
यन्त्रेणेव ललाटलोचनशिखिज्वालाभिरावर्त्यते।।

-सूक्तिमु. मुरारेः

श्रीकण्ठस्य शिरस्पदे त्रिजगतीनिष्पत्तिदिव्यौषधे-
रश्रान्तभ्रमदभ्रसिन्धुलहरीमालाभिरार्द्रीकृते।
नूत्नामङ्कुररेखिकामिव बहोः कालाद्बहिर्निर्गतां
वन्दे चान्द्रमसीकलामनुकलं बोधाय बोधात्मिकाम् ।।

-कुशकुमुद्वतीये अतिरात्रयाजिनः

श्रेयो मे विदधातु शङ्करजटागङ्गातरङ्गानिल-
व्यालोलेन्दुकलानिरर्गलगलत्प्रोद्दामधारासुधा।
यामालोक्य करप्रसारणपरो मायाकरीन्द्रो गुहो
वामाङ्कस्थितपार्वतीस्तनयुगस्तन्यं पिबन्मोदते।।

-वीरभद्रविजये एकाम्रदीक्षितस्य

स जयति हिमकरलेखा चकास्ति यस्योमयोन्मुखीविहिता
नयनप्रदीपकज्जलजिघृक्षया रजतशुक्तिरिव॥

-सुभा. सुधा. भा.

स वः पायादिन्दुर्नवबिसलताकोटिकुटिलः
स्मरारेर्यो मूर्द्धिन ज्वलनकपिशे भाति निहितः।
स्रवन्मन्दाकिन्याःप्रतिदिवससिक्तेन पयसा
कपालेनोन्मुक्तः स्फटिकधवलेनाङ्कुर इव॥

-सदुक्ति. राजशेखरस्य

सूनास्त्रमित्रसदृशाभिधहन्तृशक्तेर्भ्रातापतीकमददस्त्रममोघमब्जः।
सर्वंसहाधरसुतापतिमूर्द्धिनसंस्थो दृग्व्यापकस्य भवतां प्रमुदेऽस्तु नित्यम्॥

-वाग्भूषणे रामचन्द्रकवेः

स्वर्भानुप्रतिवारपारणमिलद्दन्तौघयन्त्रोद्भवा-
वभ्रालीपतयालुदीधितिसुधासारस्तुषारद्युतिः।
पुष्पेष्वासनतत्प्रियापरिणयानन्दाभिषेकोत्सवे
देवः प्राप्तसहस्रधारकलशश्रीरस्तु नस्तुष्टये॥

-सुभा.सुधा.भा.

मङ्गलः

मङ्गलं वसुधापुत्रं मङ्गलार्थी तु यः स्मरेत्।
तस्य मङ्गलमेव स्यात्सर्वकर्माणि सर्वदा॥

-शृङ्गारशतके

यः शम्भुबाणसदनाम्बरवेष्टिताङ्गापीनस्तनप्रसृतदुग्धधयःप्रपुष्टः।
राज्येस्थितश्च भविनां प्रददाति राज्यं युष्माकमादिशतु मङ्गलमानवनेयः॥

-वाग्भूषणे रामचन्द्रकवेः

सूर्यः

अगाधापत्त्यब्धेस्तरणकरणे सुन्दरतरी
हरीभूतो रात्रिव्रजमृगमहामानमथने।
करी मर्त्त्यामर्त्त्याद्यसुलभतरीभूतधिषणा
दरीदातृप्रेम्णामिह जयति दीपात्मकहरिः।।

-दीपप्रकाशे प्रेमनिधिपन्थस्य

अङ्गी कुर्वन्तिभङ्गीमखिलगिरिगणास्तप्तजाम्बूनदाभां
दूरी कुर्वन्ति पूरीकृतकनकगिरिस्मारगर्वं च यस्याः।
दुर्वृत्तध्वान्तधारा सुरवरपटलीदाहसञ्जातकीर्तिः
सेयं प्राचीप्रदीप्तिर्दलयतु दुरितं सर्वदा सर्वदा मे।।

-स्मृतिप्रकाशे आयाजिभट्टसुत-भास्करभट्टस्य

अज्ञानध्वान्तमस्तं भवति तनुभृतां यत्प्रसादात्समस्तं
यत्तेजः सम्भृताः खे शशिमुखखचरा दीपिताशान्तरालाः।
यस्मादभ्येति सौख्यं जगदिदमतुलं येन कालो विभक्तः
सम्पूर्णस्तम्भजामि द्युमणिमभिमतग्रन्थरूपार्थसिद्ध्यै।।

-इनकुलराजतेजोनिधौ तुलजाराजस्य

अतिमृदुलकराग्रैः कुङ्कुमाभैरुदग्रैरुदय-
शिखरिशृङ्गस्वर्णसिंहासनस्थः।
नवघनकुचभारं दिग्वधूनां विलिम्पन्
जयति किरणमाली पद्महस्तप्रसन्नः।।

-जन्मपत्रलेखक्रमे दिवाकरसुतविश्वनाथस्य

अवतु वः सवितुस्तुरगावली स्फुरति मध्यगतारुणनायका।
समभिलम्भिततुङ्गपयोधरा मरकतैकलतेव नमश्श्रियः।।

-सूक्तिमु.

आदौ रक्तं पुनारक्तं मध्यउज्ज्वलभास्वरम् ।
दुर्निरीक्ष्यप्रभावन्तं दृश्यं द्रष्टारमाश्रये।।

-सुभा.सुधा.भा.

आद्यूनस्तमसां चकोररमणीरागाब्धिमन्थाचलो
जीवातुर्जलजस्य वासवदिशाशैलेन्द्रचूडामणिः।
आदेष्टा श्रुतिकर्मणां कुमुदिनीशोकाग्निपूर्णाहुति-
र्देवः सोमरसायनं विजयते विश्वस्य बीजं रविः।।

-सदुक्ति.विभाकरस्य

इदमन्धं तमो हित्वा यज्ज्योतिर्भासतेतराम् ।
नमोऽस्तु तस्मै सूर्याय जगज्जन्मादिहेतवे।।

-स्कान्दशारीरके

उदयगिरिशिरस्थो निद्रयामूढमेत-
ज्जगदगदमशेषं निर्मिमीतेऽनिशं यः।
अमिततमतमिस्त्रोद्दामदारिद्र्यहारि
प्रसृमरकिरणौघः स्तान्मुदे वः स देवः।।

-वैद्यवल्लभे शार्ङ्गधरस्य

उदयशैलभुजङ्गफणामणिर्दिवसभूरुहनूतनपल्लवः।
दिशतु नः स गिरं महसां निधिर्द्युसरसीसरसीरुहमुल्लसन् ।।

-होरामकरन्दे गुणाकरस्य

उदयाचलतिलकाय प्रणतोऽस्मि विवस्वते ग्रहेशाय।
अम्बरचूडामणये दिग्वनिताकनककर्णपूराय।।

-सूर्यसप्तार्यास्तोत्रे

उद्गाढेनारुणिम्ना विदधति बहुलं येऽरुणस्यारुणत्वं
मूर्धोद्धूतौ खलीनक्षतरुधिररुचो ये रथाश्वाननेषु।
शैलानां शेखरत्वं श्रितशिखरिशिखास्तन्वते ये दिशन्तु
प्रेङ्खन्तः खे खराशोः खचितदिनमुखास्ते मयूखाः सुखं वः।।

-सुभा.सुधा.

उल्लासः फुल्लपङ्केरुहपटलपतन्मत्तपुष्पंधयानां
निस्तारः शोकदावानलविकलहृदां कोकसीमन्तिनीनाम् ।
उत्पातस्तामसानामुपहतमहसां चक्षुषां पक्षपातः
संघातः कोऽपिधाम्नामयमुदयगिरिप्रान्ततः प्रादुरासीत् ॥

-सुधालहर्य्यां जगन्नाथस्य

एकस्मिन्नयने भृशं तपतिः यः काले स दाहक्रमो
येनातन्यत यत्प्रकाशसमये नैशं पदं दुर्लभम् ।
सव्योमावयवस्य यस्य विदिता लोके प्रकाशस्थितिः
श्रीसूर्यः क्षणसेवितोऽपि हि महादेवः स वस्त्रायताम् ॥

-सूक्तिमु.

ऐन्द्र्यामुखञ्चिकुरसान्द्रतमोनियम्य
स्पर्शेन रञ्जितमिवाननमाशु कुर्वन् ।
छायासखः कमलिनीहृदयाधिदेवो
भास्वन् विभासयतु मङ्गलमुज्ज्वलं नः॥

-नारदसंहितायाष्टीकायां विमलाख्यायां रामजन्ममिश्रस्य

कटुभिरपि कठोरचक्रवाकोत्करविरहज्वरशान्तिशीतवीर्यैः।
तिमिरहतमयं महोभिरञ्जञ्जयति जगन्नयनौघमुष्णभानुः॥

-सुभा.सुधा.भा.

कालस्य कर्त्ता कमनस्य भर्ता लोकस्य धर्ता तिमिरस्य हर्ता।
विकर्त्तने सत्यथ वर्तमाने स्फूर्तिर्गिरां कीर्तिमखीं क्रियान्नः॥

-रोमकसिद्धान्ते रोमकस्य

किं छत्रं किं नु रत्नं तिलकमुत तथा कुण्डलं कौस्तुभो वा
चक्रं वा वारिजं वेत्यमरयुवतिभिर्यद्बलिद्विषि देहे।
ऊर्ध्वं मौलौ ललाटे श्रवसि हृदि करे नाभिदेशे च दृष्टं
पायात्तद्वोऽर्कबिम्बं स च दनुजरिपुर्वर्धमानः क्रमेण॥

-सुभा.सुधा.भा.

खण्डितानेककञ्जालिमञ्जुरञ्जनपण्डिताः ।
मण्डिताखिलदिक्प्रान्ताश्चण्डांशोः पान्तु भानवः।।

-जगन्नाथकृत-भामिनीविलासे मातृकायां स्फुटश्लोकः

खं येऽत्युज्ज्वलयन्ति लूनतमसो ये चानखोद्भासिनो-
ये पुष्णन्ति सरोरुहश्रियमधिक्षिप्ताब्जभासश्च ये।
ये मूर्धस्ववभासिनः क्षितिभृतां ये चामराणां शिरां-
स्याक्रामन्त्युभयेऽपि ते दिनपतेः पादाः श्रियै सन्तु नः।।

-सूक्तिमु. आनन्दवर्द्धनस्य

गर्भेष्वम्भोरुहाणां शिखरिषु च शिताग्रेषु तुल्यं पतन्तः
प्रारम्भे वासरस्याप्युपरतिसमये चैकरूपास्तथैव।
निष्पर्यायं प्रवृत्तास्त्रिभुवनभवनप्राङ्गणे पान्तु युष्मा-
नूष्माणं सन्तताध्वश्रमजमिव भृशं बिभ्रतो ब्रध्नपादाः।।

-सुभा.सुधा.

गवामपि न गोचरो भवति यो हि कालोप्यसौ
यदीयगतिमानतः स्फुटतयैव सम्मीयते।
जडं जगदिदं तथा चिदिव यस्य भासा पुन-
र्विभाति सततं हृदा तमहमाश्रये भास्करम् ।।

-बृहद्दैवज्ञरञ्जनस्य श्रीधरी इत्याख्यायां टीकायां

जडात्मके मद्हृदयारविन्दे संमूर्च्छिता मोहमहान्धकारम् ।
निरस्य शश्वन्मुदमावहन्त्यो जयन्ति रम्या मिहिरस्य गावः।।

-होरामकरन्दे गुणाकरदैवज्ञस्य

जम्भारातीभकुम्भोद्भवमिव दधतः सान्द्रसिन्दूररेणुं
रक्ताः सिक्ता इवौघैरुदयगिरितटीधातुधाराद्रवस्य।
आयान्त्या तुल्यकाला कमलवनरुचेवारुणा वो विभूत्यै
भूयासुर्भासयन्तो भुवनमभिनवा भानवो भानवीयाः।।

-मयूरशतके मयूरकवेः

जयति किरणमाली पद्मिनीकेलिशाली
निशिचरसुखहारी खण्डितादुःखकारी।
तिमिरचयनिहर्ता सर्वरोगापहर्ता
मुनिजनसुखकर्ता सर्वलोकोपकर्ता।।

-जातकचन्द्रिकायां प्राणधरमिश्रस्य

जयति जगति गूढानन्धकारे पदार्थान्
जनघनघृणयायं व्यञ्जयन्नात्मभाभिः।
विमलितमनसांसद्वासनाभ्यासयोगै-
रपि च परमतत्त्वं योगिनां भानुरेकः।।

-सिद्धान्तशिरोमणौ

जरीजृम्भत् स्तम्भादुदयगिरिश्रृङ्गादिव रविः
विभिन्दानो रक्षस्तिमिरपटलीं यः कररुहैः।
वितन्वन्नानन्दं मृगपतिनराकारघटितः
स नः श्रेयो देयादमृतफलवल्लीसहचरः।।

-तत्त्वमुक्ताकलापे वेंकटनाथमहादेशिकस्य

जलक्रीडालोलत्रिदशतरुणीनागरमणी
नवश्यामाश्रेणी घनजघनपीनस्तनभरैः।
त्रुटद्वीचीमञ्चत्कनककलहंसीकलरवैः
समाहूतब्रह्मश्रियमिव भजे देवसवितम् ।।

-गङ्गाप्रकाशे वाचस्पतेः

जीयादेकफलं नभस्तलतरोरभ्रंशि सिन्दूरिणी
मुद्रा कैरवकाननस्य तिमिरस्तेयाय सन्धिर्दिवः।
मन्दारस्तवकोन्तरीक्षकबरीभारस्य गौरीपतेः
कम्पिल्लच्छदपाटलच्छवि कुलच्छत्रं रघूणां रविः।।

-सदुक्ति. हरेः

तमिस्राजगरग्रस्तं यो जीवयति भूतलम् ।
तं वन्दे परमानन्दं सर्वसाक्षिणमीश्वरम् ।।

-लग्नचन्द्रिकायां काशीनाथस्य

तमः स्तोमं सद्यस्त्रिभुवनपिनद्धं शमयितुं
समर्था या शुद्धद्भुतकनककान्तिप्रतिनिधिः।
द्युतिः सा काचिन्मे स्फुरतु तुहिनाऽद्रिप्रकटिता
सहस्त्रारेऽजस्रं ग्रहपतिसहस्त्रोज्ज्वलवपुः॥

-सिद्धान्तमुक्तावल्याष्टीकायां मुक्तावलीप्रभाख्यायां टीकायां हरिहरशास्त्रिणः

तिमिरकरिकिरातः प्रत्यहं सूत्रपातः
कमलविपिनबन्धुः पुण्यकारुण्यसिन्धुः।
भुवनभवनदीपः कुष्ठपापप्रतीपः
सुरसरिकृतसेवः पातु वो भानुदेवः॥

-मयूरकविकृत-सूर्यशतकमातृकायां स्फुटश्लोकः

तिमिराम्बुनिधौ मग्नं करैरुद्धृत्य यो जगत्।
प्रीणयत्यातुरं प्रीत्या तस्मै सर्वात्मने नमः॥

-प्रश्नप्रदीपे काशीनाथस्य

तुङ्गोदयाद्रिभुजगेन्द्रफणोपलाय
व्योमेन्द्रनीलतरुकाञ्चनपल्लवाय।
संसारसागरसमुत्क्रमियोगिसार्थ-
प्रस्थानपूर्णकलसाय नमः सवित्रे॥

-सदुक्ति. वराहमिहिरस्य

तृष्णातरङ्गदुस्तरसंसाराम्भोधिलङ्घने तरणिः।
उदयवसुधाधरारुणमुकुटमणिः पातु वस्तरणिः॥

-शुद्धिदीपिकायां श्रीनिवासस्य

ते देवस्य गभस्तयो दिनपतेरापन्नखेदच्छिदो
निष्क्रन्तन्तु कृतान्तपत्तनपथप्रस्थानदौस्थानि वः।
यैः सौवर्णमिवाखिलं करुणया निर्म्मातुमभ्युद्यतैः
कीर्णस्वर्णपरागरागघटितं दिक्चक्रमालक्ष्यते॥

-चतुर्वर्गचिन्तामणौ दानखण्डे हेमाद्रिसूरिणः

दत्तानन्दाः प्रजानां समुचितसमयाकृष्टसृष्टैः पयोभिः
पूर्वाह्ने विप्रकीर्णा दिशि दिशि विरमत्यह्निसंहारभाजः।
दीप्तांशोर्दीर्घदुःखप्रभवभवभयोदन्वदुत्तारनावः
गावो वः पावनानां परमपरिमितां प्रीतिमुत्पादयन्तु॥

-सुभा.सुधा.

दिवाकरपदद्वन्द्वं फलद्वन्द्वप्रकाशकम् ।
त्रैलोक्यतमसोनाशकर्त्तृ तत्प्रणमाम्यहम् ॥

-व्रतार्के नीलकण्ठभट्टसुत-शङ्करभट्टस्य

दीपवद्द्योतयति यो भूर्भुवः स्वर्जगत्त्रीयम् ।
सवितुस्तं वयं भर्गमपवर्गकरं स्तुमः॥

-ब्राह्मणसर्वस्वे हलायुधस्य

द्विषन्मण्डलीमुण्डसंखण्डनोऽयं
नताखण्डलः पुण्डरीकाभतुण्डः ।
लसन्मण्डलोद्बाहुदण्डः प्रचण्डं
गदं खण्डयत्वाशु नश्चण्डभानुः॥

-अमरकाव्ये रणछोडभट्टस्य

धात्री यत् ज्वरसम्पर्कात् सग्रहर्क्षा विराजते।
तस्मै सर्वात्मने भूयो भास्कराय नमो नमः॥

-कालदीपके

धृतपद्मद्वयं भानुं तेजोमण्डलमध्यगम् ।
सर्वाधिव्याधिशमनं छायाक्लिष्टतनुं भजे॥

-सूर्यद्वादशार्यास्तोत्रे

नमस्तमः कर्दमदुर्दमाम्बुधि-
प्रनष्टचेष्टाखिलजन्तुसन्ततिम् ।
प्रसार्यमाणैः पटुदीर्घरश्मिभिर्-
जगत्त्रयीमुद्धरते विवस्वते॥

-साहित्यरत्नाकरे धर्मसूरिणः

निपीत ध्वान्ताय प्रसृमरकरायोग्रमहसे
निकामं कामानां वितरणविनोदव्यसनिने।
समस्तप्रत्यूहप्रशमनकृते श्रीदिनकृते
नमस्तस्मै यस्मै स्पृहयति समस्ताम्बुजततिः॥

-सुभा.सुधा.भा.

न्यक्कुर्वन्नोषधीशे मुषितरुचिशुचेवौषधीः प्रोषिताभा
भास्वद्गावोद्गतेन प्रथममिव कृताभ्युद्गतिः पावकेन।
पक्षच्छेदव्रणासृक्स्रुत इव दृषदो दर्शयन् प्रातरद्रेः
आताम्रस्तीव्रभानोरनभिमतनुदे स्ताद् गभस्त्युद्गमो वः॥

-सुभा.सुधा.

पुष्णान्देवानमृतविसरैरिन्दुमास्राव्य सम्य-
ग्भाभिः स्वामी रसयति रसं यः परं नित्यमेव।
क्षीणं क्षीणं पुनरपि च तं पूरयत्येवमीदृ-
ग्दोलालीलोल्लसितहृदयं नौमि चिद्भानुमेकम् ॥

-साम्बकविकृत-साम्बपञ्चाशिकायां टीकायां क्षेमराजस्य

प्रणतिकृतिसमस्तशस्तहेतुर्व्यसनमहार्णवतारणैकसेतुः।
जगदवनसमाप्तिसर्गशाली घटयतु मङ्गलराशिमंशुमाली॥

-सिद्धान्तसुधायां परमानन्दठाकुरस्य

प्रबोधं याति यस्येदमुदये सकलं जगत् ।
नमामि तं सहस्राशुं समस्तज्योतिषां प्रभुम् ॥

-दृग्गणिते परमेश्वरस्य

प्रभवविरतिमध्यज्ञानवन्ध्या नितान्तं
विदितपरमतत्त्वा यत्र ते योगिनोऽपि।
तमहमिह निमित्तं विश्वजन्मात्ययाना-
मनुमितमभिवन्दे भग्रहैः कालमीशम् ॥

-ज्योतिषरत्नमालायां श्रीपतिमिश्रस्य

प्रभ्रश्यत्युत्तरीयात्त्विषि तमसि समुद्वीक्ष्य वीतावृतीन्द्रा-
ग्जन्तूंस्तन्तून्यथा यानतनु वितनुते तिग्मरोचिर्मरीचीन् ।
ते सान्द्रीभूय सद्यः क्रमविशददशाशादशालीविशालं
शश्वत्सम्पादयन्तोऽम्बरममलमलं मङ्गलं वो दिशन्तु।।

-सुभा.सुधा.

प्रवर्त्तयति सालोकं लोकं यज्ञादिकर्मसु।
यन्मुहूर्ताकरोद्यानं वन्देऽर्कं कालमीश्वरम्।।

-मुहूर्त्तगणपत्यां गणपतेः

प्रस्फुरन्मधुपचुम्बितपद्मा पङ्कजातजनि पङ्क़िनीयम् ।
बुध्यते किल जडापि च यस्मात्त्सारुणं तदिहधाम नमामः।।

-भट्टकेदारकृत-वृत्तरत्नाकरस्य टीकायां
सेतु इत्याख्यायां भास्करशर्मणः

प्रव्हाम्भोजसुरासुरेन्द्रनिलयस्फुर्य्यं किरीटोज्ज्वलत् -
ज्योत्स्नालीढपदारविन्दयुगलस्त वरूपी रविः।
ब्रह्माण्डोदरसंस्थिताखिलजगत् ध्वान्तस्यसध्वंसनो
यः कुर्व्वन्नखिलं जगत्यनुदिनं पर्य्येति कालात्मकः।।

-जगन्मोहने लक्ष्मणाचार्यस्य

प्राचीकुङ्कुमतिलकं पूर्वाचलरोहणैकमाणिक्यम् ।
त्रिभुवनगृहैकदीपं वन्दे लोकैकलोचनं देवम् ।।

-सुभा.सुधा.भा.

प्रोद्यत्कालकरालवाटबहुलध्वान्तप्रचण्डासुर-
त्रासापास्तसमस्तदैवतबलक्षोणीतलोद्धारणम् ।
भूयांसो विबुधाधियादिविबुधा मुग्धामुदाडम्बराः
कर्तुं केपि न पारयन्ति भगवन्मार्तण्डपादैर्विना।।

-पद्यामृततरङ्गिण्यां अन्योक्तितरङ्गे आयाजिसुत-भास्करभट्टस्य

फुल्लन्ति वारिजगणाः विहरन्ति कोकाः
कामं चरन्ति विहगाः सकलासु दिक्षु।
शिष्याः पठन्ति च भवन्ति शुभानि लोके
यस्योदये तमहमाशुरविं नमामि॥

-मन्त्रचन्द्रिकायां गोस्वामिजनार्दनस्य

बन्ध्वंसैकहेतुं शिरसि नतिवशाबद्धसन्ध्याञ्जलीनां
लोकानां ये प्रबोधं विदधति विपुलाम्भोजषण्डाशयेव।
युष्माकं ते स्वचित्तप्रथिमपृथुतरप्रार्थनाकल्पवृक्षाः
कल्पन्तां निर्विकल्पं दिनकरकिरणाः केतवः कल्मषस्य॥

-सुभा.सुधा.

बिभ्राणा वामनत्वं प्रथममथ तथैवांशवः प्रांशवो वः
क्रान्ताकाशान्तरालास्तदनु दशदिशः पूरयन्तस्ततोऽपि।
ध्वान्तादाच्छिद्य देवद्विष इव बलिनो विश्वमाश्वश्नुवानाः
कृच्छ्राण्युच्छ्रायहेलोपहसितहरयो हारिदश्वा हरन्तु॥

-सुभा.सुधा.

ब्रह्माच्युतेशनिगमागमयज्ञमूर्तिः
सृष्टिस्थितिप्रलयकृत्समयस्य हेतुः।
तेजोनिधिस्त्रिभुवनालयमुख्यदीपो
भूयात्सदा दिनकरो मम वाक्प्रसिद्ध्यै॥

-होराप्रदीपे नारायणस्य

ब्रह्माण्डसम्पुटकलेवरमध्यवर्ति-
चैतन्यपिण्डमिव मण्डलमस्ति यस्य।
आलोकितोऽपि दुरितानि निहन्ति यस्तं
मार्तण्डमादिपुरुषं प्रणमाणि नित्यम् ॥

-सुभा.सुधा.भा.

ब्रह्मादयो यद्वशगायुगादि कालप्रभेदाश्च यदीय भेदाः।
कालात्मकं सान्तकमूर्त्तयेऽहं नित्याय तस्मै विभवे नतोस्मि॥

-कालादर्शे आदित्यसूरिणः

भक्तिप्रह्वाय दातुं मुकुलपुटकुटीकोटरक्रोडलीनां
लक्ष्मीमाक्रष्टुकामा इव कमलवनोद्घाटनं कुर्वते ये।
कालाकारान्धकाराननपतितजगत्साध्वसध्वंसकल्याः
कल्याणं वः क्रियासुः किसलयरुचयस्ते करा भास्करस्य॥

-शा.प.मयूरस्य

भास्वन्मण्डलमध्यगः श्रुतिमयस्ताक्ष्र्योऽखिलैर्वन्दितः
पक्षोऽभूतमरुत्प्रकम्पितगिरिव्रातोरुतुण्डो महान् ।
दोर्दण्डैः कनकप्रभैर्दशशतैः पीयूषपूर्णान् घटान्
भोगीन्द्रासुहरप्रदीपनिचयान् बिभ्रत्करैः पातु वः॥

-ऐन्द्रगायत्रीमनुविधाने

मञ्जुलारुणविस्तीर्णं करपुष्कराजितं-
शिवोद्भवन्तं भास्वन्तं कमलामोददं भजे॥

-रमलसारे लक्ष्मीनृसिंहभट्टसुतश्रीपतेः

मार्त्तण्डोऽवतु वाचं नः प ञ्यतमोहरः।
वृत्ते बद्धतनुः सेव्योऽभीष्टदो विश्वलोचनः॥

-मुहूर्त्तमार्तण्डस्य टीकायां मार्तण्डवल्लभाख्यायां

मूर्तिस्त्वे परिकल्पितः शशभृतो वर्त्माऽपुनर्जन्मना-
मात्मेत्यात्मविदां क्रतुश्च यजतां भर्त्तामरज्योतिषाम् ।
लोकानां प्रलयोद्भवस्थितिविभुश्चानेकधा यः श्रुतौ
वाचं नः स ददात्वनेककिरणस्त्रैलोक्यदीपो रविः॥

-बृहज्जातके वराहमिहिरस्य

यच्छास्त्रं सविता चकार विपुलैः स्कन्धैस्त्रिभिर्ज्योतिषां
तस्योच्छित्तिभयात्पुनः कलियुगे संसृत्ययो भूतलम् ।
भूयस्स्वल्पतरं वराहमिहिरव्याजने सर्वं व्यधा-
दित्थं यं प्रवदन्ति मोक्षकुशलास्तस्मै नमो भास्वते॥

-योगयात्रायां वराहमिहिरस्य

यत्तेजः पितृधाम्नि शीतमहसः पाथोमये मण्डले
संक्रान्तं कुमुदाकारस्य कुरुते काञ्चिद्विकाशश्रियम् ।
चञ्चच्चञ्चुपुटैश्चकोरनिकरैश्चापीयतेऽसौ चिरं
त्रैलोक्यालयदीपको विजयते देवो निधिस्तेजसाम् ।।

-सिद्धान्तशेखरे श्रीपतेः

यत्र त्रातुमिदं जगज्जलजिनीबन्धौ समभ्युद्गते
ध्वान्तध्वंसविधौ विधौतविनमन्निःशेषदोषोच्चये।
वर्त्तन्ते क्रतवः शतक्रतुमुखा दीव्यन्ति देवा दिवि
द्राङ्नः सूक्तिमुचं व्यनक्तु स गिरं गीर्वाणवन्द्यो रविः।।

-सिद्धान्तशिरोमणौ भास्कराचार्यस्य

यद्विम्बमम्बरमणिर्यदपां प्रसक्ति-
र्नक्तं निषिञ्चति यदग्निशिखासु भासः।
ज्योत्स्ना निशासु हिमधाम्नि च यन्मयूखाः
पूषा पुराणपुरुषः स नमोस्तु तस्मै।।

-सुभा.सुधा.भा.

यद्भासा खलु नैशमन्धतमसं विध्वंसमेति क्षणा-
च्चन्द्रादीनि तथाम्बुगोलकमयान्यृक्षाणि दीव्यन्ति च।
यो विश्वोद्भवसंस्थितिप्रलयकृत्तत्वं परं योगिनां
द्राग्वाचं प्रकटी करोतु भगवांस्त्रैलोक्यदीपो रविः।।

-जातकसारदीपे नृसिंहदैवज्ञस्य

यश्चक्षुर्जगतः सहस्रकरबद्धाम्नां च धामार्कव-
न्मोक्षद्वारमपावृतं च रविवद्ध्वान्तान्तकृत्सूर्यवत् ।
आत्मा सर्वशरीरिणां सवितृवत्तिग्मांशुवत्काल-
कृत्साध्वीं नः स गिरं तनोतु सविता योन्यैरतुल्योपमः।।

-योगयात्रायां वराहमिहिरस्य

यस्मिन्पूर्वाद्रिशृङ्गोपरिकृतचरणे नश्यति ध्वान्तधारा
लिप्तं हेमांभसेव प्रभवति भुवनं रञ्जितं यस्य भासा

कृत्वा नाना वपूंषि द्विजजनमिषतो विष्णुनाराध्यते यो
मह्यं दद्यात्स देवो निरुपमविभवो भूरिशो मङ्गलानि॥

-रामविलासकाव्ये विश्वनाथकवेः

यस्योदयास्तसमये सुरमुकुटनिघृष्टचरणकमलोपि।
कुरुतेऽञ्जलिं त्रिनेत्रः स जयति धाम्नां निधिः सूर्यः॥

-लघुजातके वराहमिहिरस्य

यस्योदये जगत्पद्मं विकसत्येव सर्वतः।
सततं तमहं वन्दे द्युमणिं त्रिजगन्मणिम् ॥

-भावप्रकाशे जीवनाथस्य

यस्योदये जगदिदं प्रतिबोधमेति
मध्यस्थिते प्रसरति प्रकृतिक्रियासु।
अस्तंगते स्वपिति चोच्छ्वसितैकमात्रं
भावत्रये स जयति प्रकटप्रभावः॥

-सारावल्यां कल्याणवर्मणः

यस्योदये निखिलविश्वतमिस्त्रजाल-
विच्छेदनं भवति संकुचितं यदस्ति।
तं विश्ववन्द्यसुखन्दितपादपद्मं
सव्येतराच्युतदृशं प्रणमामि सूर्यम् ॥

-सूर्यसिद्धान्तविवरणे भूधरसूरिणः

यस्योदये मखभुजां प्रचरन्त्यशेषाः
पुण्याक्रियाः प्रतिदिनं हवनार्चनाद्याः।
सोऽयं तमिस्त्रदलनो दिशतादभीष्टं
भानुस्त्रयीमयतनुः परिपूर्णरूपः॥

-प्रायश्चित्तमुक्तावल्यां दिवाकरसुत-वैजनाथस्य

युष्माकमम्बरमणेः प्रथमे मयूखा-
स्ते मङ्गलं विदधतूदयरागभाजः।

कुर्वन्ति ये दिवसजन्ममहोत्सवेषु
सिन्दूरपाटलमुखीरिव दिक्पुरंध्रीः॥

-भल्लटशतके भल्लटस्य

यो जाग्रन्निजकरमन्दराद्रिमन्थै-
र्निर्मथ्यप्रथिततरान्धकारसिन्धुम् ।
लोकेभ्यो वितरति सत्प्रकाशरत्नं
तं वन्दे वनजवनीविनोदबन्धुम् ॥

-व्रतार्के शङ्करभट्टस्य

यो ध्वान्तसन्तति विशालपयोधिमध्यान्
निष्कासयत्यशरणं भुवनं निमज्जत् ।
दत्त्वा जगत्त्रयहितः स्वकरावलम्बं
वाञ्छां स वो दिनकरः सफली करोतु॥

-मदनविनोदविघण्टौ मदनपालस्य

यो निर्गुणो गुणमयं वितनोति विश्वं
तापत्रयं हरति यस्तपनोप्यजस्त्रं।
कालात्मको जगति जीवयते च जन्तून्
ब्रह्माण्डसम्पुटमणिं द्युमणिं तमीडे॥

-राजबलौ

यो रक्तताममतितरामतुलो दधानो
दृक्प्रौढदारनृहमोहनवाप्तवासः।
योषिद्द्वयीपतिविडम्बनभृत् स शश्वत्
पायादपायसमुदायहरो रविर्नः॥

-सुभा.सुधा.भा.

यो लीलया संतनुतेऽत्र विश्वं
तत्पालयत्यात्मनि विश्वरूपे।

लयं नयत्याशु च पूर्णरूपः
शिवं तनोत्वाशु रविर्ममासौ॥

-श्राद्धमयूखे नीलकण्ठस्य

यः पङ्गुसारथिरथो रथमेकचक्रं
आरुह्य तत्र विनियोज्य च सप्तसप्तीन् ।
लोकत्रयेप्यतनति चित्रचरित्रकारी
भानुः सभानुभिरहो मम पातु देहम् ॥

-मन्त्रचन्द्रिकायां गोस्वमिजनार्दनस्य

यः पद्मोद्भवदेवदानवपितृक्षोणीतलस्थक्षया-
हः मध्यादिविभागबोधितजगत्प्राग्भारमध्यान्तकृत् ।
गाढध्वान्ततिरोहिताखिलपदार्थानात्मभाभिर्जनो-
द्वेगोत्थव्यथमेव भासपतितं वन्दे ग्रहाणां पतिम् ॥

-गणिततवचिन्तामणौ लक्ष्मीदासमिश्रस्य

यः सृष्टिस्थितिसंहारकर्त्ता कालस्यरूपभृत् ।
तं महेशमहं वन्दे राशिरूपं स्थितं दिवि॥

-श्रीपतिकृत-ज्योतिषरत्नमालायाष्टीकायां
बालबोधिन्याख्यायां वैजपण्डितस्य

रक्ताब्जयुग्माभयदानहस्तं
केयूरहाराङ्गदकुण्डलाढ्यम् ।
माणिक्यमौलिं दिननाथमीडे
बन्धूककान्तिं विलसत्त्रिनेत्रम् ॥

-अमरुशतकमातृकायां स्फुटश्लोकः

रक्ताम्बुजासनमशेषं गुणैकसिन्धुं
भानुं समस्तजगतामपि तं भजामि।
पद्मद्वयाभयवरान्दधतं कराब्जै-
र्माणिक्यमौलिमरुणाङ्गरुचिं त्रिनेत्रम् ॥

-अमरुशतकमातृकायां स्फुटश्लोकः

लालयन्तमरविन्दवनानि क्षालयन्तमभितो भुवनानि।
पालयन्तमथ कोककुलानि ज्योतिषां पतिमहं महयामि।।

-सुभा.सुधा.भा.

वन्देऽरविन्दवनबान्धवमन्धकार-
कारानिबद्धभुवनत्रयमुक्तिहेतुम् ।
पर्यायविस्तृतसितासितपक्षयुग्म-
मुद्यन्तमद्भुतखगं निगमद्रुमस्य।।

-अभिलेखे

विघ्नौघौघनध्वान्तविघट्टनपटीयसे ।
भद्रार्थचित्प्रभादात्रे नमः श्रीभास्य भानवे।।

-मन्त्रदेवप्रकाशिकायां देवदत्तशर्मणः

विष्वग्विसारितिमिरप्रकरावरुद्ध-
त्रैलोक्यनेत्रपुटसिद्धरसायनाय।
तुभ्यं नमः कमलषण्डविषादनिद्रा-
विद्रावणोद्यतकराय दिवाकराय।।

-सदुक्ति.श्रीकण्ठस्य

वेदा यमाहुः पुरुषं प्रधानमादित्यवर्णं तमसः पुरस्तात् ।
स एव सूर्योप्यभिलाषसिद्धयै मेऽज्ञाननाशं विदधत् विभाति।।

-आरव्ययामिन्यां जगद्बन्धोः

व्रीडारागमुखस्य मन्थरपतत्पादस्य केलीगृहं
प्राच्चास्सव्यदिशो गवां जिगमिषोः पङ्केरुहश्श्रुम्बकः।
यात्रानन्तमतङ्गजारुणरजः संल्लिम्पयन्नम्बरे
कल्याणं विदधातु नो दिनपतेस्स्वर्मण्डनो मण्डलः।।

-भावलहर्य्यां प्रकाशशास्त्रिणः

शब्दाकरकरग्राममर्थमण्डलमण्डलम् ।
ज्ञानात्मानमनाद्यन्तमादित्यं तमुपास्महे॥

-कविकल्पद्रुमे वोपदेवस्य

शीर्णघ्राणङ्घ्रिपाणीन्घृणिभिरपघनैर्घर्घराव्यक्तघोषा-
न्दीर्घाघ्रातनघौघैः पुनरपि घटयत्येक उल्लाघयन्यः।
धर्मांशोस्तस्य वोऽन्तर्द्विगुणघनघृणानिघ्ननिर्विघ्नवृत्ते-
र्दत्तार्घ्याः सिद्धसंघैर्विदधतु घृणयः शीघ्रमंहोविघातम् ॥

-सुभा.सुधा.भा.

शुकतुण्डच्छविसवितुश्चण्डरुचः पुण्डरीकवनबन्धोः।
मण्डलमुदितं वन्दे कुण्डलमाखण्डलाशायाः॥

-शा. प. नागम्मायाः

शोणाम्भोरुहसंस्थितं त्रिनयनं वेदत्रयीविग्रहं
दानाम्भोजयुगं मयानिदधतं हस्तैः प्रवालप्रभम् ।
केयूराङ्गदहारकङ्कणधरं कर्णौ लसत्कुण्डलं
लोकोत्पत्तिविनाशपालनकरं सूर्यं गुणाब्धिं भजेत् ॥

-श्रीरामसपर्यासोपाने शिवलालशर्मणः

श्रिया समेतं श्रितपारिजातं वियत्प्रदीपं विततप्रतापं
नयप्रचारं नगराजधीरं दयासमुद्रं तपनं नमामि।
तेजोमये मण्डलमध्यभागे सिंहासने रत्नमयेऽब्जपीठे
आसीनमुग्रायुधदीप्तहस्तं छायापतिं चण्डकरं नमामि॥

-सूर्यशतके

श्रीकान्ताजशिवस्वरूपममरज्योतिर्गणस्वामिन् ।
मायातीतमशेषजीवजगतामीशं दिनेशं रविम् ॥

-जातकपारिजाते वैद्यनाथस्य

सन्दर्शनं वितनुते पितृदेवनृणां
मासाब्दवासरदलैरथ ऊर्ध्वगं यत् ।

सव्यं क्वचित्क्वचिदुपैत्यपसव्यमेकं
ज्योतिः परं दिशतु वस्त्वमितां श्रियं नः॥

-फलदीपिकायां

सर्वसम्पत्करो लोके सर्वविघ्नप्रणाशकः।
युष्माकं त्रिदशेशस्तु रविर्यच्छतु मङ्गलम् ॥

-अभिलेखे

सर्वं संतमसावृतं जगदिदं भाभिः समुद्भासय-
न्नम्भोजानि विकासयन्विरहिणः कोकान्समाश्वासयन् ।
शीतांशुं परिहासयन् गतरुचिं संत्रासयन्वैरिणो
भक्तक्लेशमुदासयन्स भवतु क्षेमाय भासां पतिः॥

-सिंहसिद्धान्तसिन्धौ शिवानन्दभट्टस्य

सहस्त्रार्जुनेड्यः सहस्त्राक्षवन्द्यः
सहस्त्रच्छदाब्दं यमुद्वीक्ष्यफुल्लम् ।
तमिस्त्राहरो वा तमिस्त्रापहोऽयम्
सहस्त्रांशुरक्षणस्तमिस्त्रच्छिदे स्यात् ॥

-अमरकाव्ये रणछोड़भट्टस्य

साटोपव्योमहट्टोषितरजनिर्वाणङ्नायकोन्मुक्ततारा
मुक्ताहारापहारात्तरलखगरवप्रोत्थिता कीर्त्तिशान्त्यै।
कर्षन्नम्भोजकुम्भोदरकुहरबहिर्निःसरत्षट्पदालीं
कालव्यालीं करेणाकलयतु दिनकृत् कल्मषोन्मूलनं वः॥

-सुभा.सुधा.भा.

सिन्दूरस्पृहया स्पृशन्ति करिणां कुम्भस्थमाधोरणा-
भिल्ली पल्लवशङ्कया विचिनुते सान्द्रद्रुमं द्रोणिषु।
कान्ता कुङ्कुमशङ्कया करतले गृह्णाति लग्नं मुदा
यत्तेजः प्रथमोद्भवं भ्रमकरं सौरं चिरं पातु वः॥

-जन्मपत्रलेखक्रमे दिवाकरसुताविश्वनाथस्य

सिन्दूराणीव सीदत्कृपणकुलवधूमूर्ध्नि ये सञ्चरन्तः
प्रेक्ष्यन्ते दिक्षु शैलाः शिखरभुवि लसत्पद्मरागाङ्कुरा यैः।
धूयन्ते ध्वान्तधाराः सह दुरितचयैर्दूरदृश्याः सुदृश्याः
पान्तु त्वां पद्मबन्धोरकरणकिरणाः पूरणाः पद्मबन्धोः।।

-सुभा.सुधा.भा.

सृष्टौ विधात्रे जगतां शिवाय
संहारकाले स्थितयेऽच्युताय।
तुभ्यं नमः सर्वगताय नित्यं
त्रयीमदऽथामलभास्कराय।।

-वृद्धयवनजातके मीनराजस्य

सृष्ट्वाऽज्ञाननिशाध्वंसिनिबन्धमयवासरम् ।
उद्भासितजगज्जाड्यं नमस्यामः प्रभाकरम् ।।

-प्रभाकरमिश्रकृत-बृहतेष्टीकायां
ऋजुविमलाख्यायां शालिकनाथमिश्रस्य

स्फूर्ज्जद्भानुसहस्त्रमालिनिघनध्वान्तेभकण्ठीरवे
यत्र त्रातुमिदं जगत्समुदिते दीव्यन्ति देवा दिवि।
यज्ञादिप्रभवः प्रभुः प्रणमतां प्रीतिप्रतीतिप्रदः
सोयं नो विदधातु वाञ्छितफलं त्रैलोक्यदीपो रविः।।

-केशवपद्धतिवासनाभाष्ये रामचन्द्रदैवज्ञसुत-धर्मेश्वरस्य

नद्यः

गङ्गा

इयं चिद्रूपापि प्रकटजडरूपा भगवती
यदीयाम्भोर्बिन्दुर्वितरति च शम्भोरपि पदम् ।
पुनाना धुन्वाना निखिलमपि नानाविधमघं
जगत्कृत्स्नं पायादनुदिनमपायात्सुरधुनी।।

-सुभा.सुधा.भा.

एषा धर्मपताकिनी तटसुधासेवावसन्नाकिनी
शुष्यत्पातकिनी भगीरथतपः साफल्यहेवाकिनी।
प्रेमारूढपिनाकिनी गिरिसुतासाकेकरालोकिनी।
पापाडम्बरडाकिनी त्रिभुवनानन्दाय मन्दाकिनी।।

-शा.प.

कपाले गम्भीरः कुहरिणि जटासन्धिषु कृशः
समुत्तानाश्चूडाभुजगमणिबन्धव्यतिकरे।
मृदुर्लेखाकोणे रयवशविलोलस्य शशिनः
पुनीताद्दीर्घं वो हरशिरसि गङ्गाकलकलः।।

-सदुक्ति.योगेश्वरस्य

कासरमर्दनसरसा रसाधिपत्यं तनोति या कृपया।
शरणागतसुरवरदाऽवरदानवनाशिनी जयति।।

-गङ्गावतरणचम्प्वां शङ्करस्य

क्वचन घटिते ब्राह्मे मुण्डे सगद्गदवेणिका
क्वचन भुजगश्वासैरग्रैरनुक्षणनर्तिता।
क्वचन रुचिरं रेखाचन्द्रं रयेण विधुन्वती
स्मरहरशिरोगङ्गा माङ्गल्यमावहतु स्थिरम् ।।

-दशरूपकस्य व्याख्यायां भट्टनृसिंहस्य

गङ्गा यत्पादसङ्गात्सरिदुपरि परीक्रीडतेऽनङ्गहारी
यस्यार्द्धाङ्गच्छटाभिर्व्रजति दिविसदामुत्तमाङ्गे मणित्वम् ।
इन्दुर्यन्नेत्रभावङ्गत इति जगदालिङ्गरोचिस्तरंगः
पद्मोत्सङ्गाङ्गरागं हरिममृतरुचस्तन्तु धिन्वन्तु वाचः।।

-सङ्गीतदामोदरे शुभशङ्करस्य

गङ्गे त्वद्वारिधाराभवमरणजरापारवीरास्तुसारा
राजद्देवादिनारीविहरणविलसत्तीरनीरातुषारा
दैत्यारात्यंघ्रिचारांहरगिरिसुशिरोदेशभारातिधीरा।
रूपेणाक्रान्तसारा निजजनवृजिनौघौघहाराविहारा।।

-गङ्गालहर्य्याष्टीकायां पीयूषलहरीति नाम्नि सदाशिवस्य

गौरीविभज्यमानार्द्धसंकीर्णे हरमूर्द्धनि।
अम्ब द्विगुणगम्भीरे भागीरथि नमोस्तु ते।।

-सदुक्ति.

चञ्चच्चारुनिबद्धचन्द्रशकलश्च्योतत्सुधामिश्रिताः
स्फूर्ज्जद्धूर्जटिना जटासुनिभृता गङ्गातरङ्गालयः।
साक्षाद्ब्रह्मपदप्रदायिपदवीचूडामणिश्रेणय-
स्त्रैलोक्यं विधिवत्पुनन्तु नयनानन्दैककन्दोदयाः।।

-कुण्डरत्नाकरे विश्वदेवद्विवेदिनः

चूडाशीतकरस्तनंधयसुधानीरन्ध्रगन्धस्पृशः
क्रीडाकङ्कणपन्नगेश्वरफणापीतावशिष्टा मुहुः।
अङ्कासीनगिरीन्द्रजास्तनतटीहारावलीलोचनाः
सन्तापं शमयन्तु वो हरजटागङ्गातरङ्गानिलाः।।

-सुभा.सुधा.भा.

जगत्पतिपदस्पर्शजातामर्षेव जाह्नवी।
जयत्यम्बुकणैर्ज्जन्तून् जनयन्ती जगत्पतीन् ।।

-सूक्तिमु. हरिहरस्य

जङ्घालस्फूर्जदूर्जस्वलकरिमकरप्रौढसम्मर्दखेलत्
कल्लोलोत्फुल्लबिन्दुस्तबकतिलकितव्योमकुक्षिम्भरीणि।
वारीणि स्वर्गसिन्धोस्त्रिपुरहरजटाजूटरथ्याध्वनीना-
न्युच्चैरुच्चण्डजाग्रत्कलिकलुषमषीशोषमुत्पोषयन्तु।।

-सूक्तिमु.

जठरवसतिकाले कीदृशी यन्त्रणा स्यात्
सकृदपि मनसि स्वे जह्नुजे चिन्तय त्वम् ।
जठरवसतिनाशे साभिलाषो जनन्या-
स्तव जठरनिवासं याचते पूर्णचन्द्रः।।

-उद्भटसागरे पूर्णचन्द्रस्य

जीयासुः शफरायमाणशशभृल्लेखाः स्खलत्कैरव-
व्रातोद्भ्रान्तमधुव्रतव्रजमिषादुत्क्षिप्तनीलांशुकाः।

विन्दन्त्यो गिरिजाकटाक्षपतनादादित्यजासङ्गमं
नृत्यद्भर्गकिरीटकोटिचपलाः स्वर्गापगावीचयः॥

-चन्द्रकलानाटिकायां विश्वनाथकविराजस्य

दन्तश्रेणिषु संगलत्कलकलव्यावर्तनव्याकुला
नासालोचनकर्णकुञ्जकुहरेषूदग्रनिध्वानिनः।
गण्डग्रन्थ्यभिघातशीर्णकणिकाश्चूडास्रवन्त्यूर्मयः
शम्भोर्ब्रह्मकपालकंदरपरिस्पन्दोल्बणाः पान्तु वः॥

-मालतीमाधवे भवभूतेः

दृष्टाः संकष्टदाहाःश्रवणपथगताःपुण्यपुञ्जावगाहाः
स्पृष्टाः संसारपाथोनिधिपतितधरोद्धारधुर्या वराहाः।
पीतास्तापोपशान्तिप्रजननपटवस्ते सुधावारिवाहाः
कल्याणं कल्पयन्तां कलिकलुषहरा विष्णुपद्याःप्रवाहाः॥

-सुभा.सुधा.भा.

नमस्तेस्तु गङ्गे त्वदङ्गप्रसादात्
भुजङ्गास्तुरङ्गाः कुरङ्गाः प्लवङ्गाः ।
अनङ्गारिरङ्गाः शिवाङ्गाः सगङ्गा
भुजङ्गाधिपाङ्गीकृताङ्गा भवन्ति॥

-गङ्गाष्टके कालिदासस्य

पापापहारिदुरितारितरङ्गधारि
शैलप्रचारि गिरिराजगुहाविदारि।
झङ्कारकारि हरिपादरजोपहारि
गाङ्गं पुनातु सततं शुभकारिवारि॥

-प्रस्तावश्लोके

पूतं स्वतः पूततरं ततो यद्
गाङ्गंपयः शङ्करमौलिसङ्गात् ।
तत् पातु मातुः प्रणयापराध-
पादाहतैः पूततमं ततो नः॥

-शिवलीलार्णवे नीलकण्ठदीक्षितस्य

प्रतिदिवसमनङ्गारातिमुख्योत्तमाङ्गा
भरणकमलसङ्गा वारिधावुत्तरङ्गा।
शशिधवलभुजङ्गाधीश वर्णोत्तमाङ्गा
प्रभवतु मम भूयः पापभङ्गाय गङ्गा।।

-गङ्गावरणचम्प्वां चतुर्थोच्छवासे बालकृष्णसुतशङ्करस्य

भागीरथी त्रिदशसेवितपादपद्मा
अब्जामृताभयकरी वराढ्यहस्ता।
मुक्ताविभूषणविराजितचारुदेहा
पापं विनाशयतु मे सुकृतप्रवाहा।।

-जगन्नाथकृत-गङ्गालहर्य्याष्टीकायां बालबोधिनीत्याख्यायां
दुर्गारामसुतदलपतिरामस्य

मज्जद्देववधूटिकाकुचतटीसंघट्टसंचूर्णिताः
गङ्गायाजलवीचया मधुलिहां श्रेणीभिराचुम्बिताः।
चञ्चच्चञ्चलचक्रवाकतरुणी संभ्रान्तनेत्राञ्चलै-
रापीता जगतां दिशन्तु सततं कल्याणमव्याहतम् ।।

-गङ्गाप्रकाशे वाचस्पतेः

मुक्ताभा नृकपालशुक्तिषु जटावल्लीषु मल्लीनिभा-
वह्नौ लाजनिभा दृशोर्मणिनिभा भोगोत्करे भोगिनः।
नृत्यावर्तपरम्परे रितपयः संमूर्च्छनोच्छालिताः
खेलन्तो हरमूर्ध्नि पान्तु भवतो गङ्गापयोबिन्दवः।।

-शा.प.कृष्णमिश्रस्य

यच्चन्द्रकोटिकरकोरकभावभाजि
बभ्राम बभ्रूणि जटापटले हरस्य।
तद्वः पुनातु हिमशैलशिलानिकुञ्ज-
सात्कारडम्बररविरावि सुरापगाम्भः।।

-सदुक्तिः

यद्गर्भे सुखदे स्थितस्य न पुनर्गर्भागतिर्दुःखदा
गर्भक्लेशनिवेदनाय मुनिना गर्भे धृता यैकदा।

या सेव्याऽपि च सेवकोपपदगा पुत्रस्य मा क्रोडदा
सा वृन्दारकवृन्दवन्दितपदा मातास्तु मे सर्वदा।।

-उद्भटसागरे उद्भटसागरस्य

यन्नाम्न:प्रथमाक्षरं विजयते भानौ द्वितीयाक्षरं
नित्यं नृत्यति सत्कवीन्द्रवदने भूत्वान्तवर्णद्वयम् ।
रामो रावणमाजघान समरे शम्भोः शिरः शालिनी
सा सर्वाक्षरमालिनीभवतु मे भाग्याय भागीरथी।।

-सुभा.सुधा.भा.

याविर्भूता मुरहरपदात् शम्भोः शिरोराजिनी
या त्रैलोक्ये विहरणपरा कुण्ड्यां विधेः स्थायिनी।
या स्वं गर्भं समधिवसतां गर्भाप्तिविध्वंसिनी
सा मन्दस्य प्रभवतु ममाऽनन्दाय मन्दाकिनी।।

-उद्भटसागरे उद्भटसागरस्य

रूपं साक्षात्प्राप्तमैशं द्रवत्वं
पूञ्जीभूतं सर्वगीर्वाण तेजः।
व्यक्तीभूतं ब्रह्मविघ्नम्निहन्त्या-
दारम्भेऽस्मिन् गाङ्गमम्भो मदीयम् ।।

-गङ्गाभक्तितरंगिण्यां वीरेश्वरसुतगणपतेः

लोकत्रयाभ्युदयजन्ममहीमहीयः
स्थानाधिरोहणविधावधिरोहिणी या।
सा चन्द्रचूडमुकुटध्वजवैजयन्ती
जह्नोरनिह्नुतनया तनयाऽवताद्वः।।

-स्तुतिकु. जगद्धरस्य

वायुर्वाति यदङ्गसङ्गमवगाच्छ्रीशंभुरूपप्रदो
गौरी रुष्यति तुष्यति त्वहिपतिर्विन्ध्याटवी शोचते।
चन्द्रस्त्रास्यति कुप्यते हरिरपि ब्रह्मा परं शङ्कते
सा गङ्गा निखिलं कलङ्कनिचयं भङ्गं तरङ्गैर्नयेत् ।।

-सुभा.सुधा.भा.

विद्युद्यत्र मणिद्युतिः फणिपतेर्बालेन्दुरिन्द्रायुधं
वारि स्वर्गतरङ्गिणी सितशिरोमाला बलाकावलिः।
ध्यानाभ्यास समीरणोपनिहितः श्रेयोङ्कुरोद्भूतये
भूयाद्वः स भवत्रितापभिदुरः शम्भोः कपर्दाम्बुदः।।

-अभिलेखे

वेगात्पूरितसिन्धवःसुजनतामुक्त्यङ्गनाबन्धवः
पापालीपतनान्धवःसुरवधूहारावलीबन्धवः।
आत्मज्ञापनबिन्दवः कलितमस्तोमोद्धताविन्दवः
स्वः स्त्रीक्रीडनकन्दवस्तव मुदे गाङ्गाः पयोबिन्दवः।।

-गङ्गावतरणचम्प्वां शङ्करदीक्षितस्य

वेदान्ताम्भोगभीरा नयमकरकुला ब्रह्मविद्याब्जषण्डा
पाषण्डोत्तुङ्गवृक्षप्रमथननिपुणा मानवीचीतरङ्गा।
यस्यास्योत्था सरस्वत्यखिलभवभयध्वंसिनी शङ्करस्य
गङ्गा शम्भोः कपर्दादिव निखिलगुरोर्नौमि तत्पादपद्भम् ।।

-तत्त्वशुध्दौ ज्ञानघनपादस्य

शार्ङ्गीं ब्रह्मकमण्डलोरधिगतैर्यैः प्रापि ङ्घ्रिता
यैर्मृत्युञ्जयतामनायि गरलग्रस्तो जटाजूटगैः।
येभ्योऽशिक्षितमाधुरीं मृदुजटाजूटे मठे चन्द्रमा-
स्तानीमानि पयांसि गौतमि तवश्रेयांसि यच्छन्तु नः।।

-सुभा.सुधा.भा.

शैवालश्रेणिशोभां दधति हरजटावल्लयो हन्त यस्या-
स्तद्धासोल्लासवेल्लद्बरशफरतुलां यत्र धत्ते कलावान् ।
उन्मीलद्रोगिभोगावलिसुभगसिताम्भोजसंभाविताम्भा
गङ्गानङ्गारिसङ्गा महति तव विधौ मङ्गलान्यातनोतु।।

-सुभा.सुधा.भा.

स जयति गाङ्गजलौघः शम्भोरुत्तुङ्गमौलिविनिविष्टः।
मज्जति पुनरुन्मज्जति चन्द्रकला यत्र शफरीव।।

-सदुक्ति.

समृद्धं सौभाग्यं सकलवसुधायाः किमपितन् -
महैश्वर्यं लीलाजनितजगतः खण्डपरशोः।
श्रुतीनां सर्वस्वं सुकृतमथमूर्तं सुमनसां
सुधासौन्दर्यं ते सलिलमशिवं नः शमयतु॥

-गङ्गालहर्य्यां पण्डितराजजगन्नाथस्य

सरोजजन्माननपद्महंसी गिरीशकल्पद्रुमकल्पवल्लीम् ।
हरेरुरस्सागरलग्नगङ्गामुपास्महे कामपि देवतां ताम् ॥

-आनन्दपूर्णमुनीन्द्रकृत-न्यायचन्द्रिकायाष्टीकायां
न्यायप्रकाशिकाख्यायां स्वरूपानन्दमुनीन्द्रस्य

सितमकरनिषण्णां शुभ्रवर्णां त्रिनेत्रां
करधृतकलशोद्यत् सोत्पलाभित्यभिख्याम् ।
विधिहरिहररूपां सिन्धुकोटीरजूटां
कटिलसितदुकूलां जाह्नवीं त्वां नमामि॥

-पञ्चायितनपूजाप्रारम्भनाम्नि मातृकायां स्फुटश्लोकः

सुधाप्लावितभूपृष्ठां दिव्यगन्धानुलेपनाम् ।
त्रैलोक्यनमितां गङ्गां सर्वदेवैर्नमस्कृताम् ॥

-दशहरास्तोत्रे

स्वच्छन्दोच्छलदच्छकच्छकुहरच्छातरातेम्बुच्छटा
मूर्च्छन्मोहमहर्षिहर्षविहितस्नानाह्निकाह्नाय वः।
भिन्द्यादुद्यदुदारदर्दुरदरीदीर्घादरिद्रद्रुम
द्रोहोद्रेक महोर्मिमेदुरमहा-मन्दाकिनी मन्दताम् ॥

-सुभा.सुधा.भा.

नर्मदा

मुक्ताकुन्देन्दुगौरां मणिमयमुकुटां रत्नताटंकयुक्तां
अक्षस्रक्पुष्पहस्तामभयवरकरां चन्द्रचूडां त्रिनेत्राम्।
नानालङ्कारयुक्तां सुरमुकुटमणिद्योतितस्वर्णपीठां
सा नन्दां सुप्रसन्नां त्रिभुवनजननीं नर्मदां चिन्तयामि॥

-भोज़देवकृत-पतञ्जलयोगसूत्रे मातृकायां स्फुटश्लोकः

सरस्वती

निगूढं कुत्रापि क्वचिदपि बहिर्व्यक्तमधुरं
सरस्वत्याः स्त्रोतः परिमलगभीरं विजयते।
अतिस्वादुन्यन्तःपिहितरसरम्ये यदुपरि
प्लवन्ते भूयांसः कतिचिदपि मज्जन्ति निपुणाः।।

-सदुक्ति. गदाधरस्य

प्रकीर्णानि

कर्ममहिमा

नमस्यामो देवान् ननु हतविधेस्तेऽपि वशगा
विधिर्वन्द्यः सोऽपि प्रतिनियतकर्मैकफलदः।
फलं कर्मायत्तं किममरगणैः किञ्च विधिना
नमस्तत्कर्मेभ्यो विधिरपि न येभ्यः प्रभवति।।

-शान्तिशतके शिल्हणस्य

क[illegible]णी

जयतु जगति सा शश्वन्नवर[illegible]र्गिणी कवेर्वाणी।
या मन्दम्मूर्द्धन्यं शरारुमृषिशिरोमणिञ्चक्रे।।

-स्वर्णमुक्तासंवादप्रहसनस्य टीकायां
मर्मविद्योतिनीत्याख्यायां महेशमनीषिणः

नियतिकृतनियमरहितां ह्लादैकमयीमनन्यपरतन्त्राम्।
नवरसरुचिरां निर्मितिमादधती भारती कवेर्जयति।।

-काव्यप्रकाशे मम्मटाचार्यस्य

कान्ताप्रशंसा

न मनागपि राहुरोषशङ्का
न कलङ्कानुगमो न पाण्डुभावः।
उपचीयत एव कापि शोभा
परितो भामिनि ते मुखस्य नित्यम्।।

-शृङ्गारविलासे जगन्नाथस्य

पिबति निबिडं कान्ते बिम्बाधरं रतिलोलुपे
स्फुरितकपटक्रोधं भ्रूवल्लिनर्तनलीलया।
मसृणमुकुलापाङ्गं मामेति वादमनोहरं
मुखमवतु वो मुग्धाक्षीणामभङ्गुरसीत्कृतम्॥

-शृङ्गारकोशभाणे अभिनवकालिदासस्य

बाहू द्वौ च मृणालमास्यकमलं लावण्यलीलाजलं
श्रोणीतीर्थशिला च नेत्रशफरी धम्मिल्लशैवालकम्।
कान्तायाः स्तनचक्रवाक्युगलं कंदर्पबाणानलै-
र्दग्धानामवगाहनाय विधिना रम्यं सरो निर्म्मितम्॥

-शृङ्गारतिलके कालिदासस्य

भ्रमद्भ्रमरकेतकीविकसदेकपत्रप्रभाः
सनीलमणिनायका इव विमुक्तमुक्तालताः।
दृशः शशिकला इव प्रचितपक्ष्मलेशाङ्किता
जयन्ति हरिणी दृशाममृतकालकूटच्छटाः॥

-चतुर्वर्गसंग्रहे क्षेमेन्द्रस्य

षष्ठो जैत्रशरः स्मरस्य जगतां जेतुं जगत्युद्धतो
व्यस्ते सायकपञ्चके विषयिणां चेतः शरण्यं हरन्।
स्वर्गादप्यतिदुर्लभं करतलप्राप्तश्रियं पार्थिवं
शर्मप्रेम तनोतु भूरि भवतां कान्ताकटाक्षोऽक्षयम्॥

-शृङ्गारहारावल्यां श्रीहर्षस्य

काव्यप्रशंसा

कुर्वन्तु कीर्त्तनशतानि रणाङ्गणेषु
मथ्नन्तु वैरिनिकरं धनमुत्सृजन्तु।
कालान्तरे तदखिलं प्रबलान्धकार-
नृत्योपमं कविजनैरनिबद्ध्यमानम्॥

-अभिलेखे

कैलाशपर्वतः

कल्याणं वो विधत्तां कटकतटलसत्कल्पवाटीनिकुञ्ज-
क्रीडासंसक्तविद्याधरनिकरवधूगीतरुद्रावदानः।
तारैर्हेरम्बनादैस्तरलितनिनदत्तारकारातिकेकी
कैलासः शर्वनिर्वृत्यभिजनकपदं सर्वदा पर्वतेन्द्रः।।

-शिवपादादिकेशान्तवर्णनस्तोत्रे शङ्कराचार्यस्य

त्रिवेणी

अन्तःक्रीडत् करीन्द्रप्रकरकटतटोद्भूतभृङ्गावलीभि-
र्व्यालीढा क्वापि मज्जत् सकलसुरवधूकुंकुमैः क्वापि पूर्णा।
क्वापि त्रैलोक्यलक्ष्मीकरतलकलितैः पुण्डरीकैरिवेयं
संसक्ता मुक्तिलक्ष्मीं दिशतु मम हठादेव सेयं त्रिवेणी।।

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

आरादंघस्तनीनां दलनविधिकरा ब्रह्मणः किं कुठाराः
संसाराम्भोधिसारा यमनिकटचराणामपि प्रेमधाराः।
मारारिब्रह्मनारायणविविधसुरावाससौख्यप्रकाराः
सञ्चारादम्बुपूरा अरुणसितमहामेचकास्ते जयन्ति।।

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

एकत्रायातदेवद्विजविविधतपोराशिधारानुकारा
चैकत्र स्वःपुरंध्रीगणचिकुरचयैः संचितश्रीरिवेयम्।
एकत्रानेकदेवाच्युतविबुधपुरोद्यानशोणप्रसून-
स्त्रग्भिर्बद्धेवबुद्धेर्दिशतु विमलतां ध्यानबद्धा त्रिवेणी।।

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

गङ्गाकल्लोलसङ्गा कुलतरणिसुताम्भस्तरङ्गान्तराल-
व्यासङ्गायातवाणीसरिदरुणजला भाति केयं प्रयागे।
वैकुण्ठारोहणाय स्फटिकमणिमयी क्वापि कुत्रापि सृष्टा
नीलरत्नैः प्रवालैः क्वचिदपि च वभौ किन्नु सोपानमाला।।

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

तिस्त्रो वेण्यो धरायाः किमु कमलरजोजालकस्तूरिकाम्भः
कुन्दस्त्रक्चारुरूपा हरिचरणनतौ लोलतामापुरेताः।
ता एव स्वस्त्रवंती दिवसकरसुता भारती पूरसङ्ग-
श्रीरङ्गं संदधानाः सकलमपि महामङ्गलं वो दिशन्तु॥

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

मुक्तिस्त्रीकण्ठहाराः किमु सकलमनोराज्यसंकल्पसिद्धाः
संशुद्धाः कल्पवृक्षाः किमु विषमयमत्रासपाशे कुठाराः।
ब्रह्मानन्दैककंदाः कलुषकलुमहारण्यदावानलाभाः
पायासुर्मां प्रयागाहितविमलजला निर्मलास्ते प्रवाहाः॥

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

ये केपि ध्यानधाराधवलितमनसो ब्रह्मसंकर्षरूपाः
ब्रह्माण्डे ब्रह्मतेजः सकलमपिसमुद्भूतमेतन्नुतेषाम्।
भूलोके तत्त्रिवेणी कपटपटुतरं त्रीणि रूपाणिधत्ते
त्रैगुण्यादेवदेवद्विजविविधमुनिस्नानपानाय साक्षात्॥

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

हा हा रावं वहन्तो वटविटपि तटे कोटिकालुष्यकूटो
छेदादेवेह वेदाखिलविमलतरार्थैक सार्थाः समुत्थाः।
संसाराम्भोधिपारोत्सुकसकलजनोत्तारणायेव धात्रा
क्लृप्तानौः शुक्लरक्तासितनिखिलगुणाकाररूपात्रिवेणी॥

-सकलरससारसङ्ग्रहे अभिनवकालिदासस्य

दानशाहः

कमलमतुलशोभं रात्रिसङ्कोचभीते-
रिव शरणमुपेतं यः कदापि त्वहस्तात्।
कथमपि न जहाति स्वाश्रितानन्दहेतुं
भवजलनिधिसेतुं भानुमन्तं भजे तम्॥

-दानशाहचरिते रुद्रकवेः

दाम्पत्यम्

श्रृङ्गारवीरसौहार्दं मौग्ध्यवैयात्यसौरभम्।
लास्यताण्डवसौजन्यं दाम्पत्यं तद् भजामहे।।

-रसार्णवसुधाकरे सिंहभूपालस्य

साध्वी वाणीन्दिरार्येत्यमलगुणमयी चित्कला लोकमाता
वाणीशश्रीशगौरीपतिविहिततनुं संश्रिता तत्परेशम्।
वक्त्रोरः पार्श्वदेशं परहरणभयादीहते यस्य भद्रं
दाम्पत्यं सौख्यमेतु त्रिदशपुरगतं पूतनारीनराणाम्।।

-कमलाविजयनाटके वेङ्कटरमणाचार्यस्य

सिद्धार्था कनकाक्षरेण कलिता यस्य प्रशस्तिः स्वयं
देवी शैलसुता महेशरजतप्रस्फारपट्टेऽभवत्।
लक्ष्मीर्वा मुरवैरितन्मरकतप्रासादवक्षः स्थिरा
दाम्पत्यं रतिकामयोस्तदवतादानन्दजीवास्पदम्।।

-शतकत्रये धनदराजकवेः

पारदः

नमस्तस्मै रसेन्द्राय मृत्युसन्तापहारिणे।
दारिद्र्यगजसिंहाय जरातिमिरभानवे।।

-रसवैद्यके

प्रयागः

सुरमुनिदितिजेन्द्रैः सेव्यते योस्ततन्द्रै-
र्गुरुतरदुरितानां का कथा मानवानाम्।
स्वभुविसुकृतकर्त्तुर्वांछितावाप्तिहेतु-
र्जयति विजितयागस्तीर्थराजः प्रयागः।।

-प्रयागसेतौ

बीजगणितम्

उत्पादकं यत्प्रवदन्ति बुद्धेरधिष्ठितं सत्पुरुषेण सांख्याः।
व्यक्तस्य कृत्स्नस्य तदेकबीजमव्यक्तमीशं गणितं च वन्दे।।

-सिद्धान्तशिरोमणौ भास्कराचार्यस्य

ब्राह्मणः

अवन्तु वो ब्रह्मपदाब्जरेणवः
स्वपारसंसारसमुद्रसेतवः।
अघौघकक्षक्षयधूमकेतवः
सदैव पुण्योपचयैकहेतवः।।

-अभिलेखे

आपद्धानध्वान्तसहस्त्रभानवः
समीहितार्थार्पणकामधेनवः।
समस्ततीर्थाम्बुपवित्रमूर्त्तयो
रक्षन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः।।

-श्राद्धपद्धतौ

ये साक्षादवनीतलामृतभुजो वर्णाश्रमज्यायसां
येषां पाणिषु निक्षिपन्ति कृतिनः पाथेयमामुष्मिकम्।
यद्वक्त्रोपनताः पुनन्ति जगतीं पुण्यास्त्रिवेदीगिर-
स्तेभ्यो निर्भरभक्तिसम्भ्रम-नमन्मौलिद्विजेभ्यो नमः।।

-दानसागरे बल्लालसेनस्य

समस्तसंपत्समवाप्तिहेतवः
समुत्थितापत्कुलधूमकेतवः।
अपारसंसारसमुद्रसेतवः
पुनन्तु मां ब्राह्मणपादपांसवः।।

-श्राद्धपद्धतौ

भैरवपात्रम्

श्रीमद्भैरवशेखरप्रविलसत् चन्द्रामृतप्लावितं
क्षेत्राधीश्वरयोगिनीगणमहासिद्धैः समाराधितम्।
आनन्दार्णवकं नवात्मकमिदं साक्षात्त्रिखण्डामृतं
वन्दे श्रीप्रथमं कराम्बुजगतं पात्रं विशुद्धिप्रदम्॥

-पात्रवन्दनायाम्

भोजप्रशंसा

सर्वे यस्य वशाः प्रतापवसतेः पादांतसेवानति-
प्रभ्रश्यन् मुकुटेषु मूर्द्धसु दधत्याज्ञां धरित्रीभृतः।
यद्वक्त्राम्बुजमाप्यगर्वमसमं वाग्देवतापिश्रिती
सोऽयं भोजपतिः फणाधिपतिवत्सूत्रेषु वृत्तिं व्यधात्॥

-धारेश्वरकृत-राजमार्तण्डमातृकायां स्फुटश्लोकः

राजप्रशस्तिः

कथं नु मम चेतसि स्थगितमेधसि स्थीयतां
सुखेन यदवाधितोऽम्बुधिरिवेदमावर्द्धताम्।
कलाकुलविशारदस्स्वकरपूरिताशशिश्रया
भवेन्नयदि नोदनो नृपदयालुचन्द्रः प्रभुः॥

-यन्त्रराजे मथुरानाथस्य

जयन्ति भूमाविहबाहुबाणाः क्षितीश्वराविश्रुतबाहुबाणाः।
प्रकुर्वते ये विशदं यशोभिर्ज्जगत्समग्रं च सदायशोभिः॥

-निर्णयामृते अल्लाडनाथसूरिणः

श्रीमद्गौरीशपादाम्बुजयुगकलितानेकसेवाप्तशक्ति-
द्वाविंशत्युद्यदुर्वीपत्तिनत्तसुशिरोवन्द्यपादाम्बुजस्य।
श्रीमत्त्रैगर्त्तनाथामलललितकुलाम्भोधिसञ्जातचन्द्र-
श्रीश्रीमत्तेगचन्द्रक्षितिपतितनुजस्येह भूपालकस्य॥

-शिवभक्तितरङ्गिण्यां वनमालिमैथिलस्य

वर्णरूपम्

आधारे लिङ्गनाभौ प्रकटितहृदये तालुमूले ललाटे
द्वे पत्रे षोडशारे द्विदशदशदले द्वादशार्द्धे चतुष्के।
वासान्ते बालमध्ये डफकठसहिते कण्ठदेशे स्वराणां
हं क्षं तत्त्वार्थयुक्तं सकलतनुगतं वर्णरूपं नमामि।।

-शतचण्डीसहस्रचण्डीप्रयोगे मातृकायां स्फुटश्लोक

विद्वद्वाक्

ॐकारावर्तरम्या यजुरधिकजलासामगम्भीरघोषा
ऋग्वेदाथर्वकूला क्रमपदपुलिना न्यायशास्त्रोत्तरङ्गा।
अङ्गग्रामावनद्धा शतपथगमना ब्रह्मविद्यार्णवान्ता
विद्वद्वागजाह्नवीयं क्षपयतु दुरितं सर्वदा शर्मदा वः ।।

-जीर्णपञ्चाङ्गान्नूतनपञ्चाङ्गोत्पत्तिग्रन्थे

शिवभक्ताः

शिरसा शिवभक्तानां पादाम्बुजरजः कणान्।
वन्दामहे वयं नित्यं वासनाध्वान्तभास्करान्।।

-शिवभक्तविलासस्य टीकायां प्रकाशिकाख्याया

सनातनधर्मः

सत्यस्कन्धस्तरुणकरुणापूतपीयूषसिक्तः
क्षान्तिच्छायः शुभमतिलतालङ्कृतः शीलमूलः।
भूयात्सत्त्वप्रसवविलसत्पल्लवः पुण्यभाजां
धर्मः प्रोद्यत्कुशलकुसुमः श्रीफलो मङ्गलाय।।

-चतुर्वर्गसंग्रहे क्षेमेन्द्रस्य

संकल्पभावः

स जयति संकल्पभावो रतिमुखशतपत्रचुम्बनभ्रमरः।
यस्यानुरक्तललनानयनान्तविलोकितं वसतिः।।

-कुट्टनीमते

संस्कृतवाणी

ऐश्वरी संस्कृतवाणी सर्वकर्मप्रसाधिनी।
सुबोधिनी च शास्त्राणां जिह्वाजाड्यविनाशिनी।।

-संस्कृतमालायां

याऽक्षय्यं बीजमेकं जगदखिलगिरां सर्वसाफल्यमूलं
या रम्यस्निग्धवर्णा मृदुमधुरपदालङ्कृतिश्लिष्यमाणा।
या च्छन्दः सूत्रबद्धा विविधरसगुणा भूरिभावान्विता या
सा भाषा संस्कृताख्या प्रतिजनि कुरुतां सेवकं मां स्वकीयम्।।

-उद्भटसागरे

वैद्यकयुक्त्या कस्य न सेव्या वृत्तिविचित्रा कर्णसुखेयम्।
संस्कृतवाणी चारुपदा मे रुक्मवती चंपकमालेव।।

-रसराजशङ्करे

हरिनाम

अंहः संहरदखिलं सकृदुदयादेव सकललोकस्य ।
तरणिरिव तिमिरजलधिं जयति जगन्मङ्गलं हरेर्नाम।।

-श्रीमद्भगवन्नामकौमुद्याम् लक्ष्मीधरस्य

हृदयजलजजाग्रज्ज्योतिरुद्योतितान्तः
करणकिरणरीणा शेषदोषान्धकाराः।
भवदवविवशानां तन्वते येऽभिषेकं
हरिचरितसुधाभिस्तेभिनंदन्तु सन्तः।।

-विष्णुभक्तिकल्पलतायां पुरुषोत्तमाचार्यस्य

हस्तिनापुरम्

तुहिनकिरणवंशस्थूलमुक्ताफलानां
विपुलभुजविराजद्वीरलक्ष्मीविभूनाम्।
हसितसुरपुरश्रीरस्ति सा हस्तिनाख्या
रिपुजनदुरवापा राजधानी कुरूणाम्।।

-चम्पूभारते अनन्तभट्टस्य

हिमालयः

अस्त्युत्तरस्यां दिशि देवतात्मा हिमालयो नाम नगाधिराजः।
पूर्वापरौ तोयनिधीवगाह्य स्थितः पृथिव्या इव मानदण्डः।।

-कुमारसम्भवे कालिदासस्य



Abbreviations

(Used in notes)

AL Descriptive Catalogue of Sanskrit Manuscripts in the Adyar Library, Adyar, Madras.

ALRC Descriptive Catalogue of Sanskrit Manuscripts in Adyar Library and research center, Adyar, Madras.

AS Descriptive catalogue of Sanskrit Manuscripts in the collection of the Asiatic Society, Calcutta.

ASI Archaeological Survey of India.

BORS Descriptive catalouge of Sanskrit Manuscripts in Bihar and Orissa Research Soceity Patna.

Catal. Catalogue.

E.I. Epigraphia Indica.

GNJ Ganga Nath Jha Campus, Allahabad (Rashtriya Sanskrit Sansthan, D.U. New Delhi)

GOML Descriptive catalogue of Sanskrit Masnuscripts in the Govt. Oriental Manuscript Library, Madras.

GVL Govt. Vir Library Nepal.

IHQ Indian Historical Quarterly

Ins. Inscription

JAHRS Journal of Andhra Historical Research Society.

JBORS Journal of Bihar and Orissa Rsearch Society.

MPL Descriptive catalogue of the Sanskrit Manuscripts in H.H. the Maharajaha's palace Library Trivandrum.

Ms. Manuscript

OHRJ Orrisa Historical Research Journal, Bhuvaneswar

RASB Descritpive catalogue of the Sanskrit Manuscripts in The Royal Asiatic Sociey of Bengal, Culcutta.

SA Subhasitavli of Vallabhadeva edited by peter peterson Poona 1961.

San Sanskrit.

SC Descriptive catalogue of Sanskrit Manuscripts in Sanskrit Collage Calcutta.

SK Sadukti-Karnamrita of Sridhardasa edited by sures Chandra Benerji Callcutta 1965.

SMA Suktimuktavali of Bhagadatta Jallhana edited by Embar Krishnamacharya Baroda-1938.

SML Descriptive catalogue of the Sanskrit Manuscripts in the Tanjore Maharaja Sarfoji;s Saraswati Mahala Library, Tanjore, Srirangam.

SP Sarangadhar Paddhati Compiled by Sarangadhar edited by Peter Peterson Delhi, 1987

SR Suktiratnakar.

SRH Suktiratnahara edited by K. Sambasiva Shastri Trivandrum-1938

SS Subhasita-Sudhanidhi of Sayana Edited by K. Krishnamoorthy Dharwar-1968.

SSRB Subhashitasudha- Ratana-Bhandagaram Compiled and edited by Shivadatta Kaviratna, Bombay.



Verse
No.

3. In GNJ Ms 25525
4. In GNJ Ms 19058
5. In GNJ Ms 2775
7. In GNJ Ms 25525
8. In GNJ Ms 25525
9. From Bai Harir's Ins. at Ahmadabad (AD 1499), *Vide* In E.I. IV PP. 298-299.
11. In GNJ Ms 25090
12. From Maser Ins. of a Sulki chief. 10th
13. In GNJ Ms 21032
14. In GNJ Ms 25906
15. From SSRB 18.9
17. From SSRB 18.3
18. From SK 110
19. In GNJ Ms 28390
20. In GNJ Ms 1240
21. Ạlso is GNJ Ms 52009 "ललितार्चाविधौ" of पूर्णानन्द V.I. पुण्ड्र,for बाण बाणाम् for हस्तां।
22. In GNJ Ms 3514/12
24. Also in SSBR 19.23 V.l. वः for नः Also in Ms पार्वतीपरिणयम् by वामनभट्ट Vide catal. of SML Vol. VIII Natakas 1930, Tanjore, R.No. 4383.
27. From SSRB 19.29
31. In GNJ Ms 15276
32. In GNJ Ms 11896
33. In GNJ Ms 28390
34. From SSRB 21.47
35. From SSRB 18.8
37. Vide catal. of BORS, Patna vol II
40. In GNJ Ms 34041
41. Vide catal. GOML, Madras, vol XXI, R.No. 12328
42. Vide catal. of SML, vol VIII Natakas, Tanjore 1930 RNo. 4346.
43. Vide catal. of ALRC, vol IV, Stotra, Adyar R.No. 269
44. Vide catal. of ALRC Vol. IV Stotra, Adyar R. No. 456. Also in catal. of

GVL, Nepal Vol. II with commentator नरसिंह ठक्कुर with v.l. दलन् for लसन्।

45. In GNJ Ms 5415/446

49. Vide catal. of ALRC, Adyar, vol IV stotra, Part II RNo. 250

50. Vide catal. of I0, London, vol II Part II, No. 8213

51. From SSRB 20.36

52. From SMA 1.21

53. In GNJ Ms 30009

54. In GNJ Ms 17213

57. Vide catal. of cal. Vol. I Part II, 1965 R. No. 937. Also in catal. of Sc. cal. Vol. I, Part II R. No. 1536 with v.l. कृपाकलितधीषणा for कणाकलिततीक्ष्णधी।

59. Vide catal. of IO London, vol II Part II R.No. 6674.

60. From SK 118

62. Vide catal. of IO London Vol II Part II R.No. 7403.

63. From SSRB 21.48

64. From SSRB 18.5

65. In GNJ Ms 858/77

66. In GNJ Ms 48489. Also in SK 123 and SSRB 18.17

67. From SSRB 21.52

69. In GNJ Ms. 2711. Also in SSRB 18.6 with v.l. स्मेरानताविव for स्मेराननोत्सुकौ; स्तनौ for कुचौ

71. Vide catal. of GVL, Nepal, Part I S.No. प्र 1211 S.No. 93

72. In GNJ Ms 39549

73. In GNJ Ms 33685

74. From SSRB 18.14

76. In GNJ Ms 33286. In Ms the last line is as—"भृद्राजपुत्रीसकलतनुभृतां नेत्रयोर्गात्रयोर्नः वन्दे।"

77. In GNJ Ms 833/52. Also in SS 3.19

79. From SK 120

81. Vide catal. of BORS, Patna, Vol IV, R. No. 27

82. Vide catal. of IO London vol II Part II R. No 6846.

83. Sanakapat Ins. of the time of sivagupta Balarjun circa, AD 800, vide E.I. XXXI, P. 35

84. Vide catal. of IO London, Vol II Part II, R.No. 7425

85. In GNJ Ms 16697

86. Una Ins. 1526 AD, vide N.I.A. vol. 3 PP. 193-194

87. Also in SK 115, SMV 238 SSRB 20.35 and SMA 2.38

88. From SSRB 18.2

91. In GNJ Ms 15276

92. Vide catal. of GOML, vol IV Madras R.No. 3230

93. In GNJ Ms 42209. Also in GNJ Ms 10436 with v.l. प्रावीर for प्राचीन, मधुप for रुचिर। Also in SS 4.47 with v.l. नेक for नीक, श्लिष्टस्पष्टेन्द्र for स्पष्टश्लिष्टेन्द्र, मुखविलगद्र for मुखविलसद्र, शिञ्ज for सिञ्ज। Also in GNJ Ms 10459 with v.l. प्रावीर for प्राचीन; मधुप for रुचिर, विगलत् for विलसत् and किञ्जल्कि for किञ्जल्क।

95. In GNJ Ms 18445.

97. In GNJ Ms 15605

98. From SSRB 18.16

99. Vide catal. of GOML Madras vol. XXI, R.No. 12512

101. From SK 108 and SRK. 86.

102. From SSRB 20.39

104. Choti Sadri Stone Ins. 491 AD vide E.I. XXX P. 124.

105. From SMA 2.41

106. In GNJ Ms 28390

107. In GNJ Ms 21113.

109. From SSRB 19.27

111. In GNJ Ms 39424

113. Vide catal.of GOML, Madras, 1917, vol II Part I Sans. C R. No. 1689.

114. From SSRB 18.4

115. Rajaprasasti Ins. of Udipur, vide E.I. XXIX Appx PP. 3-4, 1676 AD

116. In GNJ Ms 19138

117. In GNJ Ms 44974.

120. Vide catal. of GOML Madras, vol VII Part I R.No. 5478

121. From SK 106.

122. In GNJ Ms 37455

123. From SSRB 21.51

124. Chirva Ins. of Samarasimha vide E.I. XXII, P. 288, 1273. AD

126. In GNJ Ms 26956. and हरिविलासकाव्यम् of लोलिम्बराज।(Published)

128. Vide catal. of SML, vol VIII Natkas Tanjore 1930 R.No. 4339.

129. From SSRB 30.37

130. From SK 107 and SRK 81.

132. Vide catal. of GOML, Madras 1917, vol II Part I Sans C, R. No. 1689

133. From SSRB 21.50. Also in sp 103

135. From SSRB 19.21
136. In GNJ Ms 25525
137. From sp. 112. Also in sk 125 and SSRB 21.49
139. Two Pratihara Grants from Kuretha, 1221, AD vide E.I. XXX P. 148.
140. From SSRB 20.41
143. From SSRB 20.33
146. From SSRB 18.11
148. In GNJ Ms 39674
149. Dewal Prasasti of Lalla, the chinda, 992 AD vide E.I.I. P. 77
150. Vide catal. of GOML, Madras 1917, vol II, Part I, Sans C, R.No. 1464.
151. In GNJ Ms 41870.
153. In GNJ Ms 30169
154. From SSRB 18.13
156. In GNJ Ms 23491
157. From SSRB 19.20
160. In GNJ Ms 2489/554
162. From, SSRB, 20.38. Also in SA 78 and SMA, Author is भास with v.l. व्यानम्रा for सव्रीडा, मुकुलिता for सकरुणा, शार्दूल for मातङ्ग, सोत्कम्पां for सत्रासा, निमेषरहिता for सविस्मयरसा, मीलद्भ्रूः for सेर्ष्या, सुरसिन्धुदर्शन for जह्नुसुतावलोकन, म्लाना for दीना।
164. In GNJ Ms 2775/3
166. In GNJ Ms 16482
169. Vide catal. of GOML, vol IV, Part I, Sans c, Madras 1927 R.No. 3709. b
171. Maser Ins. of a Sulki chief 10th cen AD, vide E.I. XXIX, P. 27, Ins. reading is पतिके for पत्यङ्के
172. From SMA 1.20. Also in SSRB 18.1 with v.l. प्रियकण्ठपरिष्वङ्ग for हरकण्ठग्रहानन्द, कालकूटस्य संस्पर्शात् for कालकूटविषस्पर्श।
173. Vide catal. of GVL Nepal Part I, S.No. 1186, subject No. 199
174. In GNJ Ms 36710
175. Also in GNJ Ms 35725 रघुनाथभट्टकृत-भोजनकुतूहल-मातृकायां स्फुटश्लोकः।
176. From SSRB 19.26
178. In GNJ Ms 6633
179. Also in SSRB 19.22 Also in SMA 2.39 with v.l. वर for धव, सुखायास्तु for शिवायास्तु।
180. In GNJ Ms 49306. Also in SSRB 19.25 with v.l. रामाद्याचय for कृष्णात् प्रार्थय, त्रिशूलादपि for त्रिशूलं तव, शक्ताहं तव for शक्ता चास्मि, चात्रदान करणे for तवात्रपानकरणे, अस्ति for अपि, गोरक्षणे for संरक्षणे, खिन्नाहं for दग्धाहं।

181. Vide catal. of GOML, Madras,, Kavya.

182. From SK 111. Also in SMA 2.36 V.l. सन्दिष्ट for निर्दिष्ट। also in SSRB 19.30

183. In GNJ Ms 48447

184. Vide catal. of GOML, Madras vol VII No. 5464

185. Vide catal. of GOML, Madras Vol III Part I R.No. 2429

186. In GNJ Ms 34041

187. Also in SK 114 with v.l. नखाच्छ for नखेन्दु, गतां for गते। Also in SSRB 19.28 with v.l. पश्यन्तीव समुत्सुका for पश्यन्ती वरमुत्सुका

189. From the Ins. of Arthuna of the Paramara chamundaraya, AD 1078 vide E.I. XIV PP. 297-298

190. From SK. 112. Also in Sp. 102. Also in SMA 2.37, and SSRB 19.24 with v.l. व्यग्रया for व्यस्तया, धिया for रसैः।

191. From SMA 1.22

192. From SK 133.

193. In GNJ Ms 20317

195. From SK 117

196. SK 119

197. From the Ins. of the Indragarh S AD 710 vide BORS vol. XLI Pt. 3, P. 259

198. From SSRB 21.44

199. From Sp. 104. Also in SK 116 with the author's name of लक्ष्मीधर with V.l. कम्पित for वेपति, भीतेर्भव for भीतेस्तव। Also in SSRB V.l. भव for तव।

201. From Jagannatharaya temple Ins. at Udipur, AD 1652 vide in E.I. XXIV,P. 65.

202. From SSRB 18.15

206. From Nagarjun's Hill cave ins. of Ananta varman (Maukhari) 6th cen. AD

207. From SK 121.

208. From SSRB 18.10

212. In GNJ Ms 39320

214. From SSRB 18.7

215. In GNJ Ms 37461

216. From SA 76

217. From SSRB 18.12

218. From SK 122

220. From SA 77

222. From SSRB 20.73
223. In GNJ Ms 37301
224. From Choti Sadri stone Ins. vide in E.I. XXX, P. 124. 491 AD
225. From Gorakhpur, copper-plate grant of Jayaditya of Vijayapur. vide in I.A. vol. XXI, P. 170 10th cen AD
227. From Sakrai stone Inscription, vide in E.I. XXVII, P. 31, 642AD
228. From SK 124
229. Vide catal. of GOML. Madras vol III. R.No. 4645.
231. From Rashtrakuta characters from chinchani vide E.I. XXXII P. 58, 10th cen. AD
232. Vide catal. of GOML, madras vol. I, R.No. 162.
234. In GNJ Ms 23707
235. In GNJ Ms 15266
237. In GNJ Ms 16483
238. In GNJ Ms 38209
239. From circa Devulpalli plates of Immadi Narasimha vide in E.I. VII P. 80, 1504 AD
241. In GNJ Ms 22554.
242. From the sundha hill Ins. of chachigadeva., vide in E.I. IX P. 74, 1262 AD
243. Also in Catal. of GOML, Madras Vol. XV R. No. 7839 जातवेदो दुर्गादेवी मंत्रकल्पः with V.l. मृगपतेः for मृगपति, धरा for गदा, चाप for खेट, पाशाङ्कुशान्तर्जनीं for चापं गुणं तर्जनीं, शशिनिभां for शशिधरां।
244. In GNJ Ms 22034
245. From stone Ins. From kudarkot, vide E.I.I. P. 180, 7th cen. AD
249. Vide catal. of GOML, Madaras, vol XVII, R.No. 14172.
250. From SSRB 21.53
252. *Vide* catl. of Mithila Vol. IV Vadic Ms No. 50.
254. In GNJ Ms 28101
255. From Ins. in the first and third slabs of Kumbhalgarh, 1460 AD, vide E.I. XXIV, PP. 314-315
256. In GNJ Ms 33464
258. From ċhitrogadh Ins. of Mokala of Mewad, 1427 AD
259. In GNJ Ms26955. V. I. मण्डल for मण्डप and रेकिका for रेकला also found.
260. From Rajaprasasti Ins. of Udipur 1676 AD. *Vide* in E.I. XXIX, appix PP 3-4.
261. From Kamauli plate of Govinda chandra 1126 AD, vide E.I. XXVI, P. 72.

262. In GNJ Ms 22054.
263. From SSRB 27.1
264. In GNJ Ms 34256.
265. In GNJ Ms 49235.
267. In GNJ Ms 2711/24. Also is SA 79 author as भट्टनारायण V.I. विगलित for विलुलित। Alos in SP. 135 author as निशानारायण. V.I. विगलित for विलुलित and also in SK 339 V.I. विगलित for विलुलित।
268. From SSRB 27.10
269. Vide catal. of D.C. vol. III Part II tantra MSS, Calcutta, R. No. 6695.
271. From SSRB 27.7.
272. In GNJ Ms 34256.
273. In GNJ Ms 34256.
275. In GNJ Ms 49235
276. In GNJ Ms 34256.
277. Also in SSRB 27.8
279. In GNJ Ms 34256.
281. In GNJ Ms. 31515. Also in GNJ Ms 11060 नारायणीपद्धतिः of नारायण पण्डित। also in GNJ Ms. 31515 "गौरीजातकम्"
282. Vide E.I. XXIX 1676 AD, PP. 3-4
283. In GNJ Ms 45802
284. From SK 328
285. Vide catal. of GOML Madras Vol II Part I San C, R. No. 1466. Also in SSRB 27.2
286. From SSRB 27.5
287. In GNJ Ms 34256
288. From SSRB 27.9
289. From SSRB 28.22
290. In GNJ Ms 34256.
291. In GNJ Ms 34256
292. In GNJ Ms 34256
293. Vide catal. of AS cal. Vol. XI, R.No. 7884
294. Ins. from Nepal, 1690 AD, vide I.A. Vol. IX P. 191
295. From SSRB 27.4
296. In GN J Ms 34256
297. In GNJ Ms 34256

298. From SS 3.20
299. In GNJ Ms 24641
300. Vide catal. of GOML Madras vol. VII Part I R.No. 5439.
301. In GNJ Ms 16046.
302. Vide catal. of SML, Tanjore vol VIII, 1930, R.No. 4379
303. Vide catal. of GOML vol. III Madras 1910 R.No. 4037.
304. Vide catal. of I.O, London vol. II part II. No 6699
305. From SSRB 28.18
306. IN GNJ Ms 34256
307. From SP 134, Also in SSRB 27.3
308. Vide catal. of SML Tanjore vol. VIII, 1930 R.No 4381
309. From SK 341
310. In GNJ Ms 38747. Also in GNJ Ms 28537 रसरत्नदीपिका।
311. In GNJ Ms 34256
312. Vide catal. of ALRC Adyar, Vol. IV Part II R.No 2452
313. In GNJ Ms 34256
314. From SSRB 28.17
315. From SK 329
318. Vide catal of I.O. Londan vol Ii part II No. 7403.
319. In GNJ Ms 3520/158
320. In GNJ Ms 34256.
322. Vide catal. of GOML Madras Vol. III part I sans. A, 1922 R.No. 2242
323. In GNJ Ms 48780
324. In GNJ Ms 34256
325. From SSRB 28.21
327. From SS 3.21
328. From Ins. of Brahmana Ruler of Gaya, 1055 AD, vide E.I. XXXVI, P. 87.
329. In GNJ Ms 34256
330. From SSRB 28.16
331. From SK 342
332. In GNJ Ms 33685.
333. From SK 343.
334. From SK 345
335. In GNJ Ms 34256.
336. In GNJ Ms 34256.

338. Vide catal. of GOML, vol XXI, No. 12320
339. From SK 330
340. In GNJ Ms 16510
341. In GNJ Ms 39363
343. In GNJ Ms 34256
344. Vide catal. GOML vol VI, Part I Sans A, Madras, 1935, R.No. 5239.
345. In GNJ Ms 34256
346. In GNJ Ms 34256
348. From SK 326
349. In GNJ Ms 17852
350. From SSRB 28.23
351. From SK 327
352. In GNJ Ms 34256
353. Vide catal. GOML vol III Part I sans A, Madras 1922, R.No. 2242.
354. From SSRB 28.20
355. In GNJ Ms 34256
356. In GNJ Ms 34256
359. In GNJ Ms 39509 also in GNJ Ms 39513" कुण्डरत्नावली" of Krishna Dixit.
362. In GNJ Ms 30844
366. From SSRB 42.98
368. In GNJ Ms 2165
369. In GNJ Ms 38212, also in कविकण्ठाभरणे of क्षेमेन्द्र ।
370. *Vide* catal. of GOML, Madras Vol IV Part I, Sans.c, 1927 R.No. 3986 (E)
372. Vide catal. of SML, vol VIII Natkas, 1930, R.No. 4584.
375. In GNJ Ms 48840
377. In GNJ Ms 19502
381. From SSRB 43.1; Also in SMA 2.100, V.l. दृष्टिः for चित्ता, मन्थानिकां विदधती for मन्थानमाकलयती, यस्याः for तस्याः, निरुन्धन् for दुदोह
383. Vide catal. of I.O. London, vol. II part II, No. 8125
384. Also in SSRB 43.2, V.l. तदङ्गे संलग्ना तव दिशतु राधा प्रियशतम् for मुधा सुप्ता राधा तव दिशतु नित्यं प्रियशतम्।
386. From SSRB 43.1; Also in SMA 2.99 v.l. चलिते for ललिते, चन्द्रार्द्धतुल्यालिकः for चन्द्रात्मचक्षुर्दधत्।
388. Also in SSRB 25.1 V.l. कोपेन for रोषेण; रुणितोऽश्रुपात for रुणितस्त्रपात; नः for वः।
389. Vide catal. of TMS, Tanjore vol XVI, No. 10754

391. Vide catal. of GOML vol III 1910, Madras, R.No. 4203
393. In GNJ Ms 16064; Also in 22039 and 16064.
397. In GNJ Ms 15747, also in 3607 and 15768. Ms 15768 drops the letter 'क' from the word कलित and v.l. वि for वै।
399. In GNJ Ms 29263
400. Vide catal. of GOML, vol VI part I Sanskrit, Madras R.No. 5059
409. From SK 352
410. In GNJ Ms 48858
412. In GNJ Ms 29802
413. Also in SSBR 1.11 V.l. आनन for आसन in Ms.
415. In GNJ Ms 34256
416. In GNJ Ms 24169
417. In GNJ Ms 36882
420. In GNJ Ms 18290
421. Vide catal. of GOML Madras vol. IV, Part I Sans. B, R. No. 3919(g)
422. In GNJ Ms 28325
423. Vide Catal. of GOML Madras vol. III, Part I Sans. B, R. No. 2505
424. In GNJ. Ms 23.49. Also in GNJ Ms. 36879 वासवदत्ताख्यायिका of सुबन्धु। Also in GNJ Ms. चन्द्रोन्मीलनम्, V.l. मखिलं पदं नास्ति, and हंसारूढां वीणावादनशीलां नमामि तां वाणीम् for पश्यन्ति............ देवी। Also in SSRB 1.9; SS 3.7; SP 59. Also in GNJ Ms. 35881 "चन्द्रोन्मीलनम्" with "मखिलं" पदं and verse is like Ms No. 30461.
426. In GNJ Ms 36949 and also 45130
427. Vide catal. of ALRC Adyar, vol. VI R. No. 155.
428. Vide catal. of ALRC Adyar, vol VI R. No. 1025
429. Vide catal of BORS Patna, vol. IV R. No. 31.
430. In GNJ Ms 39620
432. Vide catal. of RASB, Cal. Vol. X Part II R.No. 7216
433. In GNJ Ms 33010.
434. Vide catal. of GVL Nepal, Part I, Ms serial No. 564 and Subject No. 103.
436. Vide catal. of ALRC. Adyar, vol IV Part II R.NO. 2812.
437. From SK 354.
442. Also in GNJ Ms 21601 कामन्दकीय-नीतिसार of कामन्दकि with com. of उपाध्यक्ष निरपेक्ष।
443. Vide catal. of ALRC Adyar, vol IV Part II R. No. 3229.
445. Vide catal. of SML Tanjore, vol. XVI R.No. 10811.
446. In GNJ Ms 31578

447. From SSRB 5.8
449. From SSRB 5.13
450. In GNJ Ms 50764
451. From SSRB 5.5
452. In GNJ Ms 41530
453. In GNJ Ms 45145. Also in GNJ Ms 46027 वृत्तरत्नावली of चिरञ्जीव भट्टाचार्य। Also in SSRB 1.15 v.l. गण for गुण।
455. Also in SA 1
456. In GNJ Ms 43312
461. In GNJ Ms 29802
463. From SSRB 1.1
464. In GNJ Ms 33985
465. Also in SS 3.18 and सूक्तिरत्नहार 2.9
466. Vide catal. of GVL Nepal Part I, Ms Serial No 578 and Sub. No. 293.
471. In GNJ Ms 19018
472. In GNJ Ms 4720
474. Vide catal. of GOML Madras Vol I part I R. NO. 388.
475. Vide catal. of GOML, Madras, Vol III, Part I Sans A, R. No. 2208
476. In GNJ Ms 28603; 16475, 16056
477. Vide catal. of GOML, Madras, Vol XV,. R.No. 8020
478. Vide catal. of GOML, Madras, Vol XXI, R.No. 12226
480. From SSRB 5.6
482. Vide catal. of SML Tanjore, vol XVI R.No. 10786.
483. Vide catal. of IO London, Vol II Part I R.No. 5116.
485. From SS 3.16
486. Vide catal. of GOML Madras, Vol IV R.No. 3205
487. In GNJ Ms 16706.
489. Vide catal. of GVL Nepal Part I, Ms serial No 344 and Sub. No. 230.
497. In GNJ Ms 35381.
499. In GNJ Ms 17315
503. In GNJ Ms 8179
504. In GNJ Ms 17821
505. From SK 355.
508. From SSRB 5.3
509. Vide catal. of GOML, Madras part I R.No.501 'हस्तामलकस्मृति' of रामभट्ट

511. From SSRB 5.16.
512. Vide catal. of MPL, Trivendram vol III, R. No 654.
513. In GNJ Ms 30018. Also in GNJ Ms 19178, v.l. कौल for केलि, वार्धो for बोधो, पूर्वाभ्रमित for पूर्णाभामृत, कुले for कुल, वागीश्वरी पातु वः for वाग्देवतामाश्रये।
514. In GNJ Ms. 31516
516. Vide catal. of GOML Madras Vol III, R.No. 4288
517. Vide catal. of GOML Madras, Vol III, Part I Sans A, R.No. 2083.
518. In GNJ Ms. 2775
521. Vide catal. of GOML Madras, vol VI, part I Sans, A, R.No 5143.
522. Also in SSRB 1.12 and SMA 2.107
525. Vide catal. AS Cal Vol XI R.No. 7541
526. In GNJ Ms 49311. Also in Ms चातुश्चरणयज्ञपद्धतिः of हर्षनाथ Vide catal. BORS Patna Vol. IV, No. 67.
527. Vide catal. of GVL Nepal Vol V R.No. 195.
528. Vide catal. GOML Madras Vol VII, No. 5375
529. In GNJ Ms 3575.
532. In GNJ Ms 36686, 18662 & 28081
534. In GNJ Ms 11955
536. In GNJ Ms 37282
537. Vide catal. of GOML Madras vol IV R.No 2443
539. Also in GNJ Ms 35267 काव्यालङ्कारसंग्रहः of प्रतापरुद्र।
542. Vide catal. of GOML Madras, Vol V Part I sans A, R. No. a
543. In GNJ Ms 49301
544. From SK 351
546. In GNJ Ms photo copy 5848
547. From SSRB 5.2
548. Vide catal. of GOML Madras Vol VI R.No. 3695.
550. In GNJ Ms 33408. Also in GNJ Ms 29166 अनेकार्थशब्दमौक्तिकम् v.l. कुतो व्याख्या प्रवर्त्तते for क्रतोप्यागमसंभवः।
551. Vide catal. of GOML Madrs Vol. III, Part I Sans. B, R. No 2487. Also in GNJ Ms 17809 रघुवंश टीका of मल्लिनाथ V.l. कामदं for शर्मदं। also in SSRB 1.10
552. In GNJ Ms 23080
553. In GNJ Ms 39676. Also in जगन्मोहनम् of श्रीलक्ष्मणाचार्य Vide catal. of GVL Nepal, Part I S. No. I 564 and Sub. No. 103, V.l. विकाश for विकासि, सद for स्फु, मुपास्ये for मुपासे।

554. Vide catal. of MPL Trivendrum, Vol. I R.No. 147
555. In GNJ Ms 15306.
556. Vide catal. of BORS Patna, Vol III R.No. 142
558. Also in SSRB 1.7
561. IN GNJ Ms 48780
562. From Goharwa Plates of Karnadeva 1047 AD vide in E.I. XI, P. 142.
563. Vide catal. of BORS, Patna Vol III R.No. 326
567. Vide catal. of GOML, Madras, Vol III, R. NO. 1744.
574. In GNJ Ms 29802
575. Vide catal. of SML Tanjore, vol XVI, No. 10830
576. In GNJ Ms 49315.
577. Vide catal. of GOML Madras, Vol II Part I Sans. C R.No. 1936.
578. In GNJ Ms 23743.
579. Vide catal. of GOML Madras, Vol I part I R.No. 384.
580. In GNJ Ms 34256
582. In GNJ Ms 48609.
583. In GNJ Ms 14204.
585. In GNJ Ms 44570 v.l. Ms reads स्याद्भारती for आभाति या भारती
586. In GNJ Ms 2775.
588. In GNJ Ms 13277.
589. From SSRB 5.4
591. Vide catal. of GOML Madas, Vol. III Part I Sans. A, R. No. 2321. In printed book V.I. सुधाकादम्बिनीभूतं तन्महः समुपास्महे for सुधाकादम्बिनीं वाणीं वीणापाणिमुपास्महे।
593. In GNJ Ms 21823
595. Vide Catal. of RASB Cal, vol III, Part II No. 6648
596. From SSRB 6.17
597. Vide Notices of Sans. Mss, 1870, No II, P. 187 by R.L. Mitra.
598. In GNJ Ms 2489
599. In GNJ Ms 41914
600. In GNJ Ms 26978
601. In GNJ Ms 44542
602. In GNJ Ms 31755
606. From SK 129
607. From SSRB 21.46
608. In GNJ Ms 37461

610. From SK 128
611. From SSRB 19.18
612. From SK 126
616. From Ins. vide in E.I. XXIX, Appx, PP. 3-4, 1676 AD
617. From SSRB 21.55
618. From SK 127
620. Vide catal. of GOML Madras vol IV Part I Sans. A 1927, R.No. 3061
621. In GNJ Ms 33000
622. In GNJ Ms 16741
623. In GNJ Ms 16905
624. Vide catal. of BORS, Patna vol. III R.No. 328
625. In GNJ Ms 33000
626. From Surwaya Ins. of the time of Ganapati, 1293 AD. *Vide* in E.I. XXXII, P. 340
627. *Vide* catal. GOML, Madras, Vol. VIII, Part I Tantra. R.No. 6331
628. From Sanskrit and old canarese Ins. I. A. Vol. X P. 185, 1095 AD.
629. From W. Chalukya Prithvivallabha Tribhuanmalla Ins. 1095 AD, *Vide* in I.A. Vol. X, P. 185.
630. From Rajprasasti Ins. of Udipur, 1676 A.D. *Vide* in E.I. XXIX Appx, PP. 3-4.
631. In GNJ Ms 28390
633. In GNJ Ms 36687
634. Vide catal. of GOML, vol. IV, stotra, part II, Adyar, R.No. 248.
636. In GNJ Ms 28390
637. In GNJ Ms 3621
638. In GNJ Ms 38830
639. In GNJ Ms 13666
640. In GNJ Ms 43784. Ms Writes यस्याण्डाः for यस्याण्ड, दिशो for दिशि, भुवनं for भुवने, पत्रगालये for पत्रगालि, विनिर्जिता स्तां प्रजापति for विनिर्जेतृनैक प्रतापः, काश्यपेयो forकाश्यपेयं, बलः for तनुबलं नो for वो। तु in extra and हय is absent in thid hine.
641. In GNJ Ms 43784. Ms writs क्षपितरिपुबलं for त्रुटितफणिवसा, वन्दे for पायात् ।
642. In GNJ Ms 48780
643. From Nellor copper plate Ins. of Ramchandra, 1387 AD, in Ins of the Nellor district, vol. I, PP 5-6.
644. From SMA 2.60

645. From SSRB 46.1
647. In GNJ Ms 49317
651. In GNJ Ms 31516
652. In GNJ Ms 28390
654. Vide catal. of GOML, Madras, vol.III 1910 R.No. 4195.
655. In GNJ Ms 1052.
656. In GNJ Ms 648.
659. *Vide* catol. of GOML, vol. XII, Religion, RNo. 6077.
660. In GNJ Ms 28442.
661. In GNJ Ms 50764.
663. In GNJ Ms 42210.
664. In GNJ Ms 22034.
665. In GNJ Ms 24201.
666. In GNJ Ms 40387.
667. In GNJ Ms 18202.
669. In GNJ Ms 49351.
672. In GNJ Ms 10958.
673. In GNJ Ms 25552.
674. In GNJ Ms 25915.
675. In GNJ Ms 49318.
676. In GNJ Ms 273.
677. In GNJ Ms 23913.
678. In GNJ Ms 19138.
679. In GNJ Ms 835/9731.
680. In GNJ Ms 835/9731.
681. *Vide* catal. of GOML, Vol VIII Part, R.No. 6311
683. *Vide* catal. of Asiatic socity, callcutta, vol. Xi Philosiphy, R.No. 8633.
697. Also in GNJ ms 38825 "रसवैद्यकम्"
698. In GNJ Ms 38830.
700. In GNJ Ms 31873.
701. In GNJ Ms 17061.
702. In GNJ Ms 17061.
703. In GNJ Ms 17061.
704. In GNJ Ms 13082.
705. In GNJ Ms 51734

706. In GNJ Ms 51734
707. In GNJ Ms 51734
708. In GNJ Ms 51734
709. In GNJ Ms 19138
710. In GNJ Ms 17061
711. In GNJ Ms 49350
712. In GNJ Ms 49350
713. In GNJ Ms 49289
714. In GNJ Ms 11816
716. In GNJ Ms 11955
718. In GNJ Ms 23516
719. In GNJ Ms 15455
720. From SSRB 11.71
722. In GNJ Ms 22063
723. In GNJ Ms 43312
724. From SS 4.53
726. In GNJ Ms 49350
727. In GNJ Ms 49350
728. From SS 4.52
729. In GNJ Ms 49350
730. In GNJ Ms 49350
731. In GNJ Ms 49350
733. In GNJ Ms 49350
734. In GNJ Ms 34041
735. In GNJ Ms 34041

736. In GNJ Ms 49315
737. Vide catal. of Tanjore vol. XVI No. 11323
738. In GNJ Ms 36686
739. In GNJ Ms 24575
741. Fro SK 54
742. From SK 424
743. Vide catal. ADC SM Lib. vol. VI Kavya R.No 3699
744. From sk 358
749. From SSRB 15.2

751. From SMV 2.51
752. From SMV 2.52
753. From SSRB 45.1
754. From SK 431
755. From Chumli Plates of Bashkaladeva 989 AD vide in E.L. XXXI P. 14
756. Also in SSRB 15.1
758. Also in GN Jha Ms 17/5008 'कुवलयाश्वीयम्' by कृष्णदत्त with v.l. दक्षि for नाक्षि, विशेष for विश्लेष, शुक्ति for शक्ति।
759. Also in another Ms of same title with v.l. वह for भुजा and ग्रस्ततां for ग्रासतां।
760. In GNJ Ms 27221
761. Vide catal. GOML, Madras. Vol. I R. No. 752, Also in ADC, S. M. Lib. Vol. VIII Natak 1930 R. No. 4609 of same title with v.l. भासि for हासि, चक्रा for वक्त्रा।
764. From SSRB 45.3
765. From SK 360
766. From Meghesvara temple Ins. of the timeof aniyankabhima II, 12th AD vide in E.L.VI P. 200
767. In GNJ Ms 8809
768. From SK 52
769. From SK 359
770. From SK 53
771. From SK 356
773. From Surwaya Ins. of the time of Ganapati, 1293, AD vide in E.I. XXXII P. 340
774. From SMA 1.19. Also in SSRB 15.3 v.l. श्रान्तो for क्लान्तो।
775. Vide catal. GOML SM Lib. vol VIII, Natkas 1930, R.No. 4346
776. Vide catal. GOML Madras vol. I Part I, R.No. 418
777. Also in SMV 1.17 with the author's name as सुबन्धु with v.l.मयोत्सुकान्निहिता।
778. From SK 51
779. In GNJ Ms 36363
780. From SSRB 45.4
781. In GNJ Ms 11815
782. In GNJ Ms 36363
783. In GNJ Ms 21792
784. In GNJ Ms 36710

785. Vide catal. of SML, Tanjore, vol. XVI No. 11323
786. In GNJ Ms 24757
787. From SMA 2.59
788. From SSRB 44.1
789. From SK 10
791. In GNJ Ms 38830
792. In GNJ Ms 26921. Also in GN Jha Ms 24575, जन्मपत्र-लेखक्रमः by विश्वनाथ S/o दिवाकर।
793. Vide catal.GOML, Madras, vol. XIX R.No. 11322
794. From SS 22
796. From SMA 2.57. Also in SSRB 44.11 with V.l. नैषां for नैशं, सा for सः, यत्र for यस्य गतिः शाश्वती for प्रकाशस्थितिः; सुर for क्षण, नः for वः।
798. From SSRB 44.5
799. Vide catal. of BORS, Patna, vol. III, R.No. 309
800. From SSRB 45.15
801. In GNJ Ms 37004
802. From SMA 2.58
803. From SSRB 4.108
805. In GNJ Ms 26921
806. Vide catal. of GOML, Madras vol. I part I Sans. A, R.No. 139
807. In GNJ Ms 8336 and 8352
808. In GNJ Ms 14998
810. Vide catal. of BORS Patna vol. I R.No. 85
811. From SK 9
812. In GNJ Ms 1179/11125. Also In GNJ Ms 44543
814. In GNJ Ms 768/4137
815. In GNJ Ms 45988
816. From SK 6
817. Vide catal. of BORS Panta vol. III, R.No. 370
818. In GNJ Ms 15306
819. From SS 114
820. In GNJ Ms 21195. Also in 23460
821. In GNJ Ms 16688 and also in 758 with v.l. सवितुस्तु for सवितुस्तं and स्वयं for वयं।
823. Vide catal. of I.O. London vol. II Part II No. 8059
824. Vide catal. of GOML, Madras, vol. XIX, R. NO. 11312.

826. From SSRB 44.9
827. From SS 4.110
829. Vide catal. of BORS Patna vol. III R.No. 416
831. In GNJ Ms 40088, 45167, 16051, 3145 & 3143.
832. From SS 4.109
833. In GNJ Ms 17282
834. In GNJ Ms 3/651 Also In GNJ Ms 45949
835. Vide catal. of GVL, Nepal, I Part, S. No. 564 Sub. No. 103. Also in GNJ Ms 37036 Titled जगन्मोहन by लक्ष्मणभट्ट with v.l. स्फूर्ज for स्फुर्य्यत्, ध्वंसनं for ध्वंसनो, दितं for दिनं and the letter 'भो' is dropped after प्रह्वां।
836. From SSRB 44.4
837. In GNJ Ms 34007
838. In GNJ Ms 15276
839. From SS 4.115
840. From SS 4.112
841. Vide catal. of GOML, Madras vol. III Part I sans. B, R.No. 2394.
842. From SSRB 44.8
843. In GNJ Ms 45155
844. From Sp. 138. Also in SS 4.10, with V.l. वनोत्पाटनं for वनोद्घाटनं and Also in SSRB 45.13 with v.l. कल्पाः for कल्याः।
845. Vide catal. of GOML, Madras, vol. VI, part I sans. A R.No. 5180
846. In GNJ Ms 8629
847. In GNJ Ms 48452
849. In GNJ Photostat from Kashmir
851. Also in GNJ Ms 24575 titled जन्मपत्रलेखनक्रमः by विश्वनाथ S/o दिवाकर with v.l. गतो for गते, द्राग्वः for द्राङ्नः, ददातु for व्यनक्तु and वन्धो for वन्द्यो।
852. From SSRB 44.6
854. Vide catal. of BORS, Patna vol. III R.No. 281
855. In GNJ Ms 22034
856. Vide catal. of GVL Nepal Part I S.No. tri-104, sub. No. 380
857. In GNJ Ms 16706
858. Also in GNJ Ms 44419 with v.l. यस्योद्गमे for यस्योदये, मध्यं गते for मध्यस्थिते, वो ध्वसति प्रभाते for चोच्छ्वसितैकमात्रम्, भानुः सएष for भावत्रये स; Also in catal. of BORS, Patna Vol. III, R. No. 405, with v.l. यस्योद्गमे for यस्योदये, क्रिया च for क्रियासु।
859. Vide catal. of GOML, Madras, vol I, Part I, R.No. 363

860. In GNJ Ms 40583 also in 14690 and 5387
861. Also in SA 73 with author's name as अमृतदत्त।
862. In GNJ Ms 21174 and also in 21195 the same work.
863. In GNJ Ms 40149 aso in 25388 and 11809
864. In GNJ Ms 34573
865. From SSRB 44.7
866. In GNJ Ms 16508 and 15367
867. In GNJ Ms 15276
868. Vide catal. of BORS, Patna vol. III R.No. 38
869. In GNJ Ms 939
870. In GNJ Ms 37432
871. In GNJ Ms 37432
872. From SSRB 45.2
873. From the Ins. of Mandanpal plate of visvarupssena 13th C AD,vide in E.I. XXXIII, PP. 321-322.
874. In GNJ Ms 36699
875. From SK 7
876. In GNJ Ms 2775
878. In GNJ Ms 15429
879. From SS 4.11, also in SSRB 45.16 with vl व्रणिभिः for घृणिभिः
880. From SP. 86. also in SK 8 with the author's name as विद्या and also in SSRB 44.3
882. Vide catal. of GOML, Madras, vol. IV R.No. 3326
885. From the ins. of Sambhar of Chalukya Jayasinha's time, in I.A. vol. LVIII, P. 235, 12th AD
888. From SSRB 45.15
889. In GNJ Ms 24575. Also in Sp. 138 with the author's name as त्रिविक्रम, with v.l. मृद्नन्ति for गृह्णाति; च यत् for मुदा, तत्तेजः for यत्तेजः। Also in SMA 25 with v.l. काङ्क्षया for शङ्कया, मृद्नन्ति for गृह्णाति, च यत् for मुदा, तत्तेजः for यत्तेजः। Also in SSRB 44.10 with the same v.l. as SMA above.
890. From SSRB 45.17
893. In GNJ Ms 8276.
894. From SSRB 14.1
895. Fom SP. 107. also in SSRB 15.7 v.l. तरुच्छाया for सुधासेवा, संदायिनी for हेवाकिनी
896. From Sk 46

898. Vide catal. of GOML Madras vol III Part I Sans B, R. No. 2421
901. From SK 49, and SMA 1.24
902. In GNJ Ms 39512
903. From SSRB 14.2
905. From SMA 2.54
909. From SSRB 15.10
911. GNJ Ms 38133
914. In GNJ Ms 15340, Also in GNJ Ms 13977 गंगालहरीटाकी—पीयूषलहरी by दुर्गाराम with v.l. पद्मा for अब्जा, भयामृतकरी for मृताभयकरी, वराख्य for वराढ्य। Also in GNJ Ms 960/7005 गंगालहरी टीका by दलपतिराम with v.l. भयामृत for मृताभय, स्वहस्ता for व्यहस्ता।
915. Vide catal. of BORS, Patna vol I No. 85.
916. From Sp. 106. Also in Sk 50 with the auther's name as नटगाङ्गोक with v.l. भोगिनाम for भोगिनः, विवर्तने for परम्परे। Also ins SSRB 15.5 v.l. भोगिना fo भोगिनः, विवर्तने for परम्परे, सम्मूर्च्छितो for मूर्च्छनो। Also in SMA 2.53 V.l. दृशो for दृशोः, भोगिनाम् for भोगिनः, विवर्तने fo परम्परे, सम्मूर्च्छनोच्चारिताः for मूर्च्छनोच्छालिताः।
917. From SK 48
919. From SSRB 14.5
921. In GNJ Ms 26926
923. From SSRB 14.3
924. From the Ins. of Tarpandighi Plate of . aksha mansena AD1122, *vide* in E.I. XII, P. 8
927. From SSRB 14.4
928. From SSRB 15.9
929. From SK 47
930. In GNJ Ms 17852
932. In GNJ Ms 31727
933. In GNJ Ms 48609
934. From SSRB 15.8
935. In GNJ Ms 31873
936. From SK. 353
941. Vide catal. of GOML, Madras vol.I, R.No. 752
942. In GNJ Ms 49308
945. From Koni Ins. of kalachuri prithivideva (II) in E.I. XXVII, PP. 280-281, 1147AD.
947. In GNJ Ms 34256
94° In GNJ Ms 34256

949. In GNJ Ms 34256
950. In GNJ Ms 34256
951. In GNJ Ms 34256
952. In GNJ Ms 34256
953. In GNJ Ms 34256
954. In GNJ Ms 34256
955. *Vide* catal of I.O.L. R. No. 7087
959. In GNJ Ms 38825
960. In GNJ Ms 21010
961. In GNJ Ms 25960
962. From Balsena Ins. of the time of Krishna, *Vide* in E. I. XXVI, P. 312
963. In GNJ Ms 18281
965. In GNJ Ms 18281
966. In GNJ Ms 15271
967. In GNJ Ms 37755
968. In GNJ Ms 14440
969. In GNJ Ms 3514
970. In GNJ Ms 306
971. In GNJ Ms 28288
972. In GNJ Ms 18609
973. In GNJ Ms 16510
976. In GNJ Ms 49313
978. In GNJ Ms 25552
979. In GNJ Ms 21809
980. In GNJ Ms 21823
981. In GNJ Ms 16469



श्लोकानुक्रमणिका



ग्रन्थानुक्रमणिका



ग्रन्थकारानुक्रमणिका









गङ्गानाथझापरिसरः

राष्ट्रियसंस्कृतसंस्थानम् (मानितविश्वविद्यालयः)

आजादोद्यानम्, प्रयागः-211 002